वृहद
कवच संग्रह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

बृहद कवच-संग्रह

दिव्य, प्रभावशाली एवं शीघ्र फलदायी
अभूतपूर्व कवचों का संकलन

सम्पादनः श्री शिवस्वरूप याज्ञिक

मूल्य - 150 - रु०

प्रकाशक:
बी०एस० प्रमिन्दर
प्रकाशन, दिल्ली-51

मुख्य वितरक:
कर्मसिंह अमरसिंह,
पुस्तक विक्रेता, बड़ा बाजार
फोन-01334-225619

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रकाशक :
बी.एस. प्रमिन्दर प्रकाशन
दिल्ली-51

मुख्य वितरक :
कर्मसिंह अमरसिंह
पुस्तक विक्रेता, बड़ा बाजार
हरिद्वार-उत्तरांचल
फोन-01334-225619

सम्पादक :-
श्री शिवस्वरूप याज्ञिक

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

अन्य पुस्तकें वी.पी.पी. से मंगवाये

भविष्य पुराण भा.टी. 3 भाग	975
ब्रह्म पुराण भा.टी.	500
अग्नि पुराण भा.टी.	350
भागवत पुराण भा.टी. पत्राकार	500
शिवपुराण भाषा टीका पत्राकार	600
देवीभागवत पुराण भा.टी. पत्राकार	600
हरिवंश पुराण भाषा टीका	600
मंत्र महोददी भाषा टीका	450
मंत्र महार्णव भा.टी.	1000
शुक्ल यजर्वेद संहिता मूलपाठ	200
श्री सूक्त, लक्ष्मी सूक्त, पुरुष सूक्त	25
रुद्रीष्टाध्यायी (रुद्राभिषेक)	25
100 वर्षीय पंचाग सौ साल का	600
यज्ञ मीमांसा-वेणी प्रसाद गौड़	275
यज्ञ मंत्र संग्रह-वेणी प्रसाद गौड़	200
यज्ञ कुण्ड निर्माण विधि	100
दुर्गा याग विधान	200
अनुष्ठान प्रकाश 3 भाग सम्पूर्ण	900
ग्रह शान्ति भाषा टीका	80
कर्मकाण्ड भास्कर-विशाल मणि	75
दुर्गा उपासना कल्पद्रुम-	250
कर्मठ गुरु-बाल मुकुन्द	85
कर्मकाण्ड प्रदीप-जनार्दन शास्त्री	85
वृहद कर्मकाण्ड प्रदीप	250
निर्णय सिन्धु (दोनों खण्ड सम्पूर्ण)	500
धर्म सिन्धु भाषा टीका	300
व्रतराज भाषा टीका	400
कूर्म पुराण भाषा टीका	250
स्कन्ध पुराण केदारखण्ड	350
वायु पुराण भाषा टीका	450
ब्रह्माण्ड पुराण भाषा टीका	650
वाल्मीकि रामायण भाषा टीका	800
ब्रह्म वैवर्त पुराण भाषा टीका	650
श्री रावण संहिता (हस्त लिखित)	2500
श्री भृगु संहिता कुण्डली रहस्य	2500
श्री भृगु संहिता महाशास्त्र	1900
मत्स्य पुराणा भाषा टीका 2भाग	425
वृहद नारदीय पुराण भाषा टीका	400
सर्वदेव प्रतिष्ठा प्रकाश	160
सर्वदेव प्रतिष्ठार्णव प्रतिष्ठा मयूख	200
शिव रहस्यम् भाषा टीका	100
काली रहस्यम् भाषा टीका	100
हनुमान रहस्य भाषा टीका	100
शिवयाग रहस्य भाषा टीका	100

KAWACH SANGRAH

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अनुक्रमणिका

1. अमोघ शिव कवचम् 5
2. श्री नारायण कवचम् 17
3. श्री गोपाल-अक्षय कवचम् 29
4. श्री गायत्री कवचम् 32
5. श्री दिव्य काली कवचम् 36
6. श्री हनुमान कवचम् 40
7. श्री विघ्न विनाशक गणेश कवचम् 48
8. श्री शरीरोग्यप्रदं दिव्यम् सूर्य कवचम् 53
9. सर्व सम्पतप्रदं एकादश मुख हनुमत्कवचम् 55
10. सर्वकामदम् सरस्वती कवचम् 60
11. सर्वरक्षाकरम् दुर्गा कवचम् 64
12. पुण्यदा तुलसी कवचम् 75
13. दशश्लोकी अन्नपूर्णा कवचम् 79
14. श्री महालक्ष्मी कवचम् 85
15. श्रीनृसिंह कवचम् 95
16. श्री राधा कवचम् 97
17. श्री धनदा कवचम् 99
18. रुद्रयामलोक्त: श्रीबटुक-भैरव-ब्रह्म कवचराज: 100
19. भैरव-तन्त्रोक्तं श्रीबटुक-भैरव: कवचम् 101
20. ऐश्वर्यदायकं श्रीबटुक-भैरव-कवचम् 102
21. श्री सुदर्शन कवचम् 104
22. श्री दत्तात्रेयवज्र कवचम् 108
23. मृतसंजीवनी कवचम् 127
24. श्रीप्रत्यङ्गिरा कवचम् 132
25. श्री तारा कवचम् 134
26. श्री बालात्रिपुरसुन्दरी कवचम् 138
27. श्री महात्रिपुरसुन्दरी कवचम् 142

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

28. श्रीपरा महायोनि कवचम् 144
29. भुवनेश्वरी त्रैलोक्य मंगल कवचम् 150
30. भुवनेश्वरी त्रैलोक्य मोहन कवचम् 152
31. अथ श्री भैरवी त्रैलोक्य विजय कवचम् 155
32. अथ श्री त्रिपुरभैरवी कवचम् 158
33. श्री त्रैलोक्यविजय छिन्नमस्ता कवचम् 162
34. श्री धूमावती कवचम् 164
35. श्री बगलामुखी कवचम् 165
36. अथ बगलामुखी ब्रह्मस्त्र कवचम् 167
37. अथ श्री ब्रह्मास्त्र बगला वज्र कवचम् 171
38. अथ श्री त्रैलोक्यविजय कवचम् 175
39. अथ मातङ्गी त्रैलोक्य मङ्गल कवचम् 179
40. श्री कमला कवचम् 182
41. श्री कुण्डलिनी कवचम् 183
42. श्री यमुना कवचम् 188
43. श्री परशुराम भार्गव कवचम् 189
44. श्रीगङ्गा कवचम् 195
45. श्री शरभ कवचम् 196
46. विश्वावसु गन्धर्वराज कवच स्तोत्रम् 205

भक्तजनों से निवेदन-इस कलिकाल में वृहद कवच संग्रह का पाठ सर्व फलदायक होने के साथ मुक्तिदायक भी है। नित्य पाठ से जो आनन्द की अनुभूति होती है, वह पाठ करने वाले भली प्रकार जानते हैं। किसी भी सत् कार्य में सहायता देना भी भक्ति का अंग है। इस पुस्तक दान भी उत्तम परमार्थ है। धन के दान की अपेक्षा इस पुस्तक का दान कई गुना उत्तम है। वृहद कवच संग्रह पुस्तक प्रचारार्थ बांटने के लिए इकट्ठी लेने पर लागत मात्र मूल्य लिया जाता है।

कर्मसिंह अमरसिंह पुस्तक विक्रेता हरिद्वार। फोन-01334-225619

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री अमोघशिव कवचम्

यह अमोघ शिव कवच परम गोपनीय, अत्यन्त आदरणीय, सब पापों को दूर करने वाला, सारे अमङ्गलों, विघ्न बाधाओं को हरने

वाला, परम पवित्र, जयप्रद और सम्पूर्ण विपत्तियों का नाशक माना गया है। यह परम हितकारी है और सब भयों को दूर करता है। इसके प्रभाव से क्षीणायु, मृत्यु के समीप पहुंचा हुआ महान् रोगी मनुष्य भी शीघ्र निरोगता को प्राप्त करता है और उसकी दीर्घायु हो जाती है। अर्थाभाव से पीड़ित मनुष्य की सारी दरिद्रता दूर हो जाती है और उसको सुख-वैभव की प्राप्ति होती है। पापी महापातक से छूट जाता है और इसका भक्ति-श्रद्धापूर्वक धारण करने वाला निष्काम पुरुष देहान्त के बाद दुर्लभ मोक्षपद को प्राप्त होता है।

महर्षि ऋषभ ने इसका उपदेश करके एक संकट ग्रस्त राजा को दुख मुक्त किया था। यह कवच श्री स्कन्द पुराण के ब्रह्मोतर खण्ड में है।

पहले विनियोग छोड़कर ऋष्यादिन्यास, करन्यास और हृदयादि अङ्गन्यास करके भगवान शंकर का ध्यान करे। (तदनन्तर कवच का पाठ करे।)

अस्य श्रीशिवकवचस्तोत्रमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः अनुष्टुप, छन्दः, श्रीसदाशिवरुद्रो देवता, ह्रीं शक्तिः, वं कीलकम् श्रीं ह्रीं क्लीं बीजम् सदाशिवप्रीत्यर्थे शिवकवचस्तोत्रजपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः

ॐ ब्रह्मऋष्ये नमः, शिरसि। अनुष्टुप् छन्दसे नमः, मुखे। श्रीसदाशिवरुद्रदेवतायै नमः, हृदि। ह्रीं शक्तये नमः, पदयोः। वं कीलकाय नमः, नाभौ। श्रीं ह्रीं क्लीमिति बीजाय नमः, गुह्ये। विनियोगाय नमः, सर्वांगे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अथ करन्यास

ॐ नमो भगवते ज्वलज्जवालामालिने ॐ ह्रीं रां सर्वशक्तिधाम्ने ईशानात्मने, अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ नमो भगवते ज्वलज्जवालामालिने ॐ नं रीं नित्यंतृप्तिधाम्रे। तत्तुरुषात्मने, तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ नमो भगवते ज्वलज्जवालामालिने ॐ मं रूं अनादिशक्तिधाम्ने अघोरात्मने, मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ नमो भगवते ज्वलज्जवालामालिने, ॐ शिं रैं स्वतन्त्रशक्तिधाम्ने वामदेवात्मने, अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ नमो भगवते ज्वलज्जवालामालिने ॐ वां रौं अलुप्तशक्तिधाम्ने सद्योजातात्मने, कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।
ॐ नमो भगवते ज्वलज्जवालामालिने ॐ यं रः अनादिशक्तिधाम्ने, सर्वात्मने, करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयाद्यंगन्यासः

ॐ नमो भगवते ज्वलज्जवालामालिने ॐ ह्रीं राँ सर्वशक्तिधाम्ने ईशानात्मने हृदयाय नमः।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्जवालामालिने ॐ नं री नित्यतृप्तिधाम्ने तत्पुरुषात्मने शिरसे स्वाहा।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्जवालामालिने ॐ मं रूं अनादिशक्तिधाम्ने अघोरात्मने शिखायै वषट्।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्जवालामालिने ॐ शिं रैं स्वतन्त्रशक्तिधाम्ने वामदेवात्मने कवचाय हुम्।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्जवालामालिने ॐ वां रौं अलुप्तशक्तिधाम्ने सद्योजातात्मने नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्जवालामालिने ॐ यं रं अनादिशक्तिधाम्ने सर्वात्मने अस्त्राय फट्।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अथ ध्यानम्

वज्रदंष्ट्र त्रिनयनं कालकण्ठमरिंदमम्।
सहस्त्रकरमप्युग्रं वन्दे शम्भुमुमापतिम्।

ध्यानार्थ :- जिनकी दाढ़े बज्र के समान हैं, जो त्रिनेत्रधारी हैं, जिनके कण्ठ में हलाहल-पान का नीला चिन्ह सुशोभित होता है, जो शत्रुभाव रखने वालों को दबाने वाले हैं, जिनके सहस्त्रों हाथ हैं तथा जो अभक्तों के लिए अत्यन्त उग्र हैं, उन उमापति शम्भु (भगवान शिव जी) को मैं प्रणाम करता हूँ।

ऋषभ उवाच

नमस्कृत्य महादेवं विश्वाव्यापिनमीश्वरम्।
वक्ष्ये शिवमयं वर्म सर्वरक्षाकरं नृणाम्॥१॥
अथापरं सर्वपुराणगुह्यं निःशेषपापौघहरं पवित्रम्।
जयप्रदं सर्वविपद्विमोचनं वक्ष्यामिश्वं कवचं हिताय ते॥

ऋषभ जी कहते हैं- जो सम्पूर्ण पुराणों में गोपनीय कहा गया है, समस्त पापों को हर लेने वाला है, पवित्र जयदायक तथा सम्पूर्ण विपत्तियों से छुटकारा दिलाने वाला है, उस सर्वश्रेष्ठ शिव कवच का मैं तुम्हारे हित के लिए उपदेश करूंगा। मैं विश्वव्यापी ईश्वर महादेव जी को नमस्कार करके मनुष्यों की सब प्रकार से रक्षा करने वाले इस शिवस्वरूप कवच का वर्णन करता हूं॥१॥

शुचौ देशे समासीनो यथावत्कल्पितासनः।
जितेन्द्रियो जितप्राणश्चिन्तयेच्छिवमव्ययम्॥२॥

पवित्र स्थान में तथा योग्य आसन बिछाकर बैठे। इन्द्रियों को अपने वश में करके प्राणायाम पूर्वक अविनाशी भगवान् शिव का चिंतन करें॥२॥

हृत्यपुण्डरीकांतरसंनिविष्टं स्वतेजसा व्याप्तनभोऽवकाशम्।
अतीन्द्रियं सूक्ष्मनन्तमाद्यं ध्यायेत् परानंदमयं महेशम्॥३॥

'परमानन्दमय भगवन् महेश्वर हृदय-कमल के भीतर की कर्णिका

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में विराजमान हैं, उन्होंने अपने तेज से आकाश मण्डल को व्याप्त कर रखा है। वे इन्द्रियातीत, सूक्ष्म, अनन्त एवं सबके आदिकारण हैं।' इस तरह उनका चिन्त करे।।३।।

ध्यानावधूताखिलकर्मबन्धश्चिरं चिदानंदनिमग्नचेताः।
षडक्षरन्याससमाहितात्मा शैवेन कुर्यात् कवचेन रक्षाम्।।४।।

इस प्रकार ध्यान के द्वारा समस्त कर्म बंधन का नाश करके चिदानन्दमय भगवान सदाशिव में अपने चित्त को चिर काल तक लगाये रहे। फिर षडक्षरन्यास के द्वारा अपने मन को एकाग्र करके मनुष्य निम्नांकित शिव कवच के द्वारा अपनी रक्षा करे।।४।।

श्री शिव कवच प्रारम्भ

मां पातु देवोऽखिलदेवतात्मा, संसारकूपे पतितं गभीरे।
तन्नाम दिव्यं वरमन्त्रमूलं, धुनोतु मे सर्वमघं हृदिस्थम्।।५।।

सर्वदेवमय महादेव जी गहरे संसार-कूप में गिरे हुए मुझ असहाय की रक्षा करें। उनका दिव्य नाम जो उनके श्रेष्ठ मंत्र का मूल है। मेरे हृदय स्थित समस्त पापों का नाश करे।।५।।

सर्वत्र मां रक्षतु विश्वमूर्ति-ज्योतिर्मयानन्दघनश्चिदात्मा।
अणोरणीयानुरुशक्तिरेकः स ईश्वरः पातु भयांदशेषात्।।६।।

सम्पूर्ण विश्व जिनकी मूर्ति है, जो ज्योतिर्मय आनन्दघनस्वरूप चिदात्मा हैं, वे भगवान मेरी सर्वत्र रक्षा करें। जो सूक्ष्म से भी अत्यन्त सूक्ष्म हैं, महान शक्ति से सम्पन्न हैं, वे अद्वितीय 'ईश्वर' महादेव जी सम्पूर्ण भयों से मेरी रक्षा करें।।६।।

यो भूस्वरूपेण बिभर्ति विश्वं, पायात् स भूमेर्गिरिशोऽष्टमूर्तिः।
योऽपां स्वरूपेण नृणां करोति, संजीवनं सोऽवतु मां जलेभ्यः।।७।।

जिन्होंने पृथ्वी रूप से इस विश्व को धारण कर रखा है, वे अष्टमूर्ति 'गिरिश' पृथ्वी से मेरी रक्षा करें। जो जल रूप से जीवों को जीवन दान दे रहे हैं, वे 'शिव' जल से मेरी रक्षा करें।।७।।

कल्पावसाने भुवनानि दग्ध्वा सर्वाणि यो नृत्यति भूरिलीलः।
स कालरुद्रोऽवतु मां दवाग्ने-र्वात्यादिभीतेरखिलाच्च तापात्।।८।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जो विशद लीला विहारी 'शिव' कल्प के अन्त में समस्त भवनों को दग्ध करके (आनन्द से) नृत्य करते हैं, वे 'कालरुद्र' भगवान् दावानल से, आंधी-तूफान से भय से और समस्त तापों से मेरी रक्षा करें।।८।।

प्रदीप्तविद्युत्कनकावभासो विद्यावराभीतिकुठारपाणिः।
चतुर्मुखस्तपुत्रुषस्त्रिनेत्रः प्राच्यां स्थितं रक्षतु मामजस्त्रम्।।९।।

प्रदीप्त विद्युत एवं स्वर्ण के सदृश जिनकी कान्ति है, विद्या, वर और अभय (मुद्राएं) तथा कुल्हाड़ी जिनके कर-कमलों में सुशोभित है, चतुर्मुख त्रिलोचन है, वे भगवान् 'तत्पुरुष' पूर्व दिशा में निरन्तर मेरी रक्षा करें।।९।।

कुठारवेदांकुशपाशशूल-कपालढक्काक्षगुणान् दधानः।
चतुर्मुखो नीलरुचिस्त्रिनेत्रः पायादघोरो दिशि दक्षिणस्याम्।।१०।।

जिन्होंने अपने हाथों में कुल्हाड़ी, वेद, अंकुश, फन्दा, त्रिशूल, कपाल, डमरू और रूद्राक्ष की माला को धारण कर रखा है तथा जो चतुर्मुख हैं, वे नील कांति त्रिनेत्रधारीभगवान 'अघोर' दक्षिण दिशा में मेरी रक्षा करें।।१०।।

कुन्देन्दुशंखस्फटिकावभासो, वेदाक्षमालावरदाभयांकः।
त्र्यक्षश्चतुर्वक्त्र उरुप्रभावः, सद्योऽधिजातोऽवतु मां प्रतीच्याम्।।११।।

कुन्द, चन्द्रमा, शंख और स्फटिक के समान जिनकी उज्जवल कांति है, वेद रुद्राक्ष माला, वरद और अभय (मुद्राओं) से जो सुशोभित हैं, वे महाप्रभावशाली चतुरानन एवं त्रिलोचन भगवान् 'सद्योजात' पश्चिम दिशा में मेरी रक्षा करें।।११।।

वराक्षमालाभयटङ्कहस्तः सरोजकिञ्जल्कसमानवर्णः।
त्रिलोचनश्चात्रचतुर्मुखो मां पायादुदीच्यां दिशि वामदेवः।।१२।।

जिनके हाथों में वर एवं अभय (मुद्राए), रूद्राक्षमाला और टाकी विराजमान हैं तथा कमल-किञ्जल्क के सदृश जिनका गौर वर्ण है, वे सुन्दर चार मुख वाले त्रिनेत्रधारी भगवान् 'वामदेव' उत्तर दिशा में मेरी रक्षा करें।।१२।।

वेदाभयेष्टांकुशपाशटङ्क- कपालढक्काक्षकशूलपाणिः।
सितद्युतिः पञ्चमुखोऽवतान्मा, मीशान उर्ध्व परमप्रकाशः।।१३।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जिनके कर-कमलों में वेद, अभय और वर (मुद्राएं), अंकुश, टांकी, फन्दा,. कपाल, डमरू, रुद्राक्षमाला और त्रिशूल सुशोभित हैं, जो श्वेत आभा से युक्त हैं, वे परम प्रकाश रूप पञ्चमुख भगवान् 'ईशान' मेरी ऊपर से रक्षा करें।।१३।।

मूर्द्धानमव्यान्मम चन्द्रमौलिर्भालं ममाव्यादथ भालनेत्रः।
नेत्रे ममाव्याद् भगनेत्रहारी नासां सदा रक्षतु विश्वनाथः।।१४।।

भगवान् 'चन्द्रमौलि' मेरे सिर की, 'भालनेत्र' मेरे ललाट की, 'भगनेत्रहरी' मेरे नेत्रों की और 'विश्वनाथ' मेरी नासिका की सदा रक्षा करें।।१४।।

पायाच्छुती मे श्रुतिगीतकीर्तिः, कपोलमव्यात् सततं कपाली।
वक्त्रं सदा रक्षतु पञ्चवक्त्रो, जिह्वां सदा रक्षतु वेदजिह्वः।।१५।।

'श्रुतिगीतकीर्ति' मेरे कानों की, 'कपाली' निरन्तर मेरे कपोलों की 'पञ्चमुख' मुख की तथा 'वेदजिह्व' जीभ की रक्षा करें।।१५।।

कण्ठं गिरिशोऽवतु नीलकण्ठः, पाणिद्वयं पातु पिनाकपाणिः।
दोर्मूलमव्यान्मम धर्मबाहु-र्वक्षः स्थलं दक्षमखान्तकोऽवात्।।१६।।

'नीलकण्ठ' महादेव मेरे गले की, 'पिनाकपाणि' मेरे दोनों हाथों की, 'धर्मबाहु' दोनों कन्धों की तथा 'दक्षयज्ञविध्वंसी' मेरे वक्षःस्थल की रक्षा करें।।१६।।

ममोदरं पातु गिरीन्द्रधन्वा, मध्यं ममाव्यान्मदनान्तकारी।
हेरम्बतातो मम पातु नाभिं, पायात् कटी धूर्जटिरीश्वरो मे।।१७।।

'गिरीन्द्रधन्वा' मेरे पेट की, 'कामदेव के नाशक' मध्यदेश की, 'गणेश जी के पिता' मेरी नाभि की तथा 'धूर्जटि' मेरी कटि की रक्षा करें।।१७।।

उरूद्वयं पातु कुबेरमित्रो, जानुद्वयं मे जगदीश्वरोऽव्यात्।
जङ्घायुगं पुङ्गवकेतुरव्यात्, पादौ ममाव्यात् सुरवन्द्यपादः।।१८।।

'कुबेरमित्र' मेरी दोनों जांघों की, 'जगदीश्वर' दोनों घुटनों की, 'पुंगवकेतु' दोनों पिंडलियों की और 'सुरवंद्यचरण' मेरे पैरों की सदैव रक्षा करें।१८।।

महेश्वरः पातु दिनादियामे, मां मध्यमामेऽवतु वामदेवः।
त्रियम्बकः पातु तृतीययामे, वृषभध्वजः पातु दिनान्त्ययामे।।१९।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

'महेश्वर' दिन के पहले पहर में मेरी रक्षा करें। 'वामदेव' मध्य पहर में मेरी रक्षा करें। 'त्र्यम्बक' तीसरे पहर में और 'वृषभध्वज' दिन के अंत वाले पहर में मेरी रक्षा करें।।१९।।

पायान्निशादौ शशिशेखरो मां गङ्गाधरो रक्षतु मां निशीथे।
गौरांपतिः पातु निशावसाने मृत्युञ्जयो रक्षतु सर्वकालम्।।२०।।

'शशिशेखर' रात्रि के आरम्भ में, 'गंङ्गाधर' अर्धरात्रि में, 'गौरीपति' रात्रि के अन्त में और 'मुत्युञ्जय' सर्वकाल में मेरी रक्षा करें।।२०।।

अन्तः स्थितं रक्षतु शङ्करो मां, स्थाणुः सदा पातु बहिः स्थितं माम्।
तदन्तरे पातु पतिः पशूनां, सदाशिवो रक्षतु मां समन्तात्।।२१।।

'शङ्कर' घर के भीतर रहने पर मेरी रक्षा करें। 'स्थाणु' बाहर रहने पर मेरी रक्षा करें 'पशुपति' बीच में मेरी रक्षा करें और 'सदाशिव' सब ओर मेरी रक्षा करें।।२१।।

तिष्ठन्तमव्याद्भुवनैकनाथः पायाद् व्रजन्तं प्रमथाधिनाथः।
वेदांतवेद्योऽवतु मां निषण्णं मामव्ययः पातु शिवः शयानम्।।२२।।

'भुवनैकनाथ' खड़े होने के समय, 'प्रमथनाथ' चलते समय, 'वेदान्तवैद्य' बैठे रहने के समय और 'अविनाशी शिव' सोते समय मेरी रक्षा करें।।२२।।

मार्गेषु मां रक्षतु नीलकण्ठः शैलादिदुर्गेषु पुरत्रयारिः।
अरण्यवासादिमहाप्रवासे पायान्मृगव्याध उदारशक्तिः।।२३।।

'नीलकण्ठ' रास्ते में मेरी रक्षा करें। 'त्रिपुरारि' शैलादि दुर्गो में और उदारशक्ति 'मगव्याध' वनवासादि महान प्रवासों में मेरी रक्षा करें।।२३।।

कल्पान्तकाटोपपटुप्रकोपः स्फुटाट्टहासोच्चलिताण्डकोशः।
घोरारिसेनार्णवदुर्निवार- महाभयाद् रक्षतु वीरभद्रः।।२४।।

जिनका प्रबल क्रोध कल्पों का अन्त करने में अत्यन्त पट है, जिनके प्रचण्ड अट्टहास से ब्रह्माण्ड कांप उठता है, वे 'वीरभद्रजी' समुद्र के सदृश भयानक शत्रु सेना के दुर्निवार महान भय से मेरी रक्षा करें।।२४।।

पत्त्यश्वमातंगघटावरूथ- सहस्त्रलक्षायुतकोटिभीषणम्।
अक्षौहिणीनां शतमाततायिनां क्षिन्द्यान्मृडो घोरकुठारधारया।।२५।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भगवान 'मड' मुझ पर आततायी रूप से आक्रमण करने वालों की हजारों, दस हजारों, लाखों और करोड़ों पैदलों, घोड़ों और हाथियों से युक्त अति भीषण सैकड़ो अक्षौहिणी सेनाओं का अपनी घोर कुठार धार से भेदन करें।।२५।।

निहन्तु दस्यून् प्रलयानलार्चि-र्ज्वलत् त्रिशूलं त्रिपुरान्तकस्य।
शार्दूसिंहर्क्षवृकादिहिंस्रान् संत्रासयत्वीशधनुः पिनाकम्।।२६।।

भगवान 'त्रिपुरान्तक' का प्रलयाग्नि के समान ज्वालाओं से युक्त जलता हुआ त्रिशूल मेरे दस्यु दल का विनाश कर दे और उनका पिनाक धनुष, चीता, सिंह, रीछ, भेड़िया आदि हिंस्त्र जन्तुओं को संत्रस्त करें।।२६।।

दुःखस्वप्नदुश्शकुनदुर्गतिदौर्मनस्य-दुर्भिक्षदुर्व्यसनदुस्सहदुर्यशांसि।
उत्पाततापविषभीतिमसद्ग्रहार्तिव्याधींश्च नाशयतु मे जगतामधीशः।।२७।।

वे जगदीश्वर मेरे बुरे स्वप्न, बुरे शकुन, बुरी गति, मन की दुष्ट भावना, दुर्भिक्ष, दुर्व्यसन, दुस्सह, अपयश, उत्पात, सन्ताप, विषभय, दुष्ट ग्रहों की पीड़ा तथा समस्त रोगों का नाश करें।।२७।।

ॐ नमो भगवते सदाशिवाय सकलतत्त्वात्मकाय राकलतत्त्वविहाराय सकललौकेककर्त्रे सकललोककैकभर्त्रे सकललोकैकहर्त्रे सकललोकैकगुरवे सकललोकराक्षिणे सकलनिगमगुह्याय सकलवरप्रदाय सकलदुरितार्त्तिभञ्जनाय सकलजगदभयंकराय सकललोकैकशंकराय शशांकशेखराय शाश्वतनिजाभासाय निर्गुणाय निरुपमाय नीरुपाय निराभासाय निरामयाय निष्प्रपंचाय निष्कलंकाय निर्द्वन्द्वाय निस्संगाय निर्मलाय निर्गमाय नित्यरूपविभवाय निरुपमविभवाय निराधाराय नित्यशुद्धबुद्धपरिपूर्णसच्चिदानन्दाद्वयाय परमशान्तंप्रकाश-तेजोरूपाय जय जय महारूद्र महारौद्र भद्रावतार दुःखदावदारण महाभैरव कालभैरव कल्पान्तभैरव कलपान्तभैरव कपालमालाधर खट्वांगखंगचर्मपाशांकुशडमरुशूलचापबाणगदाशक्तिभिन्दिपा-लतोमरमूसलमुगद्रपट्टिशपरशुपरिघभुशुण्डीशताघ्नीचक्राद्या-युधभीषणकर सहस्त्रमुख दंष्ट्राकराल विकटाट्टहासविसफा-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रितब्रह्माण्डमण्डलनागेन्द्रगुण्डल नागेन्द्रहार नागेन्द्रवलय नागेन्द्रचर्मधर मृत्युञ्जय त्र्यम्बक त्रिपुरान्तक विरूपाक्ष विश्वेश्वर वृषभवाहन विषभूषण विश्वतोमुख सर्वतो रक्ष रक्ष मां ज्वल ज्वल महामृत्युभयमुत्सादयोत्सादयं नाशय नाशय रोगभयमुत्सादयोत्सादय विषसर्पभयं शमय शमय चोरभयं मारय मारय मम शत्रुनुच्चाटयोच्चाट य शूलेन विदारय विदारय कुठारेण भिन्धि भिन्धि खंगेन छिन्धि छिन्धि खट्वांगेन विपोथय विपोथय मुसलेन निष्पेषय निष्पेषय बाणैः संताडय संताडय रक्षांसि भीषय भीषय भूतानि विद्रावय विद्रावय कूष्मांडवेतालमारीगणब्रह्म-राक्षसान् संत्रासय संत्रासय ममाभयं कुरु कुरु वित्रस्तं मामाश्वास-याश्वासय नरकभयान्मामुद्धारयोद्धारय संजीवय संजीवय क्षुत्तृड्भ्यां मामाप्याययाप्यायय दुःखातुरं मामानन्दयानन्दय शिवकवचेन मामाच्छादयाच्छादय त्र्यम्बक सदाशिव नमस्ते नमस्ते नमस्ते।

ॐ जिनका वाचक है, सम्पूर्ण तत्त्व जिनके स्वरूप है, जो सम्पूर्ण तत्त्वों में विचरण करने वाले, समस्त लोगों के एकमात्र कर्ता और सम्पूर्ण विश्व के एकमात्र भरण-पोषण करने वाले हैं, जो अखिल विश्व के एक ही संहारकारी, सब लोगों के एकमात्र गुरु, समस्त संसार के एक ही साक्षी, सम्पूर्ण वेदों के गूढ़ तत्त्व, सबको वर देने वाले, समस्त पापों और पीड़ाओं का नाश करने वाले, सारे संसार को अभय देने वाले, सब लोगों को एकमात्र कल्याणकारी, चन्द्रमा का मुकुट धारण करने वाले, अपने सनातन-प्रकाश से प्रकाशित होने वाले, निर्गुण, उपमारहित, निराकार, निराभास, निरामय, निष्प्रपञ्च, निष्कलंक, निर्द्वन्द, निस्संग, निर्मल, गति-शून्य, नित्यरूप, नित्य वैभव से सम्पन्न, अनुपम ऐश्वर्य से सुशोभित, आधार शून्य, नित्य-शुद्ध-बुद्ध, परिपूर्ण, सच्चिदानन्दघन, अद्वितीय तथा परम शांत, प्रकाशमय, तेजःस्वरूप हैं, उन भगवान सदाशिव को नमस्कार है। हे महारुद्र, महारौद्र, भद्रावतार, दुःख-दावाग्नि-विदारण, महाभैरव, कालभैरव, कलपान्त भैरव, कपालमालाधारी! हे खटवांग, खंग, ढाल, फन्दा अंकुश, डमरू, त्रिशूल, धनुष, बाण, गदा, शक्ति, भिन्दिपाल, तोमर,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मूसल, मुग्दर, पट्टिश, परशु, परिघ, भुशुण्डी, शतघ्नी और चक्र आदि आयुधों के द्वारा भयंकर हाथों वाले! हजार मुख और दष्ट्रा से कराल, विकट अट्हास से विशाल ब्रह्माण्ड-मण्डल का विस्तार करने वाले, नागेन्द्र वासुकि को कुण्डल, हार, कंकण तथा ढाल के रूप में धारण करने वाले, मृत्युञ्जय, त्रिनेत्र, त्रिपुरनाशक, भयंकर नेत्रों वाले, विश्वेश्वर, विश्वरूप में प्रकट, बैल पर सवारी करने वाले, विष को गले में भूषण रूप में धारण करने वाले तथा सब ओर मुख वाले शंकर! आपकी जय हो, जय हो! आप मेरी सब ओर से रक्षा कीजिए। प्रज्वलित होइये, प्रज्वलित होइये।

मेरे महामृत्यु-भय का तथा अपमृत्यु के भय का नाश कीजिये, नाश कीजिये। (बाहर और भीतरी) रोग-भय को जड़ से मिटा दीजिये, जड़ से मिटा दीजिये। विष और सर्प के भय को शान्त कीजिये, शान्त कीजिये। चोर भय को मार डालिये, मार डालिये। मेरे (काम-क्रोध-लोभादि भीतरी तथा इन्द्रियों के और शरीर के द्वारा होने वाले पाप कर्मरूपी बाहरी) शत्रुओं का उच्चाटन कीजिये, उच्चाटन कीजिये; त्रिशूल के द्वारा विदारण कीजिये, विदारण कीजिये; कुठार के द्वारा काट डालिये, काट डालिये; खंग के द्वारा छेद डालिए, छेद डालिए, खटवांग के द्वारा नाश कीजिये; मूसल के द्वारा पीस डालिये, पीस डालिये और बाणों के द्वारा बींध डालिये। (आप मेरी हिंसा करने वाले) राक्षसों को भय दिखाइये, भय दिखाइये। भूतों को भगा दीजिये, भगा दीजिये।

कूष्माण्ड, वेताल, मारियों और ब्रह्म-राक्षसों को संत्रस्त कीजिए, संत्रस्त कीजिए। मुझको अभय दीजिए, अभय दीजिए। मुझ अत्यन्त डरे हुए को आश्वासन दीजिए, आश्वासन दीजिए। नरक-भय से मेरा उद्धार कीजिए, उद्धार कीजिए। मुझे जीवन-दान दीजिए, जीवन दान दीजिए, क्षुधा तृष्णा का निवारण करके मुझको आप्यायित कीजिए, आप्यायित कीजिए। आपकी जय हो, जय हो। मुझ दुःखातुर को आनन्दित कीजिए, आनन्दित कीजिए। शिव कवच से मुझे आच्छादित कीजिए, आच्छादित कीजिए। त्र्यम्बक सदाशिव् आपको नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऋषभ उवाच

इत्येतत्कवचं शैवं वरदं व्याहृतं मया।
सर्वबाधाप्रशमनं रहस्यं सर्वदेहिनाम्।।२८।।

ऋषभ जी कहते हैं- इस प्रकार यह वरदायक शिव कवच मैंने कहा है। यह सम्पूर्ण बाधाओं को शान्त करने वाला तथा समस्त देहधारियों के लिए गोपनीय रहस्य है।।२८।।

यः सदा धारयेन्मर्त्यः शैवः कवचमुत्तमम्।
न तस्य जायते क्वापि भयं शंभोरनुग्रहात्।।२९।।

जो मनुष्य इस उत्तम कवच को सदा धारण करता है, उसे भगवान शिव के अनुग्रह से कभी और कहीं भी भय नहीं होता।।२९।।

क्षीणार्युमृत्युमापत्रौ महारोगहतोऽपि वा।
सद्यः सुखमवाप्नोति दीर्घमायुश्च विन्दति।।३०।।

जिसके आयु क्षीण हो चली है, जो मरणासन्न हो गया है अथवा जिसे महान रोगों ने मृतक सा कर दिया है, वह भी इस कवच के प्रभाव से तत्काल सुखी हो जाता है और दीर्घायु प्राप्त कर लेता है।।३०।।

सर्वदारिद्र्यशमनं सौमङ्गल्यविवर्धनम्।
यो धत्ते कवचं शैवं स देवैरपि पूज्यते।।३१।।

शिव कवच समस्त दरिद्रता का शमन करने वाला और सौमंगल्य को बढ़ाने वाला है, जो इसे धारण करता है, वह देवताओं से भी पूजित होता है।।३१।।

महापातकसंघातैर्मुच्युते चोपपातकैः।
देहान्ते शिवमाप्नोति शिववर्मानुभावतः।।३२।।

इस शिव कवच के प्रभाव से मनुष्य महापातकों के समूहों और उपपातकों से भी छुटकारा पा जाता है तथा शरीर का अन्त होने पर शिव को पा लेता है।।३२।।

त्वमपि श्रद्धया वत्स शैवं कवचमुत्त्मम्।
धारयस्व मया दत्तं सद्यः श्रेयो ह्यवात्स्यसि।।३३।।

वत्स! तुम भी मेरे दिए हुए इस उत्तम शिव कवच को श्रद्धापूर्वक धारण करो, इससे तुम शीघ्र और निश्चय ही कल्याण के भागी होओगे।।३३।।

इति अमोघ शिव कवचं सम्पूर्णम्

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आरती

ॐ जय शिव ॐकारा हर शिव ॐकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, भोले भाले नाथ महादेव अर्द्धंगी धारा।
ॐ हर हर महादेव॥१॥
एकानन चतुरानन पंचानन राजै, भोले पंचानन राजै।
हंसासन गरुडासन, हंसासन गरुडासन वृषवाहन साजै॥
ॐ हर हर हर महादेव॥२॥
दो भुज चारु चतुर्भुज दश भुज तुम सौहे, शिव दशमुख तुम सोहै।
तीनों रूप निरखते, शंकर रूप निरखंते, त्रिभुवन जन मोहे।
ॐ हर हर हर महादेव॥३॥
अक्षमाला वनमाला रुण्डमाला धारी, शिव रुण्डमाला धारी।
चन्दन मृगमद लेपन, चन्दन मृगमद लेपन भाले शशिधारी॥
ॐ हर हर हर महादेव॥४॥
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे, शिव बाघाम्बर अंगे।
सनकादिक ब्रह्मादिक, सनकादिक गरुणादिक भूतादिक संगे॥
ॐ हर हर हर महादेव॥५॥
करमध्ये च कमण्डल चक्र त्रिशूल धरता शिव चक्र त्रिशूल धरता।
जगकर्त्ता जग भर्ता, जगकर्त्ता जगभर्ता, जगपालन कर्ता॥
ॐ हर हर हर महादेव॥६॥
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका शिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर के मध्ये ॐ अक्षर के मध्ये तुम तीनों एका॥
ॐ हर हर हर महादेव॥७॥
काशी में विश्वनाथ विराजै नन्दी ब्रह्मचारी शिवनन्दी ब्रह्मचारी।
नित उठ भोग लगावत सबदिन दर्शन पावै महिमा अतिभारी॥
ॐ हर हर हर महादेव॥८॥
शिवजी के हाथों में कंकण कानों में कुण्डल गल सर्पों की माला।
जटा में गंगा विराजे मस्तक में चन्द्र विराजे ओढ़त मृगछाला॥
ॐ हर हर हर महादेव॥९॥
त्रिगुण स्वामी जी की आरती जो कोई नर गावै शिव जो कोई सुन पावै
कहत शिवानन्द स्वामी रटत हराहर स्वामी मनवांछित फल पावे।
ॐ हर हर हर महादेव॥१०॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री नारायण कवचम्

न्यास

सर्वप्रथम श्री गणेश जी तथा भगवान नारायण को नमस्कार करके नीचे लिखे प्रकार से न्यास करें-

अगन्यासः

ॐ ॐ नमः- पादयोः।

दाहिने हाथ की तर्जन-अंगुष्ठ- इन दोनों को मिलाकर दोनों पैरों का स्पर्श करें।

ॐ नं नमः-जानुनोः।

दाहिने हाथ की तर्जनी-अंगुष्ठ-इन दोनों को मिलाकर दोनों घुटनों का स्पर्श करें।

ॐ मों नमः-ऊर्वोः।

दाहिने हाथ की तर्जनी-अंगुष्ठ-इन दोनों को मिलाकर दोनों पैरों की जांघ को स्पर्श करें।

ॐ नां नमः- उदरे।

दाहिने हाथ की तर्जनी अंगुष्ठ-इन दोनों को मिलाकर पेट का स्पर्श करे।

ॐ रां नमः-हृदि।

मध्यमा-अनामिका-तर्जनी से हृदय का स्पर्श करे।

ॐ यं नमः-उरसि।

मध्यमा-अनामिका-तर्जनी से छाती का स्पर्श करे।

ॐ णां नमः-मुखे।

तर्जनी-अंगूठे के संयोग से मुख का स्पर्श करे।

ॐ यं नमः-शिरसि।

तर्जनी-मध्यमा के संयोग से सिर का स्पर्श करे।

करन्यासः

ॐ ॐ नमः- दक्षितर्जन्याम्।

दाहिने अंगूठे से दाहिनी तर्जनी के सिरे का स्पर्श करे।

ॐ नं नमः--दक्षिणमध्यमायाम्।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दाहिने अंगूठे से दाहिने हाथ की मध्यमा अंगुली का ऊपर वाला पोर स्पर्श करे।

ॐ मों नमः-दक्षिणानामिकायाम्।

दाहिने अंगूठे से दाहिने हाथ की अनामिका का ऊपर वाला पोर स्पर्श करे।

ॐ भं नमः-दक्षिणकनिष्ठिकायाम्।

दाहिने अंगूठे से दाहिने हाथ की कनिष्ठिका का ऊपर वाला पोर स्पर्श करे।

ॐ गं नमः-वामकनिष्ठिकायाम्।

बाएं अंगूठे से बाएं हाथ की कनिष्ठिका का ऊपर वाला पोर स्पर्ष करे।

ॐ वं नमः-वामानामिकायाम्।

बाएं अंगूठे से बायें हाथ की अनामिका का ऊपर वाला पोर स्पर्श करे।

ॐ ते नमः-वाममध्यमायाम्।

बाएं अंगूठे से बाएं हाथ की मध्यमा का ऊपर वाला पोर स्पर्श करें।

ॐ वां नमः- वामतर्जन्याम्

बाएं अंगूठे से बाएं हाथ की तर्जनी का ऊपर वाला पोर स्पर्श करें।

ॐ सु नमः-दक्षिणांगुष्ठोर्ध्वपर्वणि।

दाहिने हाथ की चारों अंगुलियों से दाहिने हाथ के अंगूठे का नीचे वाला पोर छुए।

ॐ वां नमः-वामांगुष्ठोर्ध्वपर्वणि।

बाएं हाथ की चारों अंगुलियों से बाएं अंगूठे के ऊपर वाला पोर छुए।

ॐ यं: नमः-वामांगुष्ठायः पर्वणि।

बाएं हाथ की चारों अंगुलियों से बाएं हाथ के अंगूठे का नीचे वाला पोर छुए।

विष्णुषडक्षरन्यासः

ॐ ॐ नमः-हृदये।

तर्जनी-मध्यमा एवं अनामिका से हृदय का स्पर्श करे।

ॐ विं नमः-मूर्धनि।

तर्जनी-मध्यम के संयोग से सिर का स्पर्श करे।

ॐ षं नमः-भ्रुवोर्मध्ये।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तर्जनी-मध्यमा से दोनों भौहों का स्पर्श करे।

ॐ णं नमः-शिखायाम्।

अंगूठे से शिखा का स्पर्श करे।

ॐ वें नमः-नेत्रयोः।

तर्जनी-मध्यमा से दोनों नेत्रों का स्पर्श करे।

ॐ नं नमः-सर्वसंधिषु।

तर्जन मध्यमा और अनामिका से शरीर के सभी जोड़ों-जैसे कंधा, कोहनी, घुटना आदि का स्पर्श करे।

ॐ मः अस्त्राय फट्-प्राच्याम्।

पूर्व की ओर चुटकी बजाए।

ॐ मः अस्त्राय फट्-आग्नेय्याम्।

अग्निकोण में चुटकी बजाए।

ॐ मः अस्त्राय फट्-दक्षिणस्याम्।

दक्षिण की ओर चुटकी बजाए।

ॐ मः अस्त्राय फट्-नैर्ऋत्ये।

नैर्ऋत्यकोण में चुटकी बजाए।

ॐ मः अस्त्राय फट्-प्रतीच्याम्।

पश्चिम की ओर चुटकी बजाए।

ॐ मः अस्त्राय फट्-वायव्ये।

वायुकोण में चुटकी बजाए।

ॐ मः अस्त्राय फट्-उदीच्याम्।

उत्तर की ओर चुटकी बजाए।

ॐ मः अस्त्राय फट्-ऐशान्याम्।

ईशानकोण में चुटकी बजाए।

ॐ मः अस्त्राय फट्-ऊर्ध्वायाम्।

ऊपर की ओर चुटकी बजाए।

ॐ मः अस्त्राय फट्-अधरायाम्।

नीचे की ओर चुटकी बजाएं।

●●●

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्रीहरिः

श्री नारायण कवचम्

राजोवाच

यया गुप्तः सहस्त्राक्षः सवाहान् रिपुसैनिकान्।
क्रीडन्निव विनिर्जित्य त्रिलोक्या बुभुजे श्रयम्॥१॥
भगवंस्तन्ममाख्याहि धर्म नारायणात्मकम्।
यथाऽऽततायिनः शत्रून येन गुप्तोऽजयन्मृधे॥२॥

राजा परीक्षित ने पूछा- हे भगवान! देवराज इन्द्र ने जिससे सुरक्षित होकर शत्रुओं की चतुरगिनी सेना को खेल-खेल में अनायास ही जीत कर त्रिलोकी की राजलक्ष्मी का उपभोग किया, आप उस नारायण कवच को मुझे सुनाइये और यह भी बतलाइये कि उन्होंने उससे सुरक्षित होकर रणभूमि में किस प्रकार आक्रमणकारी शत्रुओं पर विजय प्राप्त की।१-२।

वृतः पुरोहितस्त्वाष्ट्रो महेन्द्रायानुपृच्छते।
नारायणाख्यं वर्माह तदिहैकमनाः शृणु।३।

श्री शुकदेव जी ने कहा- परीक्षित्! जब देवताओं ने विश्वरूप को पुरोहित बना लिया, तब देवराज इन्द्र के प्रश्न करने पर विश्वरूप ने उन्हें नारायण कवच का उपदेश किया। तुम एकाग्रचित से उसका श्रवण करो ।३।

विश्वरूप उवाच

धौताङ्घ्रिपाणिराचम्य सपवित्र उदङ्मुखः।
कृतस्वांगकरन्यासो मन्त्राभ्यां वाग्यतः शुचिः॥४॥
नारायणमयं वर्म संनह्येद् भय आगते।
पादयोर्जानुनोरूर्वोदरे हृद्यथोरसि॥५॥
मुखे शिरस्यानुपूर्व्यादोंकारादीनि विन्यसेत्।
ॐ नमो नारायणायेति विपर्ययमथापि वा॥६॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विश्वरूप ने कहा-देवराज इन्द्र! भय का अवसर उपस्थित होने पर नारायण कवच धारण करके अपने शरीर की रक्षा कर लेनी चाहिए। उसकी विधि यह है कि पहले हाथ पैर धोकर आचमन करे, फिर हाथ में कुश की पवित्री धारण कर उत्तर को मुंह करके बैठ जाय। इसके बाद कवच धारण पर्यन्त और कुछ न बोलने का निश्चय करके पवित्रता से-'ॐ नमो नारायणाय' और-'ॐ नमो भगवतमे वासुदेवाय'-इन मन्त्रों के द्वारा हृदयादि अगन्यास तथा अंगुष्ठादि कर न्यास करे। पहले 'ॐ नमो नारायणाय' इस अष्टाक्षर मंत्र के ॐ आदि आठ अक्षरों का क्रमशः पैरों, घुटनां, जांघों, पेट, हृदय, वक्ष-स्थल, मुख और सिर में न्यास करे। अथवा पूर्वोक्त मंत्र के यकार से लेकर ॐ कार्र पर्यन्त आठ अक्षरों का सिर से आरम्भ करके उन्हीं आठ अंगों में विपरीत क्रम से न्याय करे।४-६।

करन्यासं तत कुर्याद् द्वादशाक्षरविद्यया।
प्रणवादियकारान्तमंगुल्यंगुष्ठपर्वसु ।।७।।

तदनन्तर 'ॐ नमे भगवते वासुदेवाय'-इस द्वादशाक्षर मंत्र के ॐ आदि बारह अक्षरों का दायीं तर्जनी से बायीं तर्जनी तक दोनों हाथ की आठ अंगुलियों और दोनों अंगूठों की दो-दो गांठों में न्यास करे।७।

न्यसेद्हृदय ओंकारं विकारमनु मूर्धनि।
षकारं तु भ्रुवोर्मध्ये ण्कारं शिखया दिशेत्।।८।।
वेकारं नेत्रयार्युञ्जयान्नकारं सर्वसंधिषु।
मकारमस्त्रमुद्दिश्य मन्त्रमूर्तिर्भयेद् बुधः।।९।।
सविसर्गं फडन्तं तत् सर्वदिक्षु विनिर्दिशेत्।
ॐ विष्णवे नम इति।।१०।।

फिर 'ॐ विष्णवे नमः' इस मंत्र के पहले अक्षर 'ॐ' का हृदय में, 'वि' का ब्रह्मरन्ध्र में, 'ष' का भौंहों के बीच मे, 'ण' का चोटी में, 'वे' का दोनों नेत्रों में और 'न' का शरीर की सब गांठों में न्यास करे। तदनन्तर 'ॐ मः अस्त्राय फट्' कहकर दिग्बन्ध करे। इस प्रकार न्यास करने से इस विधि को जानने वाला पुरुष मन्त्र स्वरूप हो जाता है।८-१०।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आत्मानं परमं ध्यायेद् ध्येयं षट्शक्तिभिर्युतम्।
विद्यातेजस्तपोमूर्तिमिमं मन्त्रमुदाहरेत्॥११॥

इसके बाद समग्र ऐश्वर्य, धर्म, यश, लक्ष्मी, ज्ञान और वैराग्य से परिपूर्ण इष्टदेव भगवान का ध्यान करे और अपने को भी तद्रूप ही चिन्तन करे। तत्पश्चात् विद्या, तेज और तपःस्वरूप इस कवच का पाठ करे।११।

ॐ हरिर्विदध्यान्मम सर्वरक्षां न्यस्ताङ्घ्रिपद्मः पतगेन्द्रपृष्ठे।
दरारिचर्मासिगदेषुचाप-पाशान् दधानोऽष्टगुणोऽष्टबाहुः।१२।

भगवान् श्रीहरि गरुड़ जी की पीठ पर अपने चरण-कमल रखे हुए हैं। अणिमादि आठों सिद्धियां उनकी सेवा कर रही हैं। आठ हाथों में शंख, चक्र, ढाल, तलवार, गदा, बाण, धनुष और पाश (फंदा) धारण किये हुए हैं। वे ही ॐकार स्वरूप प्रभु सब प्रकार से सब ओर से मेरी रक्षा करें।१२।

जलेषु मां रक्षतु मत्स्यमूर्तिर्या-दोर्गणेभ्यो वरुणस्य पाशात्।
स्थलेषु मायावटुवामनोऽव्यात् त्रिविक्रमः खेऽवतु विश्वरूपः॥१३॥

मत्स्यमूर्ति भगवान जल के भीतर जल-जन्तुओं से और वरुण के पाश से मेरी रक्षा करें। माया से ब्रह्मचारी का रूप धारण करने वाले वामन भगवान स्थल पर और विश्वरूप श्री त्रिविक्रम भगवान आकाश में मेरी रक्षा करें।१३।

दुर्गेष्वटव्याजिमुखादिषु प्रभुः पायान्नृसिंहोऽसुरयूथपारिः।
विमुञ्चतो यस्य महाट्टहासं दिशो विनेदुर्न्यपतंश्च गर्भाः॥१४॥

जिनके घोर अट्टहास करने पर सब दिशाएं गूंज उठी थीं और गर्भवती दैत्य-पत्नियों के गर्भ गिर गए थे, वे दैत्ययूथ पतियों के शत्रु भगवान नृसिंह किले, जंगल, रणभूमि विकट स्थानों में मेरी रक्षा करें।१४।

रक्षत्वसौ माध्वनि यज्ञकल्पः स्वदंष्ट्रयोन्नीतधरो वराहः।
रामोऽद्रिकूटेषवथ विप्रवासे सलक्ष्मणोऽव्याद् भरताग्रजोऽस्मान्॥१५॥

अपनी दाढ़ों पर पृथ्वी को उठा लेने वाले यज्ञमूर्ति वराह भगवान मार्ग में, परशुराम जी पर्वतों के शिखरों पर और लक्ष्मण जी के सहित

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भरत के बड़े भाई भगवान रामचन्द्र प्रवाह के समय मेरी रक्षा करें।१५।

मामुग्रधर्मादखिलात् प्रमादा-न्नारायणः पातु नरश्च हासात्।
दत्तस्त्वयोगादथ योगनाथः पायाद् गुणेशः कपिलः कर्मबन्धात्।।१६।।

भगवान नारायण मारण-मोहन आदि भयंकर अभिचारों और सब प्रकार के प्रमादों से मेरी रक्षा करें। ऋषि श्रेष्ठ नर गर्व से, योगेश्वर भगवान दत्तात्रेय योग के विघ्नों से और त्रिगुणाधिपति भगवान कपिल कर्म-बन्धनों से मेरी रक्षा करें।१६।

सनत्कुमारोऽवतु कामदेवा-द्धयशीर्षा मां पथि देवहेलनात्।
देवर्षिवर्यः पुरुषार्चनान्तरात् कूर्मो हरिर्मां निरयादशेषात्।।१७।।

परमर्षि सनत्कुमार से, हयग्रीव भगवान मार्ग में चलते समय देव-मूर्तियों को नमस्कार आदि न करने के अपराध से, देवर्षि नारद सेवापराधों से और भगवान कच्छप सब प्रकार के नरकों से मेरी रक्षा करें।१७।

धन्वन्तरिर्भगवान् पात्वपथ्याद् द्वन्द्वाद् भयादृषभो निर्जितात्मा।
यज्ञश्च लोकादेवताज्ञानान्ताद् बलो गणात् क्रोधवशादहीन्द्रः।।१८।।

भगवान धनवन्तरि कुपथ्य से, जितेन्द्रिय भगवान ऋषभदेव सुख-दुख आदि भयानक द्वन्दों से, यज्ञ भगवान लोकापवाद से, बलरामजी मनुष्यकृत कष्टों से और शेषजी के क्रोधवशनामक सर्पों के गण से मेरी रक्षा करें।१८।

द्वैपायनो भगवानप्रबोधाद् बुद्धस्तु पाखण्डगणात् प्रमादात्।
कल्किः कलेः कालमलात् प्रपातु धर्मावनायोरुकृतावतारः।।१९।।

भगवान श्रीकृष्ण द्वैपायन व्यास जी अज्ञान से तथा बुद्धदेव पाखण्डियों से और प्रमाद से मेरी रक्षा करें। धर्म-रक्षा के लिए महान अवतार धारण करने वाले भगवान कल्कि पाप बहुल कलिकाल के दोषों से मेरी रक्षा करें।१९।

मां केशवो गदया प्रातरव्याद् गोविन्द आसङ्गवमात्तवेणुः।
नारायणः प्राण्ह उदात्तशक्ति-र्मध्यंदिने विष्णुररीन्द्रपाणिः।।२०।।

प्रातः काल भगवान केशव अपनी गदा लेकर, कुछ दिन चढ़ जाने पर भगवान गोविन्द अपनी बांसुरी लेकर, दोपहर के पहले भगवान

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नारायण अपनी तीक्ष्ण शक्ति लेकर और दोपहर को भगवान विष्णु चक्रराज सुदर्शन लेकर मेरी रक्षा करें।२०।

देवोऽपराह्णे मधुहोग्रधन्वा सायं त्रिधामावतु माधवो माम्।
दोषी हृषीकेश उतार्धरात्रे निशीथ एकोऽवतु पद्मनाभः॥२१॥

तीसरे पहर में भगवान मधुसूदन अपना प्रचण्ड धनुष लेकर मेरी रक्षा करें। सायंकाल में ब्रह्मा आदि त्रिमूर्तिधारी माधव, सूर्यास्त के बाद हृषीकेश, अर्द्धरात्रि के पूर्व तथा अर्द्धरात्रि के समय अकेले भगवान पद्मनाभ मेरी रक्षा करें।२१।

श्रीवत्सधामापररात्र ईशः। प्रत्यूष ईशोऽसिधरो जनार्दनः।
दामोदरोऽव्यादनुसंध्यं प्रभाते विश्वेश्वरो भगवान् कालमूर्तिः॥२२॥

रात्रि के पिछले पहर में श्रीवत्सलाञ्छन श्रीहरि, उषाकाल में खड्गधारी भगवान जनार्दन, सूर्योदय से पूर्व श्री दामोदर और सम्पूर्ण सन्ध्याओं में कालमूर्ति भगवान विश्वेश्वर मेरी रक्षा करें।२२।

चक्रं युगान्तानलतिग्मनेमि भ्रमत् समन्ताद् भगवत्प्रयुक्तम्।
दंदग्धि दंदग्ध्यरिसैन्यमाशु कक्षं यथा वातसखो हुताशः॥२३॥

सुदर्शन! आपका आकार चक्र (रथ के पहिये) की तरह है। आपके किनारे का भाग प्रलय कालीन अग्नि के समान अत्यन्त तीव्र है। आप भगवान की प्रेरणा से सब ओर घूमते रहते हैं। जैसे आग वायु की सहायता से सूखे घास-फूस को जला डालती है, वैसे ही आप हमारी शत्रु सेना को शीघ्र से शीघ्र जला दीजिये, जला दीजिये।२३।

गदेऽशनिस्पर्शनविस्फुलिंगे निष्पिण्ढि निष्पिण्ढ्यजितप्रियासि।
कूष्माण्डवैनायकयक्षरक्षो-भूतग्रहांश्चूर्णय चूर्णयारीन्॥२४॥

कौमोदकी गदा! आपसे छूटने वाली चिंगारियों का स्पर्श वज्र के समान असह्य है। आप भगवान अजित की प्रिया हैं और मैं उनका सेवक हूं। इसलिए आप कूष्माण्ड, विनायक, यक्ष, राक्षस, भूत और प्रेतादि ग्रहों को अभी कुचल डालिए, कुचल डालिए तथा मेरे शत्रुओं को चूर-चूर कर दीजिये।२४।

त्वं यातुधानप्रमथप्रेतमातृ- पिशाचविप्रग्रहवोरदृष्टीन्।
दरेन्द्र विद्रावय कृष्णपूरितो भीमस्वनोऽरेर्हृदयानि कम्पयन्॥२५॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शंख श्रेष्ठ! आप भगवान श्रीकृष्ण के फूंकने से भयंकर शब्द करके मेरे शत्रुओं का दिल दहला दीजिए एवं यातुधान, प्रमथ, प्रेत, मातृका, पिशाच तथा ब्रह्मराक्षस आदि भयावने प्राणियों को यहां से झटपट भगा दीजिए।२५।

त्वं तिग्मधारासिवरारिसैन्य-मीशप्रयुक्तो मम छिन्धि-छिन्धि
चक्षूँषि चर्मञ्छतचन्द्र छादय द्विषामघोनां हर पापचक्षुषाम्।।२६।।

भगवान की श्रेष्ठ तलवार! आपकी धार बहुत तीक्ष्ण है। आप भगवान की प्रेरणा से मेरे शत्रुओं को छिन्न-छिन्न कर दीजिए। भगवान की प्यारी ढाल! आपमें सैकड़ों चन्द्राकार मण्डल हैं। आप पापदृष्टि पापात्मा शत्रुओं की आंखें बंद कर दीजिए और उन्हें सदा के लिए अन्धा बना दीजिए।२६।

यन्नो भयं ग्रहेभ्योऽभूत् केतुभ्यो नृभ्य एव च।
सरीसृपेभ्यो दंष्ट्रिभ्यो भूतेभ्योऽहोभ्य एव वा।।२७।।
सर्वाण्येतानि भगवान्नामरूपास्त्रकीर्तनात्।
प्रयान्तु संक्षयं सद्यो ये नः श्रेयः प्रतीपकाः।।२८।।

सूर्य आदि ग्रह, धूमकेतु (पुच्छल तारे) आदि केतु, दुष्ट मनुष्य, सर्पादि रेंगने वाले जन्तु दाढ़ों वाले हिंसक पशु, भूतप्रेत आदि तथा पापी प्राणियों से हमें जो-जो भय हो और जो-जो हमारे मङ्गल के विरोधी हों-वे सभी भगवान के नाम, रूप तथा आयुधों का कीर्तन करने से तत्काल नष्ट हो जाए।२७-२८।

गरुडो भगवान् स्तोत्रस्तोभश्छन्दोमयः प्रभुः।
रक्षत्वशेषकृच्छ्रेभ्यो विषवक्सेनः स्वनामभिः।।२९।।

बाहद, रथन्तर आदि सामवेदीय स्तोत्रों से जिनकी स्तुति की जाती है, वे वेदमूर्ति भगवान गरूड़ और विषवक्सेन जी अपने नामोच्चारण के प्रभाव से हमें सब प्रकार की विपत्तियों से बचाए।२९।

सर्वापद्भ्यो हरेर्नामरूपयानायुधानि नः।
बुद्धीन्द्रियमनःप्राणान् पान्तु पार्षदभूषणाः।।३०।।

श्रीहरि के नाम, रूप, वाहन, आयुध और श्रेष्ठ पार्षद हमारी बुद्धि, इन्द्रिय, मन और प्राणों को सब प्रकार की आपत्तियों से बचाए।३०।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यथा हि भगवानेव वस्तुतः सदसच्च यत्।
सत्येनानेन नः सर्वे यान्तु नाशमुपद्रवाः।।३१।।

जितना भी कार्य अथवा कारण रूप जगत है, वह वास्तव में भगवान ही है-इस सत्य के प्रभाव से हमारे सारे उपद्रव नष्ट हो जाएं।३१।

यथैकात्म्यानुभावानां विकल्परहितः स्वयम्।
भूषणायुधलिंगाख्या धत्ते शक्तिः स्वमायमा।।३२।।
तेनैव सत्यमानेन सर्वज्ञो भगवान् हरिः।
पातु सर्वैः स्वरूपैर्नः सदा सर्वत्र सर्वगः।।३३।।

जो लोग ब्रह्म और आत्मा की एकता का अनुभव कर चुके हैं, उनकी दृष्टि में भगवान का स्वरूप समस्त विकल्पों-भेदों से रहित है, फिर भी वे अपनी माया-शक्ति के द्वारा भूषण, आयुध और रूप नामक शक्तियों को धारण करते हैं। यह बात निश्चित रूप से सत्य है। इस कारण सर्वज्ञ, सर्वव्यापक भगवान श्री हरि सदा-सर्वत्र सब स्वरूपों से हमारी रक्षा करें।३२-३३।

विदिक्षु दिक्षूर्ध्वमधः समन्तादन्त-बहिर्भगवान् नरसिंहः।
प्रहापयंल्लोकभयं स्वनेन स्वतेजसा ग्रस्तसमस्ततेजाः।।३४।।

जो अपने भयंकर अट्टहास से सब लोगों के भय को भगा देते हैं और अपने तेज से सबका तेज ग्रस लेते हैं, वे भगवान नृसिंह दिशा-विदिशा में, नीचे-ऊपर, बाहर-भीतर सब ओर हमारी रक्षा करें।३४।

मघवन्निदमाख्यातं वर्म नारायणात्मकम्।
विजेष्यस्यञ्जसा येन दंशितोऽसूरयूथपान्।।३५।।

देवराज इन्द्र! मैंने तुम्हें यह नारायण कवच सुना दिया। इस कवच से तुम अपने को सुरक्षित कर लो। बस, फिर तुम अनायास ही सब देत्य-यूथपतियों को जीत लोगे।३५।

एतद् धारयमाणस्तु यं यं पश्चति चक्षुषा।
पदा वा संस्पृशेत् सद्यः साध्वसात् व विमुच्यते।।३६।।

इस नारायण कवच को धारण करने वाला पुरुष जिसको भी अपने नेत्रों से देख लेता अथवा पैर से छू देता है, वह तत्काल समस्त भयों से मुक्त हो जाता है।३६।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

न कुतश्चिद् भयं तस्य विद्यां धारयतो भवेत्।
राजदस्युग्रहादिभ्यो व्याघ्रा-दिभ्यश्च कर्हिचित्॥३७॥

जो इस वैष्णवी विद्या को धारण कर लेता है, उसे राजा, डाकू, प्रेत, पिशाचादि और बाघ आदि हिंसक जीवों से कभी किसी प्रकार का भय नहीं होता।३७।

इमां विद्यां पुरा कश्चित् कौशिको धारयन् द्विजः।
योगधारणया स्वांग जहौ स मरुधन्वनि॥३८॥

देवराज! प्राचीन काल की बात है, एक कौशिक गोत्री ब्राह्मण ने इस विद्या को धारण करके योगधारणा से अपना शरीर मरुभूमि में त्याग दिया।३८।

तस्योपरि विमानेन गन्धर्वपतिरेकदा।
ययौ चित्ररथः स्त्रीर्भिवृतो यत्र द्विजक्षयः॥३९॥

जहां उस ब्राह्मण का शरीर पड़ा था, उसके ऊपर से एक दिन गन्धर्वराज चित्ररथ अपनी स्त्रियों के साथ विमान पर बैठकर निकले।३९।

गगनान्यपतत् सद्यः सविमानो ह्यवाक्शिराः।
स बालखिल्यवचनादस्थीन्यादाय विस्मितः।
प्रास्य प्राचीसरस्वत्यां स्नात्वा।
धाम स्वमन्वगात्॥४०॥

वहां आते ही वे नीचे की ओर किए विमान सहित आकाश से पृथ्वी पर गिर पड़े। इस घटना से उनके आश्चर्य की सीमा न रही। जब उन्हें बालखिल्य मुनियों ने बतलाया कि यह नारायण कवच धारण करने का प्रभाव है, तब उन्होंने उस ब्राह्मण देवता की हड्डियों को ले जाकर पूर्ववाहिनी सरस्वती नदी में प्रवाहित कर दिया और फिर स्नान करके वे अपने लोक को आ गए।४०।

श्री शंक उवाच

य इदं श्रृणुयात् काले यो धारयति चादृतः।
तं नमस्यन्ति भूतानि मुच्यते सर्वतो भयात्॥४१॥

श्री शुकदेव जी कहते हैं-परीक्षित! जो पुरुष इस नारायण कवच को समय पर सुनता है और जो आदर-पूर्वक इसे धारण करता है, उसके सामने सभी प्राणी आदर से झूक जाते हैं और वह सब प्रकार के भयों से मुक्त हो जाता है।४१।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एतां विद्यामधिगतो विश्वरूपाच्छतक्रतुः।
त्रैलोक्यलक्ष्मीं बुभुजे विनिर्जित्य मृधेऽसुरान्॥४२॥

परीक्षित! शतक्रतु इन्द्र ने आचार्य विश्वरूप जी से यह वैष्णवी विद्या प्राप्त करके रणभूमि में असुरों को जीत लिया और वे त्रैलोक्य लक्ष्मी का उपभोग करने लगे।४२।

इति श्रीनारायणकवचं सम्पूर्णम्

आरती नारायण जी की

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट छिन में दूर करे।१।
जो ध्यावे फल पावे दुःख विनशे मन का।
सुख सम्पत्ति घर आवे कष्ट मिटे तन का।२।
मात-पिता तुम मेरे शरण गहूं मैं किसकी।
तुम बिन और न दूजा आस करूं जिसकी।३।
तुम पूरण परमात्मा तुम अंतर्यामी।
पार ब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी।४।
तुम करूणा के सागर तुम पालन कर्ता।
मैं मूरख खलकामी कृपा करो भर्ता।५।
तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपति।
किस विधि मिलूं गोसाई तुमको मैं कुमति।६।
दीन बन्धु दुःख हरता तुम ठाकुर मेरे।
करूणा हस्त बढ़ाओ द्वार पड़ा तेरे।७।
विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ सन्तन की सेवा।८।
तन मन धन सब कुछ है तेरा
तेरा तुझको अर्पण क्या लागे मेरा।९।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री गोपाल अक्षय कवचम्

श्री नारद उवाच

इन्द्राद्यमरवर्गेषु ब्रह्मन् यत्परमादभुतम्।
अक्षयं कवचं नाम कथयस्व मम प्रभो॥१॥

श्री नारद ने कहा- इन्द्र आदि अमर वर्ग से भी अद्भुत अक्षय नामक कवच को हे ब्रह्माजी! हे प्रभु! मुझे बताइये।

यद्धत्वाऽऽकर्ण्य वीरस्तु त्रैलोक्यविजयो भवेत्॥१॥

जो धारण मात्र से वीरता प्रदान करता है व त्रिलोक पर भी अधिकार दिला देता है।

ब्रह्मोवाच

शृणु पुत्र मुनिश्रेष्ठ कवचं परमाद्भुतम्।
इन्द्रादिदेववृन्दैश्च नारायणमुखाच्छ्रृतम्॥२॥

ब्रह्मा ने कहा- मुनियों में श्रेष्ठ हे पुत्र! परम अद्भुत कवच सुनो। इसे इन्द्र आदि देवताओं ने नारायण के मुख से सुना था।

त्रैलोक्यविजयस्यास्य कवचस्य प्रजापतिः।
ऋषिश्छन्दो देवता च सदा नारायणः प्रभु॥३॥

इस त्रैलोक्य विजय दिलाने वाले कवच के प्रजापति ऋषि है, अनुष्टप छन्द है एवं श्री नारायण प्रभु इसके देवता है।

विनियोग

ॐ अस्य श्री त्रैलोक्य विजयाक्षय कवचस्य,
प्रजापति ऋषिः। श्री नारायणः परमात्मा देवताः
धर्मार्थ काम मोक्षार्थे जपे विनियोगः॥४॥
पादौ रक्षतु गोविन्दो जङ्घे पातु जगत्प्रभु।
उरु द्वौ केशवः पातु कटी दामोदरस्ततः॥५॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गोविन्द पांवों की रक्षा करें। जगत प्रभु जांघ की रक्षा करें। दोनों उरुवों की रक्षा केशव करें। कमर की रक्ष दामोदर करें।

वदनं श्री हरिः पातु नाडी देशं च मेऽच्युतः,
वामपार्श्व तथा विष्णुर्दक्षिणं च सुदर्शनः।।६।।

चेहरे की श्रीहरि रक्षा करें। नाड़ी स्थान की अच्युता रक्षा करें। बाईं तरफ की विष्णु तथा दक्षिण तरफ की सुदर्शन रक्षा करें।

बाहुमूले वासुदेवा हृदयं च जनार्दनः,
कंठं पातु वराहश्च कृष्णश्च मुखमण्डलम्।।७।।

कन्धों की रक्षा वासुदेव करें। हृदय की रक्षा जर्नादन करें। कण्ठ की रक्षा वाराह करें। मुखमण्डल की रक्षा कृष्ण करें।

कर्णौ मे माधवः पातु हृषीकेशश्च नासिके,
नेत्रे नारायणः पातु ललाटं गरुड़ध्वजः।।८।।

कानों की रक्षा माधव करें। नासिका की रक्षा हृषीकेश करें। नेत्रों की रक्षा नारायण करें। ललाट की रक्षा गरुड़ध्वज करें।

कपोलं केशवः पातु चक्रपाणिः शिरस्तथा,
प्रभाते माधवः पातु मध्यान्हे मधुसूदनः।।११।।

कपोलों की रक्षा केशव करें। शिर की रक्षा चक्रपाणि करें। प्रभात में माधव रक्षा करें। मध्यान्ह में मधुसूदन रक्षा करें।

दिनान्ते दत्यनाशश्च रात्रौ रक्षतु चन्द्रमा,
पूर्वस्यां पुण्डरीकाक्षो वायव्यां च जनार्दनः।।१०।।

दिन के अंत में दैत्यों का नाश करने वाले रक्षा करें। रात्रि में चन्द्रमा रक्षा करें। पूर्व में पुण्डरीकाक्ष रक्षा करें। वायव्य में जर्नादन रक्षा करे।

इति श्री गोपालाक्ष कवचम्

●●●

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री गोपाल जी की आरती

आरती युगल किशोर की कीजै,
राधे धन न्यौछावर कीजै।
रवि शशि कोटि बदन की शोभा,
ताहि निरखि मेरा मन लोभा।
गौर श्याम मुख निरखत रीझै,
प्रभु को रूप नयन भर पीजै।

कञ्चन थार कपूर की बाती, हरि आए निर्मल भई छाती।
फूलन की सेज फूलन की माला, रत्न सिंहासन बैठे नंदलाला।
मोर मुकुट कर मुरली सोहे, नटवर वेष देख मन मोहे।
आढ़े नील पीत पट सारी, कुञ्ज बिहारी गिरिवर धारी।
श्री पुरुषोत्तम गिरिवर धारी, आरती करत सकल ब्रजनारी।
नन्दनन्दन वषभानु किशोरी, परमानन्द स्वामी अविचल जोरी।

आरती युगल किशोर की कीजै।.....

●●●

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री गायत्री कवचम्

विनियोग

ॐ अस्य श्री गायत्री कवचस्य ब्रह्मा ऋषिगायत्री छन्दो, गायत्री देवता, ॐ भूः रें बीजम्, भुवःणिं शक्ति, स्वः यं कीलकम्, गायत्री प्रसाद सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ॐ मैं श्री गायत्री कवच जिसके ब्रह्मा ऋषि हैं; गायत्री छन्द है; गायत्री देवता है; ॐ भूः रें बीज हैं; भुवः णिं शक्ति है; स्वः यं कीलक है; गायत्री के प्रसाद स्वरूप सिद्धि प्राप्त करने के लिए पाठ करने का विनियोग करता हूं।

ध्यानम्

पञ्चवक्त्रां दशंभुजां सूर्यकोटि समप्रभातम्।
सावित्रीं ब्रह्मवरदाँ चन्द्रकोटि सुशीतलाम्।।१।।
त्रिनेत्रां सितवक्त्रां च मुक्ताहार विराजिताम्,
वराभयांकुशकशा हेम पात्रज्ञ मालिकाः।।२।।
शंखचक्राब्ज युगलं कराभ्यां दधतीं पराम्,
सिपंकज संस्थां च हंसारूढ़ां सुखस्मिताम्।
ध्यात्वैवं मानसाम्भोजे गायत्री कवचं जपेत्।।३।।

जिसके पाँच मुख हैं, दश भुजाएँ हैं। कोटि-कोटि भास्करों की भाँति जिनकी प्रभा है। ब्रह्मा को भी जो वरदान देती हैं। वो चन्द्र की भांति शीतल हैं। उनके तीन नेत्र हैं। मुख गौर वर्णीय हैं। उन्होंने मोतियों की माला धारण की हुई है। जो अभय का वरदान देती है। इनके हाथों में अंकुश, कुशा, पात्र, अक्षयमाला, शंख, चक्र व कमल शोभित हो रहे हैं। इनका स्थान श्वेत कमल है तथा ये हंस पर आरूढ़ हुआ करती है। ऐसी गायत्री माता का जो मंद-मंद मुस्कुरा रही हैं अपने हृदय मंडल में ध्यान करते हुए गायत्री कवच का जाप करता हूँ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ब्रह्मोवाच

विश्वामित्र महाप्राज्ञ गायत्री कवचं श्रृणु,
यस्य विज्ञानमात्रेण त्रैलोक्यं वशयेत्क्षणात्।।१।।

ब्रह्मा ने कहा-हे बुद्धिमान विश्वामित्र् आप गायत्री कवच सुनें जिसके जानने व समझने मात्र से क्षण भर में ही त्रैलोक्य का वशीकरण होता है।

सावित्री मे शिरः पातु शिखायाममृतेश्वरी,
ललाटं ब्रह्म दैवत्या भ्रुवौ मे पातु वैष्णवी।।२।।

सावित्री मेरे शिर की रक्षा करें। शिखा की अमृतेश्वरी रक्षा करें। ललाट की रक्षा ब्राह्मी करें, भृकुटियों की रक्षा वैष्णवी करें।

कर्णो मे पातु रूद्राणी सूर्या सावित्रिकाऽम्बके,
गायत्री वदनं पातु शारदा दशनच्छदौ।।३।।

कानों की रक्षा रूद्राणी करें, नेत्रों की रक्षा सूर्येश्वरी करें। मुख की रक्षा गायत्री करें। होठों की रक्षा शारदा करें।

द्विजान्यज्ञप्रिया पातु रसनायां सरस्वती,
सांख्यायनी नासिकां मे कपोलौ चंद्रहासिनी।।४।।

दाँतो की रक्षा यज्ञप्रिया करें। रसना की रक्षा सरस्वती करें। नासिका की रक्षा सॉख्यायनी करें। कपोलों की रक्षा चन्द्रहासिनी करे।

चिबुकं वेदगर्भा च कण्ठं पात्वघनाशिनी,
स्तनौ मे पातु इन्द्राणी हृदयं ब्रह्मवादिनी।।५।।

वेदगर्भा ठोड़ी की रक्षा करें। कण्ठ की रक्षा उघनाशिनी करें। स्तनों की रक्षा इन्द्राणी करें। हृदय की रक्षा ब्रह्मवादिनी करें।

उदरं विश्वभोक्त्री च नाभौ पातु सुरप्रिया,
जघनं नारसिंही च पृष्ठं ब्रह्माण्डधारिणी।।६।।

उदर की रक्षा विश्व भोक्त्री करें। नाभि की रक्षा सुरप्रिया करें। जांघों की रक्षा नारसिंही करें। पीठ की रक्षा ब्रह्माण्ड धारिणी करें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पार्श्वो मे पातु पद्माक्षी गुह्यं गोगोप्त्रिकाऽवतु,
ऊर्वोरो काररूपा च जान्वोः संध्यात्मिकाऽवतु॥७॥

पार्श्व की रक्षा पद्माक्षी करें। गुप्त अंग की रक्षा गोगोप्त्रिका करें। ऊरू की रक्षा ॐकारा करें, जाह्नवों की रक्षा सन्ध्या करें।

जंघयोः पातु अक्षोभ्या गुल्फयोर्ब्रह्म शीर्षका,
सूर्या पद द्वयं पातु चन्दा पादांगुलीषु च॥८॥

जाँघों की रक्षा अक्षोभ्या करें। गुल्फों की रक्षा ब्रह्म शीर्षा करें। दोनों पाँवों की रक्षा सूर्या करें। पांवों की अंगुलियों की रक्षा चन्द्रा करें।

सर्वाङ्गं वेद जननी पातु मे सर्वदाऽनघा॥९॥

सम्पूर्ण अंगों की रक्षा वेद माता सदा सर्वदा ही किया करें।

इत्येतत् कवचं ब्रह्मन् गायत्र्याः सर्वपावनम्,
पुण्यं पवित्रं पापघ्नं सर्व रोग निवारणम्॥१०॥

ब्रह्मा कहते हैं कि यह गायत्री कवच सर्वपावन है, पुण्य का दाता, पापों का नाशक, पवित्र व समस्त रोगों की निवारण करने वाला है।

द्विसंध्यं यः पठेद्विद्वान सर्वान् कामा वाप्नुयात्,
सर्व शास्त्रार्थ तत्वज्ञः स भवेदवेदवित्तमः॥११॥

जो विद्वान तीनों सन्ध्याओं में इसका पाठ करता है उसकी समस्त कामनाएँ पूर्ण होती हैं। वह सभी शास्त्रों का तत्व समझा जाता है जिस कारण वेदवेत्ताओं में भी उत्तम हो जाता है।

सर्वयज्ञफलम् प्राप्य ब्रह्मान्ते समवाप्नुयात्,
प्राप्नोति जपमात्रेण पुरुषार्थाश्चतुर्विधान्॥१२॥

सभी यज्ञों के समान फल प्राप्त होते हैं। ब्रह्मा के समान हो जाता है। इस केवल जप मात्र से चतुर्विध पुरुषार्थ की उपलब्धि हुआ करती है।

॥ इति विश्वामित्र संहितोक्तं गायत्री कवचम्॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आरती गायत्री जी की

जयति जय गायत्री माता, जयति जय गायत्री माता,
आदि शक्ति तुम अलख निरंजन जगपालक कत्री,
दुःख शोक कलेश कलश दारिद्रय दैन्य हत्री।
ब्रह्म रूपिणी, प्रणत पालिनी जगत धात अम्बे,
भव भय हारी, जन हितकारी, सुखदा जगदम्बे।
भय हारिणी भवतारिणी, अनघे अज आनन्द राशि,
अविकारी, अघहरौ, अविचलित, अमले अविनाशी।
कामधेनु सत चित आनन्द जय गंगा गीता,
सविता की शाश्वती, शक्ति तुम सावित्री सीता।
ऋग यजु साम, अथर्वप्रणयनी, प्रणव महामहिमे।
कुण्डलिनी सहस्त्रार सुषुम्ना शोभा गुण गरिमे।
स्वाहा स्वधा, शची ब्रह्माणी राधा रूद्राणी,
जय सतरूपा, वाणी, विद्या, कमला, कल्याणी।
जननी हम हैं दीन-हीन, दुःख दारिद्र के घेरे,
यद्यपि कुटिल, कपटी, कपूत तउ बालक हैं तेरे।
स्नेहसनी करूणामयी माता चरण शरण दीजे,
बिलख रहे हम शिशु सुत तेरे दया दृष्टि कीजे।
काम, कोध, मद, लोभ दम्भ दुर्भाव द्वेष हरिये,
शुद्धि बुद्धि निष्पाप हृदय मन को पवित्र करिये।
तुम समर्थ सब भाति तारिणी तुष्टि त्राता,
सत मार्ग पर हमें चलाओं, जो है सुखदाता ॐ।

●●●

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दिव्य श्री काली कवचम्

विनियोग मन्त्र

ॐअस्त्र श्रीकाली कवचस्य भैरव ऋषिर्गायत्री छंदः, श्री काली देवता सद्यः शत्रु हननार्थे पाठे विनियोगः।

मैं काली कवच का पाठ अपने शत्रु का हनन के लिए कर रहा हूं। इस कवच के भैरव ऋषि हैं। गायत्री छन्द है एवं इसके देवता स्वयं काली जी है।

काली ध्यानम्

ध्यात्वा कालीं महामाया त्रिनेत्रां बहुरूपिणीम्।
चतुर्भुजां लोलजिह्वां पूर्ण चन्द्र निभाननाम्॥१॥

जिनके तीन नेत्र हैं, जिनके अनगिनत रूप हैं, जिनकी चार भुजाएँ हैं, लाल जीभ हैं तथा जो पूर्ण चंद्र के समान कांतिमान हैं। मैं ऐसा ध्यान करता हूँ।

नीलोत्पलदलश्यामां शत्रुसंघ विदारिणीम्।
नरमुण्डं तथा खड़्गं कमलं वरदं तथा॥२॥

वो नील कमल के सदृश श्यामावर्णा हैं। शत्रु के समूह का नाश करने वाली हैं। इन्होंने खड़ग, कमल, नरमुण्ड तथा वरदान देने के निमित्त हस्त मुद्रा धारण की हुई है।

विभ्राणां रक्तवसनां घोरदंस्ट्रा स्वरूपिणीम्।
अटट्टहासनिरतां सर्वदा च दिगम्बराम्॥३॥

लाल वस्त्र धारण किए, भयंकर दॉतों वाली जो कि बड़े जोर से अटट्टहास करती हैं एवं जो सदा नग्न रहती हैं।

शवासनस्थितां देवी मुण्डमाला विभूषिताम्।
इति ध्यात्वा महादेवीं ततस्तु कवचं पठेत्॥४॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वो शव को आसन बना कर बैठती है तथा जो मुण्डों की माला धारण करती है। (इस प्रकार से ध्यान करके महादेवी का कवच पढ़ना चाहिए।)

शिव उवाचः

(रावण के द्वारा पूछे जाने पर यह कवच शिवजी ने रावण को बताया था)

ॐकालिका घोर रूपाद्या सर्वकाम प्रदा शुभा,
सर्व देव स्तुता देवी शत्रुनाशं करोतु मे॥१॥

हे घोर रूप को धारण करने वाली, सर्व कामनाओं को देने वाली, सदा शुभ करने वाली एवं समस्त देवों के द्वारा स्तुति किए जाने वाली कालिका देवी मेरे शत्रुओं का नाश करो।

ह्रीं ह्रीं स्वरूपिणी चैव ह्रीं ह्रीं सं हं गिनी तथा,
ह्रीं ह्रीं क्षैं क्षौं स्वरूपा सा सर्वदा शत्रु नाशिनी॥२॥

ह्रीं ह्रीं स्वरूप वाली, ह्रीं ह्रीं सं हं बीज रूपा तथा ह्रीं ह्रीं क्षै क्षौं स्वरूप वाली माता सर्वदा ही शत्रुओं का नाश करती रहें।

श्रीं ह्रीं ऐं रूपिणीं देवी भव बन्ध विमोचिनी,
यथा शुम्भो हतो दैत्यो निशुम्भश्च महासुरः॥३॥

श्री अर्थात् लक्ष्मी, ह्रीं अर्थात् शक्ति, ऐं अर्थात सरस्वती रूपिणी देवी जो भव बन्धनों से स्वतन्त्र कर देती हैं। आपने जिस भाँति से शुम्भ निशुम्भ का वध किया था।

वैरिनाशाय वन्दे ताँ कालिकाँ शंकर प्रियाम्।
ब्राह्मी शैवी वैष्णवी च वाराही नारसिंहिका॥४॥

गायत्री रूपी, पार्वती रूपी, लक्ष्मी रूपी, वाराही व नारसिंही आदिक अनेक रूप धारण करने वाली शिवजी को प्रिय लगने वाली कालिके! मैं आपको नमस्कार करता हूं। आप मेरे शत्रुओं का नाश कीजिये।

कौमारी श्रीश्चचामुण्डा खाद्ययन्तु मम द्विषान्।
सुरेश्वरी घोररूपा चण्ड मुण्ड विनाशिनी॥५॥

कुमारी लक्ष्मी (कमला), चामुण्डा मुझसे द्वेष करने वालों का भक्षण करो। इन्द्राणी, घोर रूपा चण्ड मुण्ड का विनाश करने वाली।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मुण्डमाला वृतांगी च सर्वतः पातु मां सदा,
ह्रीं ह्रीं कालिके घोरदंष्ट्रे रुधिर प्रिये।।६।।

ह्रीं ह्रीं अर्थात बारम्बर शक्ति प्रदान करने वाली, विकराल दांतों वाली, रुधिर पान से प्रसन्न होने वाली मुण्डमाला को पहनने वाली कालिके माता सदा सर्वदा मेरी रक्षा करो।

।। इति श्री काली कवचम् समाप्तम् ।।

माला मन्त्र

ॐरुधिर पूर्ण वक्त्रे च रुधिराविताास्तिनी मम शत्रुन खाद्य खाद्य, हिंसय हिंसय, मारय मारय, भिन्धि भिन्धि छिन्धि छिन्धि, उच्चाटय उच्चाटय, द्रावय द्रावय, शोषय, शोषय यातुधानिके चामुंडे ह्रीं ह्रीं वाँ वीं कालिकायै सर्व शत्रून समर्पयामि स्वाहा, ॐ जहि जहि, किटि किटि, किरि किरि, कटु कटु, मर्दय मर्दय, मोहय मोहय, हर हर मम् रिपुन् ध्वंसय, भक्षय भक्षय, त्रोटय त्रोटय मातु धानिका चामुण्डायै सर्व जनान, राज पुरुषान, राज श्रियं देहि देहि, नूतनं नूतनं धान्य जक्षय जक्षय क्षाँ क्षीं क्षूँ क्षौं क्षः स्वाहा।

फल श्रुति

इत्येतत् कवचं दिव्यं कथितं तव रावणः,
ये पठन्ति सदा भक्तया तेषां नश्यन्ति शत्रुवः।।७।।
वैरिणः प्रलयं यान्ति व्याधिताशय भविन्त हि,
धनहीनः पुत्रहीनः शत्रुदस्तय सर्वदा।
सहस्त्र पठनात् सिद्धिः कवचस्य भवेत्तदा,
ततः कार्याणि सिद्धयन्ति नान्यथा मम् भाषितम्।।९।।

हे रावण! मैंने इस दिव्य कवच को तुम्हारे समक्ष कहा है। जो भी दस कवच का पाठ भक्तिपूर्वक नित्य करेगा, उसके शत्रुओं का नाश होगा। उसके शत्रु रोग से पीड़ित होंगे तथा धन पुत्रादि सुखों से वह हीन हो जायेंगे। इसको एक हजार बार पढ़ने से सिद्धि हो जाती है। सिद्ध हो जाने पर मारण प्रयोग में सफलता मिलती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री काली जी की आरती

मंगल की सेवा, सुन मेरी देवा हाथ जोड़ तेरे द्वार खड़े।
पान सुपारी ध्वजा नारियल, ले ज्वाला तेरी भेंट धरे।
सुन जगदम्बे कर न विलम्बे, भक्तन के भण्डार भरे।
सन्तन प्रतिपाली सदा खुशहाली, जय काली कल्याण करे।
बुद्धि विधाता तू जग माता, मेरा कारज सिद्ध करे।
चरण कमल का लिया आसरा, शरण तुम्हारी आन परे।
जब-जब भीर पड़े भक्तन पर, तब-तब आय सहाय करे।
सन्तन.........................
बार-बार तैं तब जग मोह्यो, तरूणी रूप अनूप धरे।
माता होकर पुत्र खिलावे, कहीं भार्या बनकर भोग करे।
सन्तन सुखदाई सदा सहाई, सन्त खड़े जयकार करे।
सन्तन.........................
ब्रह्मा, विष्णु, महेश फल लिए भेंट देन सब द्वार खड़े।
अटल सिंहासन बैठी माता, सिर सोने का छत्र फिरे।
वार शनिश्चर कुमकुल वरणी, जब लंकड़ पर हुक्म करे।
सन्तन.........................
खंग खप्पर त्रिशूल हाथ लिए, रक्त-बीज कूं भस्म करे।
शुम्भ-निशुम्भ क्षण ही में मारे, महिषासुर को पकड़ दले।
आदितवार आदि की वीरा, जन अपने का कष्ट हरे।
सन्तन.........................
कुपित होय के दानव मारे, चण्ड-मुण्ड सब चूर करे।
जब तुम देखो दया रूप हो, पल में संकट दूर करे।
सौम्य स्वरूप धरयो मेरी माता, जन की अरज कबूल करे।
सन्तन.........................
सात बार की महिमा बरनी, सब गुण कौन बखान करे।
सिंह पीठ पर चढ़ी भवानी, अटल भवन में राज्य करे।
दर्शन पावें मंगल गावें, सिद्ध साधक तेरी भेंट धरे।
सन्तन.........................
ब्रह्मा वेद पढ़े तेरे द्वारे, शिव शंकर हरि ध्यान करे।
इन्द्र कृष्ण तेरी करें आरती, चंवर कुबेर डुलाय रहे।
जय जननी जय मातु भवानी, अचल भवन में राज्य करे।
सन्तन.........................

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री हनुमान कवचम्

एकदा सुखमासीनं शंकरं लोकशंकरम्
प्रपच्छ गिरिजा कान्तं कर्पूरधवलं शिवं॥१॥

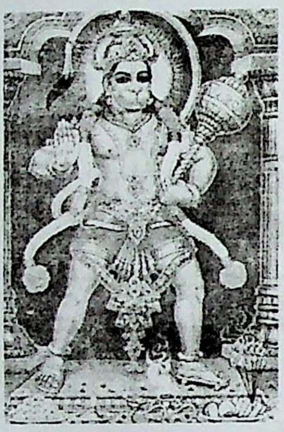

एक बार कर्पूर के समान अत्यन्त शुभ्र वर्णमयी लोक कल्याणी सुखासन में बैठे शिवजी से पार्वती जी ने पूछा-

पार्वत्युवाचः

भगवान् देवदेवेश लोकनाथ जगत्प्रभो,
शोकाकुलानां लोकानां केन रक्षा भवेद्भव॥२॥
संग्रामे संकटे घोरे भूत प्रेतादिके भये,
दुःख दावाग्नि संतप्तचेतसां दुःखभागिनाम्॥३॥

पार्वती जी ने पूछा-हे भगवान! हे देव देवेश! हे जगत के प्रभु! युद्ध के संकट वाले समय, भूत-प्रेत से पीड़ित हो जाने पर, दुःख की भरमार हो जाने पर और शोकादि के बढ़ जाने पर, सन्तप्त हृदयों की रक्षा किस प्रकार से होगी।

महादेव उवाचः

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि लोकानां हितकाम्यया,
विभीषणाय रामेण प्रेम्णां दत्तं च युत्पुरा॥४॥

महादेव ने बताया-सुनो देवी! लोक के कल्याणार्थ भगवान राम ने विभीषण को जो-

कवच कपिनाथस्य वायुपुत्रस्य धीमतः,
गुह्यं तत्ते प्रवक्ष्यामि विशेषाच्छणु सुन्दरी॥५॥

वायु पुत्र कपिनाथ अर्थात हनुमान का कवच बताया था वो अत्यन्त गोपनीय है। इस विशेष कवच को हे सुन्दरी श्रवण करो।

विनियोगः

ॐ अन्य श्री हनुमान कवच स्तोत्र मन्त्रस्य श्री रामचंद्र ऋषिः श्री वीरो हनुमान् परमात्मा देवता, अनुष्टुप छन्दः, मारूतात्मज इति बीजम्, अंजनीसुनुरीति शक्तिः, लक्ष्मण प्राणदाता इति जीवः,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्रीराम भक्ति रिति कवचम्, लंकाप्रदाहक इति कीलकम् मम सकल कार्य सिद्धयर्थे जपे विनियोगः॥६॥

मन्त्रः

ॐऐं श्रीं ह्राँ ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः॥७॥

इस मन्त्र को यथाशक्ति जपें।

करन्यासः

ॐ ह्राँ अंगुष्ठाभ्याँ नमः॥८॥
ॐ ह्रीं तर्जनीभ्याँ नमः॥९॥
ॐ ह्रूं मध्यमाभ्याँ नमः॥१०॥
ॐ ह्रैं अनामिकाभ्याँ नमः॥११॥
ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभयाँ नमः॥१२॥
ॐ ह्रः करतल करपृष्ठाभ्याँ नमः॥१३॥

हृदयादिन्यास

ॐ अंजनी सूतवे नमः, हृदयाय नमः ॥१४॥
ॐ रुद्रमूर्तये नमः, शिरसे स्वाहा ॥१५॥
ॐ वातात्मजाय नमः, शिखायै वषट ॥१६॥
ॐ रामभक्तिरताय नमः, कवचाय हुम् ॥१७॥
ॐ वज्र कवचाय नमः, नेत्र त्र्याय वौषट् ॥१८॥
ॐ ब्रह्मास्त्र निवारणाय नमः, अस्त्राय फट् ॥१९॥

ध्यान

ॐ ध्यायेद बालदिवाकर द्युतिनिभं देवारिदर्पापहं,
देवेन्द्र प्रमुख प्रशस्तयशसं देदीप्यमानं रुचा॥२०॥
सुग्रीवादि समस्त वानरयुतं सुव्यक्ततत्वप्रियं,
संरक्तारूण लोचनं पवनजं पीताम्बरालंकतम्॥२१॥

उदय काल के सूर्य के समान कांति वाले, असुरों के गर्व का नाशकरने वाले देवतादि प्रमुख, उत्तम कीर्तिमयी, पूर्ण तेजस्वी, सुग्रीवादि वानर सहित, ब्रह्मतत्व को प्रत्यक्ष करने वाले, रक्त व अरूण नेत्रमयी, पीताम्बर से अलंकृत हनुमान जी का ध्यान करना चाहिए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उद्यन्मार्तण्डकोटि प्रकट रुचि युतं चारुबीरासनस्थं,
मौंजी यज्ञोपवीताऽऽभरण रुचि शिखा शोभितं॥२२॥
कुण्डलाढयम्। भक्तानामिष्टदम्न प्रणतमुनजनं वेदनादप्रमोदं,
ध्यायेद्देवं विधेय प्लवगकुलपतिं मोष्पदीभूतवर्धिम्॥२३॥

उदय काल से करोड़ों सूर्य समान कांतिमयी, वीरासन में शोभित अत्यन्त रूचि से मौंजी तथा यज्ञोपवीत को धारण करने वाले, कुण्डलों से सुशोभित्, भक्तों की वाँछा पूर्ण करने में चतुर, वेदों के शब्द के अपार हर्षित होनेवाले, वानरों के प्रमुख एवं अत्यधिक विस्तृत समुद्र को अचानक लांघ जाने वाले हनुमान जी का ध्यान करना चाहिए।

वज्राङ्गं पिंगकेशाढ्यं स्वर्णकुण्डल मण्डितम्,
उद्यदक्षिण दोर्दण्डं हनुमन्तं विचिन्तये॥२४॥
स्फटिकाभं स्वर्णकान्तिं द्विभुजं च कृताञ्जलिम्,
कुण्डलद्वय संशोभि मुखाम्भोजं हरिं भजे॥२५॥

जिनका शरीर वज्र के समान कठोर है। केश पीले हैं। जिन्होंने स्वर्ण कुण्डल धारण किये हुए हैं। जिनका दाहिना हाथ ऊपर को उठा हुआ है। स्फटिक के समान कांतिमयी, स्वर्ण की भाँति देदीप्यमान, जो भुजामयी, जिन्होंने हाथों की अंजलि बना रखी हैं ऐसे हनुमान जी का ध्यान करता हूं।

हनुमान मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र सावधानी से जपें।

ॐ नमो भगवते हनुमदाख्य रुद्राय सर्व दुष्ट जन मुख्य स्तम्भनं कुरु कुरु ॐ ह्राँ ह्रीं हूं ठं ठं ठं फट् स्वाहा, ॐ नमो हनुमते शोभिताननाय यशोऽलंकृताय अंजनी गर्भ सम्भूताय रामलक्ष्मणनंदकाय कपि सैन्य प्राकाशय पर्वतोत्पाटनाय सुग्रोवसाह्य करणाय परोच्चाटनाय कुमार ब्रह्मचर्याय गम्भीर शब्दोदयाय ॐ ह्राँ ह्रीं हूँ सर्व दुष्ट ग्रह निवारणाय स्वाहा।

ॐ नमो हनुमते सर्व ग्राहन्भूत भविष्यद्वर्तमान दूरस्थ समीप स्थान् छिंधि छिंधि भिंधि भिंधि सर्व काल दुष्ट बुद्धिमुच्चाटयोच्चाटय परबलान क्षोभय क्षोभय मम सर्व कार्याणि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साधय साधय ॐ ह्राँ ह्रीं हूं फट् देहि ॐ शिव सिद्धि ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ स्वाहा।

ॐ नमो हनुमते पर कृत यन्त्र मन्त्र पराहङ्कारः भूत प्रेत पिशाच पर दृष्टि सर्व तर्जन चेटक विद्या सर्व ग्रह भयं निवारय विनारय, वध वध, पच पच, दल दल, विलय विलय सर्वाणिकुयन्त्राणि कुट्टय कुट्टय, ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ फट् स्वाहा।

ॐ नमो हनुमते पाहि पाहि ऐहि ऐहि सर्व ग्रह भूतानाँ शाकिनी डाकिनीनां विषमदुष्टानाँ सर्वेषामाकर्षय कर्षय, मर्दय मर्दय, छेदय छेदय, मृत्यून् मारय मारय, शोषय शोषय, प्रज्वल प्रज्वल, भूत मण्डल, पिशाच मण्डल, निरसनाय भूत ज्वर, प्रेत ज्वर, चातुर्थिक ज्वर, विष्णु ज्वर, महेश ज्वरं, छिन्धि छिन्धि, भिंधि भिंधि, अक्षि शूल, पक्ष शूल, शिरोऽभ्यंतर शूल, गुल्म शूल, पित्त शूल, ब्रह्म राक्षस कुल पिशाच कुलच्छेदनं कुरु प्रबल नाग कुल।

विषं निर्विषं कुरु कुरु झटति झटति,
ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूं फट् सर्व ग्रह निवारणाय स्वाहा।

ॐ नमो हनुमते पवन पुत्राय वैश्वानर पार दृष्टि, चोर, दृष्टि हनुमदाज्ञा स्फुर ॐ स्वाहा, ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूं फट् घे घे स्वाहा।

श्री राम उवाचः

हनुमान पूर्वतः पातु दक्षिणे पवनात्मजः,
पातु प्रतीच्याँ रक्षोघ्नः पातु सागरपारगः॥१॥
उदीच्यामूर्ध्वगः पातु केसरी प्रिय वन्दनः,
अधस्ताद् विष्णु भक्तस्यु पातु मध्यं च पावनिः ॥२॥
अवान्तर दिशः पातु सीता शोकविनाशकः,
लंकाविदाहकः पातु सर्वापद्भ्यो निरंतरम् ॥३॥

श्री राम ने कहा-

पूर्व में हनुमान, दक्षिण में पवनात्मज, पश्चिम में रक्षोघ्न, उत्तर में सागर पारग, ऊपर से केसरी नन्दन, नीचे से विष्णु भक्त, मध्य में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पावनि, अवान्त दिशाओं सीता शोक विनाशक तथा समस्त मुसीबतों में लंकाविदाहक मेरी रक्षा करें।

सुग्रीव सचिवः पातु मस्तकं वायुनन्दनः,
भालं पातु महावीरो भ्रुर्वोमध्ये निरन्तरम्।।४।।
नेत्रेच्छायापहारी च पातु नः प्लवगेश्वरः,
कपोले कर्णमूले च पातु श्रीराम किंकरः।।५।।
नासाग्रमञ्जनीसूनु पातु वक्त्रं हरीश्वर,
वाचं रुद्राप्रिय पातु तिह्वा पिंगल लोचनः।।६।।

सचिव सुग्रीव मेरे मस्तक की, वायुनन्दन भाल की, महावीर भौंहों के मध्य की, छायापहारी नेत्रों की, प्लवगेश्वर कपोलों की रामकिंकर कर्णमूल की, अंजनीसुत नासाग्र की हरीश्वर सुख की, रुद्रप्रिय वाणी की तथा पिंगल लोचन मेरी जीभ की सर्वदा रक्षा करें।

पातु दन्तान फाल्गुनेष्टाश्चिबुकं दैत्यापादहा,
पातु कण्ठं च दैत्यारीः स्कन्धौ पातु सुरार्चितः।।७।।
भुजौ पातु महातेजाः करौ तो चरणायुधः,
नखान नखायुधः पातु कुक्षिं पातु कपीश्वरः।।८।।
वक्षो मुद्रापहारी च पातु पार्श्वे भुजायुधः,
लंकाविभञ्जनः पातु पृष्ठदेशे निरन्तरम्।।९।।

फाल्गुनेष्ट मेरे दाँतों की, दैत्यापाहदा चिबुक की, दैत्यारी कंठ की, सुरार्चित मेरे कन्धों की, महातेजा भुजाओं की, चरणायुध हाथों की, नखायुध नखों की, कपीश्वर कोख की, मुद्रापहारी वक्ष की, भुजायुध अगल बगल की, लंकाविभंजन मेरी पीठ की सदा रक्षा करें।

वाभिं च रामदूतस्तु कटिं पात्वनिलात्मजः,
गुह्मं पातु महाप्राज्ञो लिंग पातु शिव प्रियः।।१०।।
ऊरू च जानुनी पातु लंका प्रासाद भञ्जनः,
जंघे पातु कपिश्रेष्ठो गुल्फौ पातु महाबलः।।११।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अचलोद्धारकः पातु पादौ भाष्कर सन्निभिः,
अङ्गान्यमित सत्त्वाढयः पातु पादाँगुलीस्तथा॥१२॥

रामदूत नाभि की, नीलात्मज कमर की, महाप्राज्ञा गुदा की, शिवप्रिय लिंग की, लंका प्रसाद भंजन जानु एवं उरू की, कपिश्रेष्ठ जंघा की, महाबल गुल्फों की, अचलोद्धारक पैरों की,भाष्कर सन्निया अंगों की, अमित सत्ताढव पांव वाली अंगुलियों की सर्वदा रक्षा करें।

सर्वाङ्गानि महाशूरः पातु रोमाणि चात्मवान्,
हनुमत्कवच यस्तु पठेद् विद्वान विचक्षणः॥१३॥
स एव पुरुषश्रेष्ठो भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति,
त्रिकालमेककालं वा पठेन्मास्त्रयम् सदा॥१४॥
सर्वानरिपुन क्षणाजित्वा स पुमान्श्रियमाप्नुयात्,
मध्यरात्रे जले स्थित्वा सप्तधारम् पठेद यदि॥१५॥

मशहूर सभी अंगों की, आत्मवान रोगों से सर्वदा रक्षा करें। जो विद्वान इस विचक्षण कवच का पाठ करता है वह भक्ति एवं मुक्ति को प्राप्त करता है। एक समय या तीनों समय प्रतिदिन जो साधक तीन मास तक इसका पाठ करता है वह क्षण मात्र में ही शत्रु वर्ग को जीत कर लक्ष्मी प्राप्त करता है। आधी रात के समय जल के मध्य स्थित होकर इसके सात पाठ करने से क्षय, अपस्मार, कुष्ठ तथा तिजारी का निवारण होता है।

क्षयाऽपस्मार कुष्ठादि ताप ज्वर निवारणम्,
अश्वत्थमूलेऽर्कवारे स्थित्वा पठति यः पुमान्॥१६॥
अचलां श्रियमाप्नोति संग्रामे विजयं तथा,
लिखित्वा पूजयेद यस्तु सर्वत्र विजयी भवेत्॥१७॥
यः करे धारयेन्नित्यं स पुमान् श्रियमाप्नुयात्,
विवादे द्यूतकाले च द्यूते राजकुले रणे॥१८॥
दशवारं पठेद् रात्रौ मिताहारो जितेन्द्रियः,
विजयं लभते लोके मानुषेषु नराधिपः॥१९॥

रविवार के दिन अश्वत्थ वृक्ष की जड़ के पास बैठकर इसका

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पाठ करने से संग्राम विजय तथा अचल लक्ष्मी प्राप्त होती है। इसे लिखकर फिर इसकी पूजा करने पर सर्वत्र विजय मिलती है। इसे धारण करने से लक्ष्मी प्राप्त होती है। वाद-विवाद जुआ राज-घराने एवं युद्ध में इसके दश पाठ करने से विजय प्राप्त होती है।

भूत प्रेत महादुर्गे रणे सागर समप्लवे,
सिंह व्याघ्रभ्ये चोग्रे शर शस्त्रास्त्र पातने ॥२०॥
शृंखला बन्धने चैव काराग्रह नियन्त्रणे,
कायस्तोभे वह्नि चक्रे क्षेत्रे घोरे सुदारुणे॥२१॥
शोके महारणे चैव बालग्रहविनाशनम्,
सर्वदा तु पठेन्नित्यं जयमाप्नुत्यसंशयम्॥२२॥

भूत, प्रेत, महादुख, रण, सागर, सिंह, व्याघ्र, शस्त्रास्त्र के मध्य फँस जाने पर, जंजीरों से बाँधे जाने पर, कारागार में जाने पर, आग में फँसने, शरीर में पीड़ा होने, शोकादि व ब्रह्मग्रह के निवारण के लिए इसे प्रतिदिन पढ़ना चाहिए।

भूर्जे व वसने रक्ते क्षीमे व ताल पत्रके,
त्रिगन्धे नाथ मश्यैव विलिख्य धारयेन्नरः॥23॥
पञ्च सप्त त्रिलोहैर्वा गोपित कवचं शुभम्,
गले कटयां बाहुमूले कण्ठे शिरसि धारितम् ॥24॥
सर्वान्कामान्वाप्नुयात् सत्यं श्रीराम भाषितं॥25॥

भोजपात्र, लाल रेश्मी वस्त्र, ताड़पत्र पर इस कवच को त्रिगन्ध की स्याही से लिखकर इसे धारण करना चाहिए। पांच, सात तथा तीन लोहे के मध्य रखकर गले पर, कमर पर भुजा पर या सिर पर धारण करने से धारक की समस्त अभिलाषाएँ पूर्ण होती हैं। यह श्री राम ने कहा है।

इति श्री हनुमद् कवचं सम्पूर्णम्

●●●

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आरती हनुमान जी की

आरती कीजे हनुमान लला की,
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।
जाके बल से गिरवर काँपे,
भूत पिशाच निकट नहीं झाँके।
लंका सो कोट समुद्र सी खाई,
जात पवनसुत बार न लाई।
दे बीड़ा रघुनाथ पठाये, लंका प्रज्जवलि सिया सुधि लाये।
जगमग ज्योति अवधपुर राजा, घण्टा ताल पखावज बाजा।
शक्ति बाण लगा लक्ष्मण को, लाय संजीवन लक्ष्मण जिवायो।
पैठ पाताल तोरि यम-कारे, अहिरावण की भुजा उखारे।
बायीं भुजा से असुर संहारे, दाहिने भुजा सन्त जन तारे।
अञ्जनी पुत्र महा बलदाई, सन्तन के प्रभु सदा सहाई।
सुर नर मुनि जन आरती उतारें, जय-जय जय हनुमान उचारें।
कञ्चन थार कपूर लौ छाई, आरती करत अञ्जना माई।
जो हनुमान जी की आरती गावै, बसि बैकुण्ठ परम पद पावै।
लंका विध्वंस किये रघुराई, तुलसीदास स्वामी आरती गाई।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विघ्नविनाशक श्री गणेश कवचम्

मुनि उवाच

ध्यायेत् सिंहगतं विनायकममुदिग्बाहुमाधे युगे,
त्रेतायां तु मयूरवाहनममुं षडबाहुकं सिद्धिदम्॥१॥
द्वापरके तु गजाननं युगभुजं रक्तांग रागं विभुँ
तुर्ये तु द्विभुजं सितांगरुचिरं सर्वार्थदं सर्वदा॥२॥

सतयुग में सिंह पर सवार आठ हाथ वाले विनायक का ध्यान करें। त्रेतायुग में सिद्धिदायक, छः हाथ वाले, मयूर पर सवार गणेश का ध्यान करें। द्वापर में चार हाथ वाले गणपति लाल अंगराग की जैसी कांति वाले तथा कलियुग में दो हाथ वाले श्वेतांग जो सर्वदा सर्वकार्य पूर्ण करते हैं ऐसे गणेशजी का ध्यान करें।

विनायकः शिखां पातु परमात्मा परारत्परः,
अति सुन्दरकायस्तु मस्तकं सुमहोत्कटः॥३॥

परात्पर परमात्मा विनायक चोटी की रक्षा करें, अधिक सुन्दर शरीर वाले सुमहोत्कट मस्तक की रक्षा करें।

ललाटं कश्यपः पातु भ्रूयुगं तु महोदरः,
नयने भाल चंद्रस्तु गजास्यस्त्वोष्ठपल्लवौ॥४॥

ललाट की कश्यप, भौंहों की महोदर, आँखों की भालचन्द्र और दोनों होठो की रक्षा गजमुंख करें।

जिह्वां पातु गणाक्रीडश्चिबुकं गिरिजासुतः,
वाचं विनायकः पातु दंतान् रक्षतु दुर्मुख॥५॥

जिह्वा की रक्षा गणक्रीड, चिबुक की रक्षा गिरिजा नन्दन, वाणी की रक्षा विनायक और दाँतों की रक्षादुर्मुख करें।

श्रवणौ पाशुपाणिस्तु नासिकां चिंतितार्थदः,
गणेशस्तु मुखं कंठं पातु देवो गणञ्जयः॥६॥

पाशपाणि दोनों हाथ की, इच्छित फल देने वाले नाक की, गणेश मुख की, गणों को जीतने वाले देव कंठ की रक्षा करें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्कन्धौ पातु गजस्कन्धः स्तनौ विघ्नविनाशनः,
हृदयं गणनाथस्तु हेरंबो जठरं महान्।।७।।

दोनों कंधों की रक्षा गज स्कन्ध, स्तनों की विघ्न-विनाशक, हृदय की गणनाथ और हेरंब पेट की रक्षा करें।

धराधरः पातु पार्श्वौ पृष्ठं विघ्नहरः शुभः,
लिंगं गुह्यं सदा पातु वक्रतुण्डो महाबलः।।८।।

दोनों पार्श्व भाग की धराधर, पीन की विघ्नहर और लिंग एवं गुह्य की रक्षा महाबली वक्रतुण्ड करें।

मणक्रीडो जानु जंघे उरु मङ्गलमूर्तिमान्,
एकदन्तो महाबुद्धिः पादौ गुल्फौ सदावतु।।९।।

घुटनों तथा जंघाओं की रक्षा गणों से खेलने वाले करें, नितम्बर की मंगलपूर्ति, पैर और गुल्फ की रक्षा महाबुद्धि वाले एकदन्त करे।

क्षिप्रप्रसादनो बाहू पाणी आशाप्रपूरकः,
अंगुलीश्च नखान्पातु पद्म हस्तोरिनाशनः।।१०।।

बाहु की रक्षा शीघ्र प्रसन्ना, हाथों की रक्षा आशा पूरक करें, अंगुली तथा नाखुनों की रक्षा हाथ में कमल धारक शत्रुनाशक करें।

सर्वाङ्गाणि मयूरेशो विश्वव्यापी सदावतु,
अनुक्तमपि यत्स्थानं धूम्रकेतुः सदावतुः।।११।।

सम्पूर्ण अंगों की रक्षा विश्वव्यापी मयरेश करें। अकथति स्थानों की रक्षा धूम्रकेतु करे।

आमोदस्त्वग्रतः पातु प्रमोदः पृष्ठतोऽवतु,
प्राच्यां रक्षतु बुद्धिश आग्नेयां सिद्धिदायकः।।१२।।

आगे आमोद, पीछे प्रमोद, पूर्व में बुद्धीश आग्नेय में सिद्धिदायक रक्षा करें।

दक्षिणस्यामुमापुत्रो नैऋत्यां तु गणेश्वरः,
प्रतीच्यां विघ्नहर्ताऽव्याद्वायव्यां गजकर्णकः।।१३।।

दक्षिण की उमा पुत्र, नेऋत्य में गणेश्वर, पश्चिम में विघ्नहर्ता तथा वायव्य में गज कर्णक रक्षा करें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कौंबेर्या निधिपः पायादीशान्यामीशनन्दनः,
दिवोऽव्यादेकदन्तस्तु रात्रौ संध्यासु विघ्नहृत्॥१४॥

उत्तर में निधिप, ईशान में ईशनन्दन, दिन में एकदन्त रात्रि में तथा संध्याओं में विघ्नहर्ता रक्षा करें।

राक्षसासुर वेताल ग्रह भूत पिशाचतः,
पाशांकुशधरः पातु रजः सत्वतमः स्मृतीः॥१५॥

राक्षस, असुर, बेताल, ग्रह, भूत, पिशाच से पाशांकुश धारण करने वाले, रजोगुण, सतोगुण तथा तमोगुण से युक्त रक्षा करें।

ज्ञानं धर्म च लक्ष्मीं च लज्जा कीर्ति तथा कुलम्,
वपुर्धनं च धान्यं च गृह दारान्सुतान्सखीन्॥१६॥

ज्ञान, धर्म, लक्ष्मी, लज्जा, कीर्ति, कुल, शरीर, धन, धान्य, घर, पत्नी, पुत्र और मित्र की रक्षा... ।

सर्वायुधधरः क्षेत्रं मयूरेशोऽवतात्सदा,
कपिलोऽजाविकं पातु गजाश्वान् विकटोवतु॥१७॥

सर्वायुध करें-खेत की रक्षा सदैव मयरेश करें। बकरी तथा भेड़ की रक्षा कपिल करें, हाथी तथा घोड़े की रक्षा विकट करें।

भूर्जपत्रे लिखित्वेदं यः कण्ठे धारयेत्सुधीः,
न भयं जायते तस्य यक्ष रक्षः पिशाचतः॥१८॥

इस कवच को भोजपत्र में लिखकर जो बुद्धिमान कंठ में धारण करता है, उसको यक्ष, राक्षस तथा पिशाच का कभी भय नहीं होगा।

त्रिसन्ध्यं जपते यस्तु वज्रसार तनुर्भवेत्,
यात्रा काले पठेद्यस्तु निर्विघ्नेन फलं लेभेत्॥१९॥

इस कवच को जो कोई तीनों संध्याओं में पढ़ता है, उसका शरीर वज्रवत कठोर हो जाता है। यात्रा काल में पढ़ें, तो कार्य निर्विघ्न सफल होता है।

युद्धकाले पठेद्यस्तु विजयं चाप्नुयाद ध्रुवम्,
मारणोच्चाटनाकर्ष स्तम्भ मोहन कर्मणि॥२०॥

युद्ध काल में पढ़ने पर अवश्य विजय प्राप्त होती है, मारण उच्चाटन, आकर्षण, स्तम्भन, मोहन आदि कर्म में।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सप्तवारं जपेदेतद्दिनानामेक विंशतिम्,
तत्तत्फल मवाप्नोति साधको नात्र संशयः॥२१॥

७ बार २१ दिन तक जपने से उपर्युक्त फल साधक को प्राप्त होता है, इसमें कोई सन्देह नहीं है।

एकविंशतिवारं च पठेंत्तावद्दिनानि यः,
कारागृह गतं सद्यो राज्ञवध्यं च मोचयेत्॥२२॥

इसे २१ दिनों में २१ बार जो पढ़ता है, वह जेल के बन्धन से छूट जाता है।

राजा दर्शन वेलायां पठेदेत त्रिवारतः,
स राजानं वशं नीत्वा प्रकृतिञ्च सभां जयेत्॥२३॥

राजा दर्शन के समय में तीन बार पढ़ने से राजा वश में हो जाता है और पाठक सभा जीत जाता है।

इदं गणेश कवचं कश्यपेनसमीरितम्,
मृद्गलाय च त्रैनाथ माण्डव्याय महर्षये॥२४॥

यह गणेश कवच कश्यप ने मुद्गल को बताया था मुद्गल ने महर्षि माण्डव्य को बताया था।

मह्यं स प्राह कृपया कवचं सर्वसिद्धिदम्,
न देयं भक्ति हीनाय देयं श्रद्धावते शुभत् ॥२५॥

कृपा वश मैंने सर्व सिद्धि देने वाले कवच को बताया है। यह पापी को न देना चाहिए । श्रद्धावान को ही बताएँ।

अनेनास्य कृता रक्षा न बाधाऽस्य भवेत्क्वचित्,
राक्षसा सुरवेताल दैत्य दानव सम्भवा॥२६॥

इस कवच से जो रक्षित रहता है उसे राक्षस, असुर, बेताल, दैत्य दानव से उत्पन्न किसी प्रकार की बाधा प्राप्त नहीं होती है।

इति गणेश कवच

●●●

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री गणेश जी की आरती

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।
लड्डुअन का भोग लगे सन्त करें सेवा।।१।।
एक दन्त दयावन्त, चार भुजा धारी।
मस्तक सिन्दूर सोहे, मुसे की सवारी।।२।।
अन्धन को आँख देत, कोढ़िन को काया।
बाँझन को पुत्र देत, निर्धन को माया।।३।।
हार चढ़ें, फल चढ़ें और चढ़ें मेवा।
सब काम सिद्ध करें, श्री गणेश देवा।।४।।
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
विघ्न विनाशक स्वामी, सुख सम्पत्ति देवा।।५।।
पार्वती के पुत्र कहावों शंकर सुत स्वामी।
गजानन्द गणनायक, भक्तन के स्वामी।।६।।
ऋद्धि-सिद्धि के मालिक, मूषक असवारी।
कर जोड़े विनती करते, आनन्द उर भारी।।७।।
प्रथम आपको पूजत, शुभ मंगल दाता।
सिद्ध होय सब कारज, दारिद्र हट जाता।।८।।
सुण्ड सुण्डाला इन्द इन्दाला, मस्तक पर चन्दा।
कारज सिद्ध करवो, काटो सब फन्दा।।९।।
गणपति जी की आरती, जो कोई नर गावे।
तब बैकुण्ठ परम पद, निश्चय ही पावे।।१०।।

●●●

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शरीर को रोगों से मुक्ति दिलाने वाला दिव्यं सूर्यकवचम्

श्री याज्ञवल्क्य उवाच

शृणुष्व मुनिशार्दूल सूर्यस्य कवचं शुभम्,
शरीरारोग्यं दिव्यं सर्व सौभाग्यदायकम्॥१॥

श्री याज्ञवल्क्य जी बोले-हे मुनि श्रेष्ठ! सूर्य के शुभ दायी कवच को सुनो जो शरीर को आरोग्य देने वाला है तथा सम्पूर्ण दिव्यतामयी सौभाग्य को देने वाला है।

देदीप्यमान मुकुटं स्फुरन्मकर कुण्डलम्,
ध्यात्वा सहस्त्र किरणं स्तोत्र मेतदु दीरयेत्॥२॥

चमकते हुए मुकुट वाले डोलते हुए मकराकृति कुण्डल वाले हजारों किरण वाले सूर्य को ध्यान करके यह स्तोत्र प्रारम्भ करें।

शिरो मे भास्करः पातु ललाटं मेऽमित द्युतिः,
नेत्रे दिनमणिः पातु श्रवणे वासरेश्वरः॥३॥

मेरे शिर की रक्षा भास्कर करें, अपरिमित कांति वाले ललाट की रक्षा करें, नेत्र (आंखों) की रक्षा दिनमणि करें तथा कान की रक्षा दिन के ईश्वर करें।

घ्राणं धर्म घृणिः पातु वदनं वेदवाहनः,
जिह्वं मे मानदः पातु कण्ठं मे सुर वंदितः॥४॥

मेरी नाक की रक्षा धर्मघृण, मुख की रक्षा वेदवाहन जिह्वा की रक्षा मानद तथा कण्ठ की रक्षा देववन्दित करें।

स्कन्धौ प्रभाकरः पातु वक्षः पातु जनप्रियः,
पातु पादौ द्वादशात्मा सर्वाङ्ग सकलेश्वरः॥५॥

मेरे कन्धों की रक्षा प्रभाकर, छाती की रक्षा सर्वजनप्रिय, पैरों की रक्षा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बारह आत्मा वाले तथा सर्वांग की रक्षा सबके ईश्वर करें।

सूर्य रक्षात्मकं स्तोत्रं लिखित्वा भुजपत्रके,
दधाति यः करे तस्य वशगाः सर्व सिद्धय।।६।।

इस सूर्य रक्षात्मक स्तोत्र को भोजपत्र में लिखकर जो हाथ में धारण करता है उसके सम्पूर्ण सिद्धियाँ वश में हो जाती है।

सुस्नातो यो जपेत् सम्यग्योधीते स्वस्थ मानसः,
स रोग मुक्तो दीर्घायुः मुखं पुष्टि च विंदति।।७।।

स्नान करके जो कोई स्वस्थ चित्त से कवच का पाठ करता है वह रोग से मुक्त हो जाता है, दीर्घायु होता है, सुख तथा पुष्टि प्राप्त करता है।

इति सूर्य कवच

सूर्यदेव की आरती

जय जय जय रविदेव, जय जय जय रविदेव।
राजनीति मदहारी शतदल जीवन दाता।।
षटपद मन मुदकारी हे दिनमणि ताता।
जग के हे रविदेव जय जय जय रविदेव।।
नभमण्डल के वासी ज्योति प्रकाशक देवा।
निज जनहित सुखरासी तेरी हम सब सेवा।।
करते हैं रविदेव, जय जय जय रविदेव।
कनक बदन मन मोहित रूचिर प्रभा प्यारी।।
निज मण्डल से मण्डित रूचिर प्रभा प्यारी।
हे सुरवर रविदेव जय जय जय रविदेव।।

●●●

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एकादशमुख हनुमत्कवचम्

श्री गणेशाय नमः उक्त चागस्तिसहितायाम्

लोपामुद्रोवाच

कुम्भोद्भव दयासिन्धो श्रुतं हनुमतः प्रभो।
यन्त्रमन्त्रादिकं सर्व त्वन्मुखोदीरितं मया॥१॥

असगत्य संहिता में कहा गया है, लोपामुद्रा ने कहा-हे कुम्भोद्भव! आप तो दया के सागर हैं। मैंने आपके श्रीमुख से कहा हुआ श्री हनुमान प्रभु का यन्त्र, मन्त्रादिक सभी कुछ श्रवण किया है।

दया कुरु मयि प्राणनाथ वेदितुमुत्सहे,
कवचं वासुदेवपुत्रस्य एकादशमुखात्मनः॥२॥

हे प्राणनाथ! अब आप मुझ पर दया कीजिए। मैं एकादश मुखों वाले हनुमान जो वायुदेव के पुत्र हैं,उनके कवच को जानने का उत्साह करती हूं।

इत्येवं वचनं श्रुत्वा प्रियायाः प्रश्रयान्वितम्,
वक्तु प्रचक्रमे तत्र लोपामुद्रा प्रति प्रभुः॥३॥

इस प्रकार विनम्रता से समन्वित अपनी प्रिया के वचनों को सुनकर उस समय में प्रभु ने लोपामुद्रा के प्रति कहने का उपक्रम किया था।

अगस्त्य उवाच

नमस्कृत्वा रामदूतं हनुमन्तं महामतिम्,
ब्रह्मप्रोत्तं तु कवचं श्रृणु सुन्दरि सादरम्॥४॥

अगस्त्य जी ने कहा-महती मती वाले, श्रीराम के दूत हनुमान जी को नमस्कार करके ब्रह्माजी के द्वारा कहे कवच का हे सुन्दरि! आदर के साथ श्रवण कीजिए।

सनन्दनाय च महच्चतुराननभाषितम्,
कवचं कामद्रं दिव्यं सर्वरक्षो निवर्हणम्॥५॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सनन्दन के लिए चतुरानन ब्रह्मा जी के द्वारा कहा हुआ यह महान कवच सब कामनाओं को देने वाला है, परम दिव्य है और राक्षसों के कुल का निवर्हण करने वाला है।

सर्वसम्पत्प्रदं पुण्यं मर्त्यानां मधुरस्वरे,

विनियोगः

ॐ अस्य श्रीकवचस्यैकादशवक्त्रस्य धीमतः।।६।।
हनुमत्कवचमन्त्रस्य सनन्दन ऋषि स्मृतः,
प्रसन्नात्मा हनुमांश्च देवताऽत्र प्रकीर्तिता।।७।।

हे मधुर स्वर! यह कवच सब सम्पदाओं के करने वाला है और मनुष्यों के लिए परम पुण्यमय है। इस धीमान एकादश मुखों वाले के कवच के तथा हनुमत्कवच मंत्र के सनन्दन ऋषि कहे गये हैं और प्रसन्न आत्मा वाले हनुमान इसके देवता है।

छन्दोऽनुष्टप्समाख्यातं बीजं वायुसुयस्तथा,
मुख्यात्र प्राणशक्तिशक्तिश्च विनियोगः प्रकीर्तितः।।८।।

इसका छन्द अनुष्टुप् है और वायुसुत बीज कहा गया है और यहाँ पर मुख्या प्राण शक्ति है ऐसा विनियोग कहा गया है।

करन्यासः

ॐ स्फ्रें बीतशक्तिधृक्पातु शिरो मे पवनात्मजः अंगुष्ठाभ्यां नमः।।
क्रौं बीजात्मा नयनयोः पातु माँ वानरेश्वरः तर्जनीभ्यां नमः।।
ॐक्षम्जबीरूपी कर्णौं मे सीताशोकविनाशानः मध्यमाभ्यां नमः।।
ॐ ग्लौं बीजवाच्यो नासां मे लक्ष्मणप्राणदायकः अनामिकाभ्यां नमः।।
ॐ वं बीजार्थश्च कण्ठं मे अक्षयक्षयकारकः कनिष्ठिकाभ्यां नमः।।
ॐ रां बीजवाच्यो हृदयं पातु मे कपिनायकः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।।

कवच प्रारम्भ

ॐ वं बीजकीर्तिः पातु बाहुं मे चांअंजनीसुतः,
ॐ ह्रां बीजं राक्षसेन्द्रस्य दर्पहा पातुचोदरन्।।९।।

ओं वं कीर्त्तित अञ्जनीसुत मेरी दोनों बाहुओं की रक्षा करें। ओ ह्रां बीज राक्षसेन्द्र के दर्प का हरण करने वाले उदर की रक्षा करें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ह्वं सौंबीजमयोमध्यं मे पातु लंका विदाहकः,
ह्रीं बीजधरो गुह्यं मे पातु देवेन्द्रवन्दितः।।१०।।

ह्सौ बीज लंका के विदाह करने वाले बाबा मेरे अधोमध्य की रक्षा करें। ऊँ बीजधर देवेन्द्र के द्वारा वन्दित मेरे गुह्य की रक्षा करें।

रं बीजात्मा सदा पातु चोरू मे वार्धिलंघनः,
सुग्रीव सचिवः पातु जानुनी मे मनोजवः,
पादु पादतले पातु द्रोणार्चय धरो हरिः।।११।।

रं बीजात्मा वारिधि के लाँघने वाले सदा मेरे उरुओं की रक्षा करें। सुग्रीव के सचिव मान के समान वेग वाले मेरे दोनों जानुओं की रक्षा करें।

आपादमस्तकं पातुरामदूतो महाबलः,
पूर्वे वानरवक्त्रो माचाग्नेय्याँ क्षत्रियान्तकृत्।।१२।।

महान बल वाले राम-दूत शिर से लेकर पैरों तक मेरा परित्राण करें। पूर्व दिशा में वानर वक्त्र मेरी रक्षा करें, आग्नेयी दिशा में क्षत्रियों का अन्त करने वाले रक्षा करें।

दक्षिणे नारसिंहस्तु नैऋत्यां गणनायकः,
वारुण्यां दिशि मामव्यात्खगवक्री हरीश्वरः।।१३।।

दक्षिण में नारसिंह रक्षा करें और नैऋत्य दिशा में गणों के नायक मेरा त्राण करें। वारुणी दिशा में खग मुख मेरी रक्षा करें।

वायव्यां भैरवमुखः कौंबेर्या पातु मां सदा,
क्रोडास्यः पातु माँ नित्यमीशान्याँ रुद्ररूपधृक।।१४।।

हरीश्वर वायाव्य में, भैरव मुख कौबेरी दिशा में सदा मेरी रक्षा करें। ईशानी दिशा में क्रोडास्य मुख रुद्र रूपधारी मेरी नित्य रक्षा करे।

उर्ध्वं हयानना पातु त्वधः शेष मुखस्तथा,
रामस्तु पातु माँ सर्वत्र नित्यं सौम्यरूपी महाभुजः
एकादशमुखस्यैतद्दिव्यं वै कीर्तित मया।।१५।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सौम्य रूपी महान् भुजाओं वाले राम मेरी नित्य ही रक्षा करें। यह एकादश मुखों वाले हनुमान जी के दिव्य कवच को मैंने वर्णित कर दिया है।

रक्षोघ्नं कामंद सौम्य सर्वसम्पद्विधायकम्,
पुत्रदं धनदं चोग्रं शत्रु संधविममर्दनम्।।१६।।

यह राक्षसों के हनन करने वाला, कामनाओं के प्रदान करने वाला, परम सौम्य सब प्रकार की सम्पदाओं के करने वाला, पुत्र देने वाला, धन प्रदान करने वाला, उग्र और शत्रुओं की सम्पत्ति का मर्दन करने वाला है।

स्वर्गापवर्गदं दिव्यं चिन्तितार्थप्रदं शुभम्,
एतत्कवचमज्ञात्वा मन्त्रसिद्धिर्न जायते।।१७।।

यह स्वर्गीय सुख और अपवर्ग (मोक्ष) को देने वाला है, यह परम दिव्य, शुभ और चिन्तित किये हुए अर्थ का देने वाला है। इस कवच का ज्ञान न प्राप्त करके कभी मन्त्र सिद्धि नहीं हुआ करती है।

चत्वारिंशत्सहस्त्राणि पठेच्छुद्धात्मना नरः,
एकवारंपठेन्नित्यं कवचं सिद्धिद पुमान।।१८।।

मनुष्य को शुद्धात्मा से चालीस हजार बार इसका पाठ करना चाहिए। नित्य एक बार इस कवच का पाठ करें तो यह महान् सिद्धि को प्रदान करने वाला होता है।

द्विवारं या त्रिवारं वा पठेदायुष्यमाप्नुयात्,
क्रमादेकादशामेवमावर्तनजपात्सुधीः ।।१९।।
वर्षान्ते दर्शनं साक्षाल्लभते नात्र संशयः,
यं यं चिन्तयतेकामं तं तं प्राप्नोति पुरुषः।।२०।।

दो अथवा तीन बार इसका पाठ करें तो आयुष्य की प्राप्ति करता है। क्रम में इस प्रकार से सुखी इसकी एकादश आवृति करे तो एक वर्ष के अन्त में श्री हनुमान जी का साक्षात् दर्शन प्राप्त किया करता है, इसमें लेशमात्र भी संशय नहीं है। जिस जिस कामना का चिन्तन किया करता है वह पुरुष उसी-उसी को प्राप्त करता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ब्रह्मोदीरितमेतद्धि तवाग्रे कथितं महत्,
इत्येवमुक्त्वा कवचं महर्षितूष्णीं बभूवेन्दमुखीं निरीक्ष्य
संहृष्टचित्ताऽपि तदा तदीयौ पादौ ननामातिमुदा स्वभर्तुः॥२१॥

ब्रह्माजी ने इसको कहा था वही मैंने तुम्हारे सामने कह दिया है। महर्षि इस प्रकार से कहकर उस इन्द्रमुखी को देख कर चुप हो गये थे। उस समय वह भी परम प्रसन्न चित्त वाली होती हुई अपने स्वामी के चरणों में अत्यधिक प्रसन्नता से प्रणाम करने वाली हुई थी।

अगस्त्य संहित इति अगस्त्य संहिताया एकादश मुखी हनुमान
कवच सम्पूर्ण इति श्री अगस्त्य

एकादशमुखी
श्री हनुमान जी की आरती

आरती श्री अंजनि कुमार की।
शिवस्वरूप मारुतनन्दन, केसरी सुअन कलियुग कुठार की॥

हिय में राम सीय नित राखत, मुख सों राम नाम गुण भाखत।
सुमधुर भक्ति प्रेम रस चाखत, मंगलकर मंगलाकार की॥

विस्मृत बल पौरुष, अतुलित बल, दहन दनुज वन हित दावानल।
ज्ञान मुकुट मणि, पूर्णगुण सकल, मंजु भूमिशुभ सदाचार की॥

मन इंद्रिय विजयी, विशालमति, कलानिधान, निपुणगायकअति।
छंद व्याकरण शास्त्र अमित गति, रामभक्त अतिशय उदार की,

पावन परम सुभक्ति प्रदायक, शरणागत को सब सुखदायक।
विजयी वानर सेना नायक, सुगति पोत के कर्णधार की॥

●●●

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सर्वकामदम् श्री सरस्वती कवचम्

गुरु उवाच

शृणु शिष्य! प्रवक्ष्यामि कवचं सर्वकामदम्,
धृत्वा तु सततं सर्वैः प्रपाठ्योऽयं स्तवः शुभः॥१॥

वृहस्पति जी बोले-हे शिष्य! सुनो! सम्पूर्ण कार्य पूरा करने वाले कवच को कहता हूँ। इस शुभ कवच को धारण करके सभी को पाठ करना चाहिए।

विनियोग मन्त्रः

अस्य श्री सरस्वती स्तोत्र कवचस्य प्रजापति ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः, शारदा देवता, सर्वतत्व परिज्ञाने सर्वार्थ साधनेषु च कवितासु च सर्वासु विनियोगः प्रकीर्तितः। इति पठित्वा विनियोगं कुर्यात्।

॥कवच प्रारम्भ॥

ॐ श्रीं ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा शिरो मे पातु सवर्तः,
ॐ श्रीं वाग्देवतायै स्वाहा भालं मे सर्वदावतु॥१॥

ॐ श्रीं ह्रीं सरस्वती के लिए स्वाहा, मेरे शिर की चारों ओर से रक्षा करें। ॐ श्रीं वाणी देवी के लिए स्वाहा मेरे ललाट की हमेशा रक्षा करें।

ॐ सरस्वत्यै स्वाहेति श्रोत्रेपातु निरन्तरम्,
ॐ ह्रीं श्रीं भगवत्यै सरस्वत्यैस्वाहा नेत्रयुग्मंसदावतु॥२॥

ॐ सरस्वती के लिए स्वाहा कान में निरन्तर रक्षा करें ॐ ह्रीं श्रीं भगवती सरस्वती के लिए स्वाहा दोनों नेत्रों की रक्षा सदा करे।

ॐ ऐं ह्रीं वाग्वादिन्यै स्वाहा नासाँ मे सर्वदावतु,
ॐ ह्रीं विद्याऽधिष्ठातृ दैव्यै स्वाहा चोष्ठं सदावतु॥३॥

ॐ ऐं ह्रीं वाग्वादिनी के लिए स्वाहा मेरे नाक को हमेशा रक्षा करें। ॐ ह्रीं विधा अधिष्ठात्री देवी के लिए स्वाहा है वह मेरे ओष्ठों की रक्षा करें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ श्रीं ह्रीं ब्राह्मयै स्वाहेति दन्तपंक्ति सदावतु,
ॐ ऐं इत्येकाक्षरी मन्त्रो मम कण्ठं सदाऽवतु॥४॥

ॐ श्रीं ह्रीं ब्राह्मी के लिए स्वाहा वे मेरी दाँत की पंक्ति में सदा रक्षा करें ॐ ऐं ऐसा एकाअक्षर का मन्त्र मेरे कण्ठ की हमेशा रक्षा करें।

ॐ श्रीं ह्रीं पातु मे ग्रीवां स्कन्धौ मे श्रीः सदावतु,
ॐ ह्रीं विद्याऽधिष्ठात्री देव्यै स्वाहा वक्षः सदावतु॥५॥

ॐ श्रीं ह्रीं मेरे गले की रक्षा करें मेरे दोनों स्कन्धों की रक्षा करें। ॐ ह्रीं विद्या की अधिष्ठात्री देवी के लिए स्वाहा, वे मेरे वक्षस्थल की रक्षा हमेशा करें।

ॐ ह्रीं विद्याऽधिस्वरूपायै स्वाहा मे पातु नाभिकाम्,
ॐ ह्रीं क्लीं वाण्यै स्वाहेति मम हस्तौ सदावतु॥६॥

ॐ ह्रीं विद्या अधिस्वरूपा के लिए स्वाहा वे मेरी नाभि की रक्षा करें। ॐ क्लीं वाणी के लिए स्वाहा वे मेरे दोनों हाथों की रक्षा सदा करें।

ॐ सर्ववर्णात्मिकार्य स्वाहा पादयुग्मं सदावतु,
ॐ वागधिष्ठात देव्यै स्वाहा सर्व सदावतु॥७॥

ॐ सभी वर्णात्मिका स्वरूपिणी देवी के लिए स्वाहा दोनों चरणों की सदा रक्षा करें। ॐ वाणी की अधिष्ठात्री देवी के लिए स्वाहा सदा चारो ओर से रक्षा करें।

ॐ सर्व कण्ठवासिन्यै स्वाहा प्राच्यां सदावतु,
ॐ सर्व जिह्वाग्रवासिन्यै स्वाहाऽग्नि दिशा रक्षतु॥८॥

ॐ सभी के कण्ठ में वास करने वाली के लिए स्वाहा पूर्व दिशा की रक्षा करें। ॐ सभी के जिह्वा के आगे रहने वाली के लिए स्वाहा आग्नेय दिशा की रक्षा करें।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सरस्वत्यै बुध जनन्यै स्वाहा,
ॐ सततं मन्त्र राजोय दक्षिणे मां सदावतु॥९॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सरस्वती बुध जननी के लिए स्वाहा। ॐ निरन्तर यह मन्त्रों का राजा मेरे दक्षिण की ओर रक्षा करे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्र्यक्षरो मन्त्रो नैऋत्ये सर्वदाऽवतु,
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जिह्वाग्रवासिन्यै स्वाहा प्रातीच्याँ
मां सर्वदावतु॥१०॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तीन अक्षर का मंत्र नैर्ऋत्य में सदा रक्षा करें। ॐ ऐं ह्रीं जिह्वा के आगे बैठने वाली के लिए स्वाहा, वे पश्चिम में सदा रक्षा करें।

ॐ सर्वाम्बिकायै स्वाहा वायव्ये मां सदाऽवतु,
ॐऐं ह्रीं क्लीं गद्यपद्यवासिन्यैस्वाहा मामुत्तरेसदावतु ॥११॥

ॐ सबकी अम्बिका के लिए स्वाहा मेरे वायव्य में सदा रक्षा करें। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं गद्य पद्य में निवास करने वाली के लिए स्वाहा मुझको उत्तर की ओर से सदा रक्षा करें।

ॐ ऐं सर्वशास्त्रवादिन्य स्वाहैशान्यै सदावतु,
ॐ ह्रीं सर्व पूजितायै स्वाहा चोर्ध्वं सदावतु॥१२॥

ॐ ऐं सम्पूर्ण शास्त्र बोलने वाली के लिए स्वाहा ईशान की तरफ हमेशा रक्षा करें। ॐ ह्रीं सभा के द्वारा पूजिता के लिए स्वाहा ऊपर की ओर से हमेशा रक्षा करें।

ॐ ह्रीं पुस्तकवासिन्यै स्वाहा सदाऽधोमा सदावतु,
ॐ ग्रन्थ बीज स्वरूपायै स्वाहा मां सर्वतोऽवतु।१३॥

ॐ ह्रीं पुस्तकवासिनी के लिए स्वाहा नीचे से मुझे हमेशा रक्षा करें। ॐ ग्रंथ (धर्मशास्त्र) के बीज स्वरूपा के लिए स्वाहा मुझे चारों ओर से रक्षा करें।

इति ते कथितं शिष्यं ब्रह्म मन्त्रौध विग्रहम,
इदं विश्व जयं नाम कवचं ब्रह्मरूपकम्॥१४॥

हे शिष्य! सम्पूर्ण पाप नाश करने वाला यह ब्रह्ममन्त्र तुमको बताया। यह विश्व विजय नामक ब्रह्म का रूप है।

।।इति श्री सरस्वती कवचम्।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री सरस्वती जी की आरती

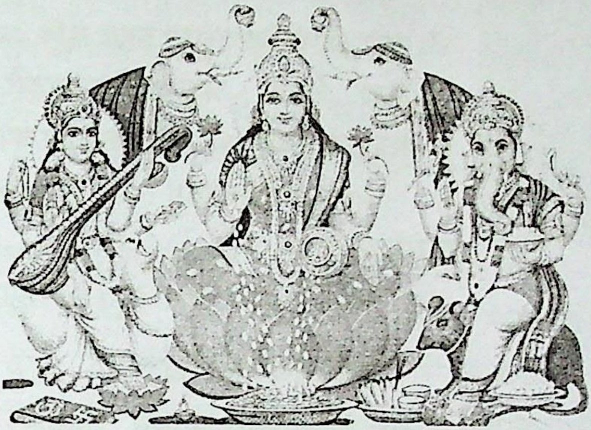

आरती कीजै सरस्वती की,
जनन विद्या बुद्धि भक्ति की ।टेक।
जाकी कृपा कुमति मिट जाये,
सुमिरण करत सुमति गति आये।
शुक सनकादिक जासु गुण गाये,
वाणी रूप अनादि शक्ति की। आरती०
नाम जपत भ्रम छूटि दिए के,
दिव्य दृष्टि शिशु उदर हिय के
मिलहिं दर्श पावन सिय पिय के,
उड़ाई सुरभि युग-युग कीर्ति की। आरती०
रचित जासु बल वेद पुराणा,
जेते ग्रन्थ रचित जगनाना।
तालु छन्द स्वर मिश्रित गाना,
जो आधार कवि यति सति की। आरती०

●●●

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सर्वरक्षा करणम् श्री दुर्गा कवचम्

विनियोग मन्त्रः

ॐ अस्त्र श्री चंडीकवचस्य ब्रह्मा ऋषि, अनुष्टुप् छन्दः, चामुण्डा देवता, अङ्गन्यासोक्तमातरो बीजम्, दिग्बन्धदेवतास्तत्त्वम् श्री जगदम्बाप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः॥

ॐ नमश्चंडिकायै॥ (ॐ चण्डिका देवी को नमस्कार है।)

(इस चण्डिका मन्त्र के 108 जप करें।

मार्कण्डेय उवाच

ॐ यदगुह्यं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम्,
यन्न कस्यचिदाख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह॥१॥

मार्कण्डेय जी ने कहा-पितामह! जो इस संसार में परमगोपनीय तथा मनुष्यों की सब प्रकार से रक्षा करने वाला है और जो अब तक आपने दूसरे किसी के सामने प्रकट नहीं किया हो, ऐसा कोई साधन मुझे बताइये।

ब्रह्मोवाच

अस्ति गुह्यतमं विप्र सर्वभूतोपकारकम्,
देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छ्रणुष्व महामनु॥२॥

ब्रह्माजी बोले-ब्रह्मन! ऐसा साधन तो एक देवी का कवच ही है, जो गोपनीय से भी परम गोपनीय, पवित्र तथा सम्पूर्ण प्राणियों का उपकार करने वाला है। महामुने! उसे श्रवण करो।

प्रथमं शैलीपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी,
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम्॥३॥
पञ्चमं स्कन्धमातेति षष्ठं कात्यायनीति च,
सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम्॥४॥
नवम् सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः,
उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना॥५॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देवी के नौ रूप हैं, जिन्हें 'नवदुर्गा' कहते हैं। प्रथम रूप शैलीपुत्री है। दूसरा रूप ब्रह्मचारिणी है। तीसरा स्वरूप चन्द्रघण्टा के नाम से प्रसिद्ध है। चौथा कूष्माण्डा है। पाँचवी दुर्गा का नाम स्कन्ध माता है। देवी के छठे रूप को कात्यायनी कहते हैं। सातवाँ कालरात्रि आठवाँ स्वरूप महागौरी के नाम से प्रसिद्ध है। नवीं दुर्गा का नाम सिद्धिदात्री है। ये सब नाम सर्वज्ञ महात्मा वेद भगवान के द्वारा ही प्रतिपादित हुए हैं।

अग्निना दह्यमानस्तु शत्रुमध्ये गतो रणे,
विषमे दुर्गमे चैव भयार्त्ताः शरणं गताः॥६॥
न तेषां जायते किंचिदअशुभं रणसंकटे,
नापदं तस्य पश्चामि शोकदुःखभयं न हि॥७॥

जो मनुष्य अग्नि में जल रहा हो, रणभूमि में शत्रुओं से घिर गया हो, विषम संकट में फंस गया हो तथा इस प्रकार भय से आतुर होकर जो भगवती दुर्गा की शरण में प्राप्त हुए हों, उनका कभी काई अमंगल नहीं होता। युद्ध के समय, संकट में पड़ने पर भी उनके ऊपर कोई विपत्ति नहीं दिखायी देती। उन्हें शोक, दुःख और भय की प्राप्ति नहीं होती ।

यैस्तु भत्तया स्मृता नूनं तेषां वृद्धिः प्रजायते,
ये त्वां स्मरन्ति देवेशि रक्षसे तान्ना संशयः॥८॥

जिन्होंने भक्ति पूर्वक देवी की स्मरण किया है, उनका निश्चय ही अभ्युदय होता है। देवेश्वरि! जो तुम्हारा चिन्तन करते हैं, उनकी तुम निःसन्देह रक्षा करती हो।

प्रेतसंस्था तु चामुण्डा वाराही महिषासना,
ऐन्द्री गजसमारूढा वैष्णवी गरुड़ासना॥९॥

चामुण्डा देवी प्रेत पर आरूढ़ होती हैं। वाराही भैंस की सवारी करती हैं। ऐन्द्री का वाहन ऐरावत हाथी है। वैष्णवी देवी गरूड़ पर ही आसन जमाती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

माहेश्वरी वृषारूढा कौमारी शिखिवाहना,
लक्ष्मीः पद्मासना देवी पद्महस्ता हरिप्रिया॥१०॥

माहेश्वरी वृषभ पर आरूढ़ होती है। कौमारी का वाहन मयूर है। भगवान विष्णु की प्रियतमा लक्ष्मी देवी कमल के आसन पर विराजमान है और हाथों में कमल धारण किये हुए हैं।

श्वेतरूपधरा देवी ईश्वरी वृषभवाहना,
ब्राह्मी हंससमारूढा सर्वाभरणभूषिता॥११॥

वृषभ पर आरूढ़ ईश्वरी देवी ने श्वेत रूप धारण कर रखा है। ब्राह्मी देवी हंस पर बैठी हुई है और सब प्रकार के आभूषण से विभूषित है।

इत्येता मातरः सर्वाः सर्वयोगसमन्विताः,
नानाभरणशोभाढया नानारत्नोपशोभिताः॥१२॥

इस प्रकार से सभी माताएँ सब प्रकार की योगशक्तियों से सम्पन्न हैं। इसके सिवा और भी बहुत सी देवियाँ हैं, जो अनेक प्रकार के आभूषणों की शोभा से युक्त तथा नाना प्रकार के रत्नों से सुशोभित हैं।

दृश्यन्ते रथमारूढा देव्यः क्रोधसमाकुलाः,
शंख चक्रं गदां शक्तिं हलं च मुसलायुधम्॥१३॥
खेटकं तोमरं चैव परशुं पाशमेव च,
कुन्तायुधं त्रिशूलं च शार्ङ्गमायुधमुत्तमम्॥१४॥
दैत्यानां देहनाशाय भक्तनामभयाय च,
धारयन्त्यायुधानीत्थं देवानां च हिताय वै॥१५॥

ये सम्पूर्ण देवियाँ क्रोध में भरी हुई हैं और भक्तों की रक्षा के लिए रथ पर बैठी दिखायी देती हैं। शंख, चक्र, गदा, शक्ति हल और मूसल, खेटक और तोमर, परशु तथा पाश, कुन्त और त्रिशूल एवं उत्तम शार्ग धनुष आदि अस्त्र-शस्त्र अपने हाथों में धारण करती हैं। दैत्यों के शरीर का नाश करना, भक्तों को अभयदान देना और देवताओं का कल्याण करना-यही उनके शस्त्र धारण का उद्देश्य है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नमस्तेऽस्तु महारौद्रे महाघोरपराक्रमे,
महाबले महात्साहे महाभयविनाशिनि॥१६॥

महान रौद्ररूप, अत्यन्त घोर पराक्रम, महान बल और महान उत्साह वाली देवि! तुम महान भय का नाश करने वाली हो, तुम्हें नमस्कार है। (कवच आरम्भ करने से पहले इस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिए)

त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्द्धिनि,
प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री अग्नेय्याम अग्निदेवता॥१७॥
दक्षिणेऽवतु वाराही नैर्ऋत्यां खड्गधारिणी,
प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद् वायव्यां मृगवाहिनी॥१८॥

तुम्हारी ओर देखना भी कठिन है। शत्रुओं का भय बढ़ाने वाली जगदम्बिके! मेरी रक्षा करो। पूर्व दिशा में ऐन्द्री मेरी रक्षा करें। अग्निकोण में अग्निशक्ति, दक्षिण दिशा में वाराही तथा नैर्ऋत्यकोण में खंगधारिणी मेरी रक्षा करे। पश्चिम दिशा में वारूणी और वायव्यकोण में मृग पर सवारी करने वाली देवी मेरी रक्षा करें।

उदीच्यां पातु कौमारी ऐशान्या शूलधारिणी,
उर्ध्व ब्रह्माणि मे रक्षेदधस्ताद् वैष्णवी तथा॥१९॥

उत्तर दिशा में कौमारी और ईशानकोण में शूलधारिणी देवी रक्षा करे। ब्रह्माणी! तुम ऊपर की ओर से मेरी रक्षा करो और वैष्णवी देवी नीचे की ओर से मेरी रक्षा करे।

एवं दश दिशो रक्षेच्चामुण्डा शववाहना,
जया मे चाग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः॥२०॥

इसी प्रकार शव को अपना वाहन बनाने वाली चामुण्डा देवी दसों दिशाओं में मेरी रक्षा करे। जया आगे से और विजया पीछे की ओर से मेरी रक्षा करें।

अजिता वामपार्श्वे तु दक्षिणे चापराजिता,
शिखामुद्योतिनी रक्षेदुमा मूर्ध्नि व्यवस्थिता॥२१॥

वामभाग में अजिता और दक्षिण भाग में अपराजिता रक्षा करें। उद्योतिनी शिखा की रक्षा करे। उमा मेरे मस्तक पर विराजमान होकर रक्षा करे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मालाधरी ललाटे च भ्रुवौ रक्षेद यशस्विनी,
त्रिनेत्रा च भ्रुवोर्मध्ये यमघण्टा च नासिके॥२२॥

ललाट में मालाधरी रक्षा करे और यशस्विनी देवी मेरी भौंहों का संरक्षण करे। भौंहों के मध्यभाग में त्रिनेत्रा और नथुनों की यमघण्टा देवी रक्षा करे।

शंखिनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोर्द्वारवासिनी,
कपोलौ कालिका रक्षेत्कर्णमूले तु शांकरी॥२३॥

दोनों नेत्रों के मध्यभाग में शंखिनी और कानों में द्वारवासिनी रक्षा करे। कालिका देवी कपोलों की तथा भगवती शॉकरी कानों के मूलभाग की रक्षा करे।

नासिकायाँ सुगन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्चिका,
अधरे चामृतकला जिह्वायां च सरस्वती॥२४॥

नासिका में सुगन्धा और ऊपर के ओठ में चर्चिका देवी रक्षा करे। नीचे के ओठ में अमृतकला तथा जिह्वा में सरस्वती रक्षा करे।

दन्तान् रक्षतु कौमारी कण्ठदेशे तु चंडिका,
घण्टिकां चित्रघण्टा च महामाया च तालुके॥२५॥

कौमारी दाँतों और चण्डिका कण्ठ प्रदेश की रक्षा करे। चित्रघण्टा देवी गले की और महामाया तालू में रहकर रक्षा करे।

कामाक्षी चिबुकं रक्षेद् वाचं मे सर्वमङ्गला,
ग्रीवायॉ भद्रकाली च पृष्ठवंशे धनुर्धरी॥२६॥

कामाक्षी ठोड़ी की और सर्वमंगला मेरी वाणी की रक्षा करे, भद्रकाली ग्रीवा में और धनुर्धरी पृष्ठ वंश (मेरूदण्ड) में रहकर रक्षा करे।

नीलग्रीवा बर्हि:कण्ठे नलिकां नलकूबरी,
स्कंधयो: खंगिनी रंक्षेद् बाहू मे वज्रधारिणी॥२७॥

कण्ठ के बाहरी भाग में नीलग्रीवा और कण्ठ की नली में नलकूबरी रक्षा करे। दोनों कंधों में खंगिनी और मेरी दोनों भुजाओं की वज्रधारिणी रक्षा करे।

हस्तयोर्दण्डिनी रक्षेदम्बिका चाङ्गुलीषु च,
नखाञ्छूलेश्वरी रक्षेत्कुक्षौ रक्षेत्कुलेश्वरी॥२८॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दोनों हाथों में दण्डिनी और अंगुलियों में अम्बिका रक्षा करे। शूलेश्वरी नखों की रक्षा करे। कुलेश्वरी कुक्षि की रक्षा करे।

स्तनौ रक्षेन्महादेवी मनःशोकविनाशिनी,
हृदये ललिता देवी उदरे शूलधारिणी॥२९॥

महादेवी दोनों स्तनों की और शोकविनाशनी देवी मन की रक्षा करे। ललिता देवी हृदय में और शूलधारिणी उदर में रह कर रक्षा करे।

नाभौ च कामिनी रक्षेद् गुह्यं गुह्येश्वरी तथा,
पूतना कामिका मेढ्रं गुदे महिषवाहिनी॥३०॥

नाभि में कामिनी और गुह्यभाग में गुह्येश्वरी रक्षा करे। पूतना और कामिका लिंग की और महिष-वाहिनी गुदा की रक्षा करे।

कट्यां भगवती रक्षेज्जानुनी विन्ध्यवासिनी,
जंघे महाबली रक्षेत्सर्वकामप्रदायिनी॥३१॥

भगवती कटिभाग में और विन्ध्यवासिनी घुटनों की रक्षा करे सम्पूर्ण कामनाओं को देने वाली महाबली देवी दोनों पिण्डलियों की रक्षा करे।

गुल्भयोर्नारसिंही च पादपृष्ठे तु तैजसी,
पादांगुलीषु श्री रक्षेत्पादाधस्तलवासिनी॥३२॥

नारसिंही दोनों घुछियों की और तैजसी देवी दोनों चरणों के पृष्ठ भाग की रक्षा करे। श्री देवी पैरों की अंगुलियों में और तलवासिनी पैरों के तलुओं में रहकर रक्षा करे।

नखान् दंष्ट्राकराली च केशांश्चैवोर्ध्वकेशिनी,
रोमकूपेषु कौबेरी त्वचं वागीश्वरी तथा॥३३॥

अपनी दाढ़ों के कारण भयंकर दिखायी देने वाली द्रंष्ट्राकराली देवी नखों की और ऊर्ध्व केशिनी देवी केशों की रक्षा करे। रोमावलियों के छिद्रों की कौवेरी और त्वचा की वागीश्वरी देवी रक्षा करे।

रक्तमज्जावसामांसान्यस्थिमेदांसि पार्वती,
अंत्राणि कालरात्रिश्च पित्तं च मुकुटेश्वरी॥३४॥

पार्वती देवी रक्त, मज्जा, माँस, हड्डी और मेद की रक्षा करें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आंतों की कालरात्रि और पित्त की मुकुटेश्वरी रक्षा करे।

पद्मावती पद्मकोशे कफे चूड़ामणिस्तथा,
ज्वालामुखी नखज्वालाभमेद्या सर्वसन्धिषु॥३५॥

मूलाधार आदि कमलकोशों में पद्मावती देवी और कफ में चूड़ामणि देवी स्थित होकर रक्षा करे। नख के तेज की ज्वालामुखी रक्षा करे। जिसका किसी भी नख से भेदन नहीं हो सकता, वह अभेद्या देवी शरीर की समस्त सन्धियों में रहकर रक्षा करे।

शुक्रं ब्रह्माणि मे रक्षेच्छायां छत्रेश्वरी तथा,
अहंकारं मनो बुद्धिं रक्षेन्मे धर्मधारिणी॥३६॥

ब्रह्माणि! आप मेरे वीर्य की रक्षा करे। छत्रेश्वरी छाया की तथा धर्मधारिणी देवी मेरे अहंकार, मन और बुद्धि की रक्षा करे।

प्राणपानौ तथा व्यानमुदानं च समानकम्,
वज्रहस्ता च मे रक्षेत्प्राणं कल्याणशोभना॥३७॥

हाथ में वज्र धारण करने वाली वज्रहस्ता देवी मेरे प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान वायु की रक्षा करे। कल्याण से शोभित होने वाली भगवती कल्याण शोभना मेरे प्राण की रक्षा करे।

रसे रूपे च गन्धे च शब्दे स्पर्शे च योगिनी,
सत्त्वं रजस्तमश्चैव रक्षेन्नारायणी सदा॥३८॥

रक्षा, रूप, गंध, शब्द और स्पर्शदि विषयों का अनुभव करते समय योगिनी देवी रक्षा सदा करे तथा सत्वगुण, रजोगुण और तमोगुण की रक्षा सदा नारायणी देवी करे।

आयु रक्षतु वाराही धर्म रक्षतु वैष्णवी,
यशः कीर्तिं च लक्ष्मी च धनं विद्यां च चक्रिणी॥३९॥

वाराही आयु की रक्षा करे। वैष्णवी धर्म की रक्षा करे तथा चक्रिणी (चक्र धारण करने वाली) देवी यश, कीर्ति, लक्ष्मी, धन तथा विद्या की रक्षा करे।

गोत्रमिन्द्राणि मे रक्षेत्पशून्मे रक्ष चण्डिके,
पुत्रान् रक्षेन्महालक्ष्मीभार्यां रक्षतु भैरवी॥४०॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इन्द्राणि! आप मेरे गोत्र की रक्षा करें। चण्डिके! तुम मेरे पशुओं की रक्षा करो। महालक्ष्मी पुत्रों की रक्षा करे और भैरवी पत्नी की रक्षा करे।

पन्थानं सुपथा रक्षेन्मार्ग क्षेमकारी तथा,
राजद्वारे महालक्ष्मी विंजया सर्वतः स्थिता।।४१।।

मेरे पथ की सुपथा तथा मार्ग की क्षेमकारी रक्षा करे। राजा के दरबार में महालक्ष्मी रक्षा करे तथा सब ओर व्याप्त रहने वाली विजया देवी सम्पूर्ण भयों से मेरी रक्षा करे।

रक्षाहीनं तु यत्स्थानं वर्जितं कवचेन तु,
तत्सर्व रक्ष मे देवि जयती पापनाशिनी।।४२।।

देवी! जो स्थान कवच में नहीं कहा गया है, अतएव रक्षा से रहित है, वह सब तुम्हारे द्वारा सुरक्षित हो, क्योंकि तुम विजयशालिनी और पापनाशिनी हो।

पदमेकं न गच्छेत्तु यदीच्छेच्छुभमात्मनः,
कवचेनावृतो नित्यं यत्र यत्रै व गच्छति।।४३।।
तत्र तत्रार्थलाभश्च विजयः सार्वकामिकः,
यं यं चिंतयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम्।।४४।।

यदि अपने शरीर का भला चाहे तो मनुष्य बिना कवच के कहीं एक पग भी न जाय, कवच का पाठ करके ही यात्रा करे। कवच के द्वारा सब ओर से सुरक्षित मनुष्य जहाँ-जहाँ जाता है, वहाँ-वहाँ उसे ध न लाभ होता है तथा सम्पूर्ण कामनाओं की सिद्धि करने वाली विजय प्राप्ति होती है। वह जिस-जिस अभीष्ट वस्तु का चिन्तन करता है, उस-उसको निश्चय ही प्राप्त कर लेता है। वह पुरुष इस पृथ्वी पर तुलना रहित महान ऐश्वर्य का भागी होता है।

निर्भयो जायते मर्त्यः संग्रामेष्ववराजितः,
त्रैलोक्ये तु भवेत्पूज्यः कवचेनावृतः पुमान्।।४५।।

कवच से सुरक्षित मनुष्य निर्भय हो जाता है। युद्ध से उसकी पराजय नहीं होती तथा वह तीनों लोकों में पूजनीय होता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इदं तु देव्याः कवचं देवानामपि दुर्लभम्,
यः पठेत्प्रयतो नित्यं त्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः॥४६॥
दैवी कला भवेत्तस्य त्रैलोक्येष्वपराजितः,
जीवेद् वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः॥४७॥

देवी का कवच देवताओं के लिए भी दुलर्भ है। जो प्रतिदिन नियमपूर्वक तीनों संध्याओं के समय श्रद्धा के साथ इसका पाठ करता है, उसे दैवी कला प्राप्त होती है तथा तीनों लोकों में कहीं भी पराजित नहीं होता। इतनी ही नहीं, वह अपमृत्यु से रहित ही सौ से भी अधिक वर्षो तक जीवित रहता है।

नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लूताविस्फोटकादयः,
स्थावरं जंगमं चैव कृत्रिमं चापि यद्विषम्॥४८॥

मकरी, चेचक और कोढ़ आदि उसकी सम्पूर्ण व्याधियाँ नष्ट हो जाती है। कनेर, भाँग, अफीम, धतूरे आदि का स्थावर विष, सांप और बिच्छू आदि काटने से चढ़ा हुआ जंगम विष तथा अहिफेन और तेल के संयोग आदि से बनने वाला कृत्रिम विष-ये सभी प्रकार के विष दूर हो जाते हैं उनका कोई असर नहीं होता।

अभिचाराणि सर्वाणि यन्त्राणि भूतले,
भूचराः खेचराश्चैव जलजाश्चोपदेशिकाः॥४९॥
सहजा कुलजा माला डाकिनी शाकिनी तथा,
अन्तरिक्षचरा घोरा डाकिन्यश्च महाबलाः॥५०॥
ग्रहभूतपिशाचाश्च यक्षगन्धर्वराक्षसाः,
ब्रह्मराक्षसवेतालाः कूष्माण्डा भैरवादयः॥४९॥
नश्यन्ति दर्शनात्तस्य कवचे हृदि संस्थिते,
मानोन्नतिर्भवेद् राज्ञस्तेजोवृद्धिकरं परम्॥४२॥

इस पृथ्वी पर मारण-मोहन आदि जितने अभिचारिक प्रयोग होते हैं तथा इस प्रकार के जितने मंत्र, यन्त्र होते हैं, वे सब इस कवच को हृदय में धारण कर लेने पर मनुष्य को देखते ही नष्ट हो जाते हैं। ये ही नहीं पृथ्वी पर विचरने वाले ग्राम देवता आकाशचारी देवविशेष,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जल के सम्बन्ध से प्रकट होने वाले गण, उपदेश मात्र से सिद्ध होने वाले देवता, कुल देवता, कण्ठमाला आदि रोग, डाकिनी, शाकिनी, अन्तरिक्ष में विचरने वाली अत्यन्त बलवती भयानक डाकिनियाँ, ग्रह, भूत, पिशाच, यक्ष, गन्धर्व, राक्षस, ब्रह्मराक्षस, बेताल, कूष्माण्ड और भैरव आदि अनिष्टकारक देवता भी हृदय में कवच धारण किये रहने पर उस मनुष्य को देखते ही भाग जाते हैं। कवचधारी पुरुष को राजा से सम्मान-वृद्धि प्राप्त होती है। यह कवच मनुष्य के तेज की वृद्धि करने वाला उत्तम है।

यशसा वर्धते सोऽपि कीर्तिमण्डितभूतले,
जपेत्सप्तशतीं चण्डीं कृत्वा तु कवचं पुरा॥४३॥
यावद्भूमण्डलं धत्ते सशैलवनकाननम्,
तावत्तिष्ठति मेदिन्यां सन्ततिः पुत्रपौत्रिकी॥५४॥

कवच का पाठ करने वाला पुरुष अपनी कीर्ति से विभूषित भूतल पर अपने सुयश के साथ-साथ वृद्धि को प्राप्त होता है। जो पहले कवच का पाठ करके उसके बाद सप्तशती चण्डी का पाठ करता है, उसकी जब तक वन, पर्वत और काननों सहित यह पृथ्वी टिकी रहती है, तब तक यहाँ पुत्र-पौत्र आदि संतान परम्परा बनी रहती है।

देहान्ते परमं स्थानं यत्सुरैरपि दुर्लभम्,
प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामायाप्रसादतः॥५५॥

फिर देह का अन्त होने पर वह पुरूष भगवती महामाया के प्रसाद से उस नित्य परमपद को प्राप्त होता है, जो देवताओं के लिए भी दुर्लभ है।

लभते परमं रूपं शिवेन सह मोदते॥ॐ॥५६॥

वह सुन्दर दिव्य रूप धारण करता और कल्याणमय शिव के साथ आनन्द का भागी होता है।

इति श्री दुर्गा कवच

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री अम्बे जी की आरती

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्माशिवरी।।१।।
मांग सिन्दूर विराजत टीको मृगमद को।
उज्जवल से दोउ नैना चंद्रबदन नीको।।२।।
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै।
रक्त पुष्प गल माला कण्ठन पर साजै।।३।।
केहरि वाहन राजत खंग खप्पर धारी।
सुर नर मुनि जन सेवत तिनके दुखहारी।।४।।
कानन कुण्डल शोभित नासाग्रे मोती।
कोटिक चंद्र दिवाकर सम राजत ज्योती।।५।।
शुम्भ निशुम्भ विदारे महिषासुर घाती।
धूम्रविलोचन नैना निशिदिन मदमाती।।६।।
चण्ड मुण्ड संहारे शोणित बीज हरे।
मधु कैटभ दोउ मारे सुर भयहीन करे।।७।।
ब्रह्माणी रुद्राणी तुम कमलारानी।
आगम निगम बखानी तुम शिव पटरानी।।८।।
चौंसठ योगिनी गावत नृत्य करत भैरू।
बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरू।।९।।
तुम ही जगकी माता तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुख हरता सुख सम्पत्ति करता।।१०।।
भुजा चार अति शोभित वरमुद्रा धारी।
मनवाँछित फल पावत सेवत नर नारी।।११।।
कंचन थाल विराजत अगर कपूर बाती।
श्री माल केतु में राजत कोटि रतन ज्योति।।१२।।
श्री अम्बे जी की आरती जो कोई नर गावै।
कहत शिवानंद स्वामी सुख सम्पत्ति पावै।।१३।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पुण्यदा श्री तुलसी कवचम्

विनियोग मन्त्रः

अस्य श्री तुलसी कवचस्य श्री महादेवी ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्री तुलसी देवता सकल मन इच्छित कामना सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

कवच प्रारम्भ

तुलसी श्री महादेवि नमः पंकज धारिणी,
शिरो मे तुलसी भालं पातु यशस्विनी॥१॥

कमल धारण करने वाली महादेवी तुलसी को नमस्कार है। मेरे शिर की रक्षा तुलसी करे भाल की रक्षा यशस्विनी करें।

दृशौ मे पद्म नयना श्री सखी श्रवणे मम,
घ्राणं पातु सुगन्धा मे मुखं च सुमुखी मम॥२॥

मेरी आंखों की रक्षा पद्मनयना, कानों की रक्षा श्री सखी, नाक की रक्षा सुगन्धा तथा मेरे मुख की रक्षा सुमुखी करे।

जिह्वां मे पातु शुभदा कण्ठं विद्यामयी मम,
स्कन्धौ कल्हारिणी पातु हृदयं विष्णु वल्लभा॥३॥

मेरे जिह्वा की रक्षा शुभदा, कण्ठ की रक्षा विद्यामयी स्कन्धों की रक्षा कल्हारिणी तथा हृदय की रक्षा विष्णु वल्लभा करें।

पुण्यदा मे पातु मध्यं नाभिं सौभाग्यदायिनी,
कटिं कुण्डलिनी पातु उरू नारद वन्दिता॥४॥

मेरी पीठ व पेट की रक्षा पुण्यदा, नाभि की रक्षा सौभाग्य दायिनी, कमर की रक्षा कुण्डलिनी तथा उरू की रक्षा नारद द्वारा वन्दनीया करें।

जननी जानुनी पातु जंघे सकल वंदिता,
नारायण प्रिया पादौ सर्वाङ्गं सर्व रक्षिणी॥५॥

घूटनों की रक्षा जननी, जंघाओं की रक्षा सर्वजनवंदनीया, पैरों की रक्षा नारायण प्रिया तथा सम्पूर्ण अंगों में सर्वरक्षिणी रक्षा करें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

संकटे विषमे दुर्गे भये वादे महाहवे,
नित्यं हि संध्ययो पातु तुलसी सर्वतः सदा।।६।।

संकट में, विषम परिस्थिति में, किले में, डर के समय में बोलने में, भयंकर युद्ध में तथा दोनों सन्ध्याओं में हमेशा तुलसी रक्षा करें।

फल श्रुति

इतीदं परमं गुह्यं तुलस्याः कवचामृतम्,
मर्त्यानाममुतार्थाय भीतानामभयाय च।।७।।

यह अतिगुप्त तुलसी के कवच रूपी अमृत के लिए अमृत तथा डरते हुए के लिए अभय प्रदान करने वाला है।

मोक्षाय च मुमुक्षूणां ध्यायिनां ध्यान योगकृत,
वशाय वश्य कामनां विद्यायै वेद वादिनाम्।।८।।

मोक्षार्थी के लिए मोक्ष, ध्यानियों के लिए ध्यान, वशीकरण करने वालों को वैश्य, वेदवादियों को विद्या के लिए है।

द्रविणाय दरिद्रानां पापिनां पाप शान्तये,
अन्नायक्षुधितानाँ च स्वर्गाय स्वर्गमिच्छताम्।।९।।

दरिद्रों को धन के लिए, पापियों को पाप शान्ति के लिए, भूखे को अन्न के लिए तथा स्वर्ग चाहने वालों को स्वर्ग प्राप्ति के लिए है।

पशव्यं पशुकामनां पुत्रदं पुत्र कांक्षिणाम्,
राज्याय भ्रष्टराज्यानाम् शान्तानां च शांतये।।१०।।

जानवरों की इच्छा करने वालों को जानवर, पुत्र की इच्छा करने वालों के लिए पुत्र, भ्रष्ट राज्य वालों को राज्य, अंशांति वाले को शान्ति प्रदान करने वाला है।

भक्त्वर्थं विष्णु भक्तानां विष्णौ सर्वान्तरात्मानि,
जाप्यं त्रिवर्ग सिद्धर्थ गृहस्थेन विशेषतः।।११।।

विष्णु भक्तों के सबके अन्तःकरण स्थित विष्णु में भक्ति प्राप्ति के लिए है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की सिद्धि के लिए गृहस्थों के द्वारा पठनीय है।

उद्यन्तं चण्डकिरणमुपस्थाय कृताञ्जलिः,
तुलसी कानेन तिष्ठन्नासीनो वा जपेदितम्,
सर्वान् कामानवाप्नोति तथैव मम सन्निधिम्।।१२।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तुलसी के जंगल में बैठकर या खड़े होकर यह कवच जपे तो सम्पूर्ण कार्य सिद्ध हो जाता है वैसे ही मेरे समीप में रहकर जपने से भी कार्य पूरा हो जाता है।

मम प्रियकरं नित्यं हरिभक्ति विवर्धनम्,
या स्यान्मृत प्रजा नारी तस्या अंग प्रमार्जयेत्॥१३॥

यह कवच मुझे हमेशा प्रसन्न कराने वाला तथा विष्णु की भक्ति बढ़ाने वाला है। नारी जिसके बच्चे मर जाते हों उसके अंगों का मार्जन इस कवच से करें।

सा पुत्रं लभते दीर्घ जीविनं चाप्य रोगिणम्,
वन्ध्याया मार्जयेदङ्ग कुशैर्मन्त्रेण साधकः॥१४॥

वह नारी दीर्घायु तथा रोग रहित पुत्र प्राप्त करती है। साधक कुशों से मंत्र द्वारा बॉझ स्त्री के अंगों का मार्जन करें।

साऽपि संवत्सरादेव गर्भ धन्ते मनोहरम्,
अश्वत्थे राजवश्यार्थी जपेदग्नेः सुरूपभाक॥१५।

वह बाँझ स्त्री भी एक वर्ष के भीतर सुन्दर गर्भ धारण करती है। यदि राज्य की इच्छा हो तो पीपल के नीचे बैठकर जपें।

पलाशमूले विद्यार्थो तेजोऽथ्याभिमुखो रवे,
कन्यार्थी चंडिका गेहे शत्रुहत्यै गृहे मम्॥१६॥

विद्यार्थी पलाश के जड़ में बैठकर तेज को चाहने वाला सूर्य के अभिमुख होकर जपे। कन्या चाहने वाला दुर्गा मंदिर में शत्रु नाश के लिए मेरे घर में बैठकर जपे।

श्री कामो विष्णु गेहे च उद्याने स्त्री वशाभवेत्,
किमंत्र बहुनोक्तेन शृणु सैन्येश तत्वतः॥१७॥

लक्ष्मी की इच्छा वाले वैष्णव मन्दिर में, स्त्री वश करने के लिए बगीचा में जपें। हे कुमार! अधिक कहने से क्या होगा इसका तत्व सहित सुनो।

यं यं काममभि ध्यायेत्तं तं प्राप्नोत्य संशयम्,
ममगेहगतस्त्वं तु तारकस्य बधेच्छया॥१८॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जो-जो कार्य सोचता है वह प्राप्त करता है, यह बात ध्रुव सत्य है। तुम तो मेरे घर में तारकासुर को मारने के लिए आए हो।

जपन् स्तोत्रं च कवचं तुलसीगतमानसः,
मण्डलान्तारकं हन्ता भविष्यसि न संशयः॥१९॥

एकाग्र चित्त से तुलसी स्तोत्र कवच को जपते हुए युद्ध में तारकासुर को मार सकोगे। इसमें कोई शंका नहीं है।

॥ इति श्री ब्रहमाण्ड पुराणे अंतर्गत तुलसी स्तुति समाप्त॥

श्री तुलसी जी की आरती

जय तुलसीं माता।
सब जग की सुख दाता वर दाता॥
सब योगों के ऊपर सब रोगों के ऊपर।
रुज से रक्षा करके भव त्राता॥
बटु पुत्री हे श्यामा सुर बल्ली हे ग्राम्या।
विष्णु प्रिये जो तुमको सेवे सो तर जाता।
हरि के शीश विराजत त्रिभुवन से हो वंदित॥
पतित जनों की तारिणी विख्याता।
लेकर जन्म विजन में आई दिव्य भवन में।
मानव लोक तुम ही से सुख संपत्ति पाता॥
हरि को तुम अति प्यारी श्यामवर्ण कुमार।
प्रेम अजब है उनका तुमसे कैसा नाता॥

●●●

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दशश्लोकी श्री अन्नपूर्णा कवचम्

द्वात्रिंशब्दर्ण मन्त्रोऽयं शंकर प्रतिभाषितः,
अन्नपूर्णा महा विद्या सर्व मन्त्रोत्तमोत्तम॥१॥

शंकर जी द्वारा कथित 32 अक्षर का यह अन्नपूर्णा का मंत्र महा विद्या तथा मंत्रों में उत्तम मंत्र है।

पूर्वमुत्तरनुच्चार्य संपुटी करणोत्तमम्,
स्तोत्रस्यास्य ऋषिर्ब्रह्मा छन्दो त्रिष्टुबुदाहृतः॥२॥

प्रारम्भ में तथा अन्त में इसका उच्चारण करके कवच से सम्पुटित करना अच्छा है। इस स्तोत्र को ब्रह्मा ऋषि त्रिष्टुपछन्द कहा गया है।

देवता अन्नपूर्णा च ह्रीं बीजमम्बिकास्मृता,
स्वाहा शक्तिरितिज्ञेयं देवीति कीलकंमतम्॥३॥

अन्नपूर्णा देवता है, ह्रींबीज अम्बिका कहा है। स्वाहा शक्ति तथा देवी कीलक ऐसा जानना चाहिए।

धर्मार्थ काम मोक्षेषु विनियोग उदाहृतः,
सप्तार्णव मनुष्याणां जपमन्त्र समाहितः॥४॥

धर्म अर्थ मोक्षों में विनियोग कहा है। सप्तद्वीपवती पृथ्वी में सबके लिए मंत्र बराबर कहा है।

ॐ ह्रीं भगवती माहेश्वरी अन्नपूर्णायै स्वाहा,
सप्रणिव मनुष्याणां जपमन्त्र समाहितः॥५॥

ॐ ह्रीं बीजरूपा भगवती माहेश्वरी अन्नपूर्णा के लिए स्वाहा।

अन्नपूर्णे इमं मन्त्रं मनुसप्तदशाक्षरम्,
सर्वसम्पद प्रदो नित्यं सर्व विश्वलरी तथा॥६॥

अन्नपूर्णा का यह मंत्र १७ अक्षर का है सभी सम्पत्ति प्रदायक है।

भुवनेश्वरीति विख्याता सर्वाभीष्टं प्रयच्छति,
हृल्लेखयमितिज्ञेयमोंकाराक्षर रूपिणी॥७॥

भुवनेश्वरी इस नाम से प्रख्यात है तथा सभी मनोकामना पूर्ण

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कराती है। ओंकार अक्षर स्वरूपिणी देवी हृदय में लिखित है ऐसा जानना चाहिए।

कान्ति-पुष्टि-धनाऽऽरोग्यम यशांसिलभते श्रियम्,
अस्मिन मन्त्रे रतो नित्यं वशयेदखिलं जगत्॥८॥

कान्ति, पुष्टि, धन, आरोग्य, यश तथा लक्ष्मी देने वाला यह कवच जो नित्य पढ़ता है सारे संसार को वश में कर लेता है।

अंगन्यासः

ॐ अस्य श्री अन्नपूर्णामाला मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषये। नमः शिरसि।
ॐ अन्नपूर्णा देवतायै नम् हृदये।
ॐ ह्रीं बीजाय नमः नाभौ।
ॐ स्वाहा शक्तये नमः पादयोः।
ऊं धर्माऽर्थ काम मोक्षेषु विनियोगायनमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः

ॐ ह्राँ अगुष्ठाभ्याँ नमः।
ॐ ह्रीं तर्जनीभ्याँ नमः।
ॐ ह्रूं मध्यमाभ्याँ नमः।
ॐ ह्रैं अनामिकाभ्याँ नमः।
ॐ ह्रौं कनिष्ठाकाभ्याँ नमः।
ॐ ह्रः करतल करपृष्ठाभ्याँ नमः।

॥ हृदयादिन्यासः॥

ॐ ह्रां हृदयाय नमः।
ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा।
ॐ ह्रँ शिखार्य वषट।
ॐ ह्रैं कवचाय हुम्।
ॐ ह्रौं नेत्राय वौषट्।
ॐ ह्रं अस्त्राय फट्।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ध्यान मन्त्रः

ध्यानम् रक्तां विचित्र वसनां नवचंद्रचूडाम्,
अन्नप्रदान निरतां स्तनभार नम्राम्।
नृत्यन्तमिन्दु सकलाभरणं विलोक्य,
हष्टाँ भजे भगवतीं भव दुख हन्त्रीम्।।

लाल एवं चितकबरे वस्त्रों वाली नवीन चन्द्रतुल्य चूड़ा वाली, अन्नदान करने में तत्पर, कूचों के भार से झुकी हुई नाचते हुए चन्द्रमा के समान आभरणों को देखकर, सांसारिक दुःख दूर करने वाली अन्नपूर्णा देवी को मैं स्मरण करता हूँ।

माला मन्त्र

ॐ ऐं श्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे ममाऽभिलषितमन्न देहि स्वाहा।

भगवती माहेश्वरी अन्नपूर्णा। मुझे मनोभिलाषित अन्न दीजिए।

**ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मन्दार कल्प हरि चन्दन,
पारिजात मध्ये शशाङ्क मणिमण्डित वेदिसंस्थे।
अर्धेन्दु मौलि सुललाटषडर्धनेत्रे भिक्षां प्रदेहि,
गिरिजे क्षुधिताय मह्यम् क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ।।१।।**

मदार, कल्पवृक्ष, सफेद चन्दन, पारिजात आदि के बीच में चन्द्रमा जैसे सफेद मणियों से निर्मित वेदी में बैठी हुई, केशों के जूड़े में आधा चन्द्र शोभित है, जिनके तीन नेत्र शोभायमान हो रहे हैं ऐसी गिरिजा अन्नपूर्णा मुझ भूखे को भिक्षा दें।

**ॐ ऐं ह्रीं श्रीं केयूर-हार-कनकांगद,
कर्णपूरे-कांची कलापमणिकांति लसद्दुकूले।
दुग्धान्न पात्रवर कांचन दर्विहस्ते भिक्षां प्रदेहि,
गिरिजे क्षुधिताय मह्यम् क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ।।२।।**

केयूर, माला, सोने का बाजूबन्द, कर्णफूल, स्वर्ण तथा मणियों से जटित वस्त्रयुक्त, उत्तम पात्र में दूध मिश्रित अन्न सोने के चम्मच हाथ में है जिनके ऐसी गिरिजा मुझ भूखे को भिक्षा दें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्ली आलेकदम्ब परिसेविता पार्श्वभागे शक्रादिभिर्मूकुलितां जलिभिः पुरस्तात्। देवि। त्वदीयचरणौ शरण प्रपद्ये भिक्षां प्रदेहि गिरिजे क्षुधिताय मह्यम् क्लीं श्रीं ह्रीं ॐ।।३।।

सखी जनों से सेवित है पार्श्व भाग जिनका, इन्द्रादि देव द्वारा कमलकलि तुल्य हाथों की अंजलियों से आगे से स्तुतिव, ऐसी हे देवि! आपके चरणों के शरण में आया हूं। मुझ भूखे को भिक्षा दें।

ओं ऐं ह्रीं श्रीं क्ली गन्धर्व-देव-ऋषि-नारद-कौशिकाऽ-त्रिव्यासाऽम्बरीष कलशीद्भव कश्यपाद्याः भक्त्या स्तुवन्ति निगमाऽगम सूक्त मन्त्रै भिक्षां प्रदेहि गिरिजे क्षुधिताय मह्यम् क्लीं श्रीं ह्रीं ओं।४।।

गन्धर्व, देवता, ऋषि नारद, विश्वामित्र, अत्रि, व्यास, अम्बरीष, अगस्त्य कश्यप आदि ऋषि वेद धर्म शास्त्रों के सूक्त तथा मन्त्रों से भक्ति से आपकी स्तुति करते हैं ऐसी आप मुझ भूखे को भिक्षा दें।

ओं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं लीला वचाँसि तव देवि! ऋगादि वेदाः सृष्ट्यादि कर्मरचना भवदीया चेष्टा। त्वत्तेजसा जगदिदं प्रतिभाति नित्यं भिक्षां प्रदेहि गिरिजे क्षुधिताय मह्यम् क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं ओं।।५।।

हे देवि! ऋग्, यजु, साम, अथर्ववेद आपकी लीला की वाणी है, सृष्टि स्थिति संहार आदि कर्म रचना आपकी चेष्टायें है। आपके तेज से यह सम्पूर्ण जगत् हमेशा प्रकाशित रहता है, ऐसी हे गिरिजे! मुझ भूखे को आप भिक्षा दें।

ओं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं शब्दात्मिके शशिकला भरणार्ध देहे शंभोरूरस्थलनिकेतन नित्यवासे। दारिद्रय दुःख भयहारिणि का त्वदन्या भिक्षाँ प्रदेहि गिरिजे क्षुधिताय मह्याम् क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं ओं।।६।।

शब्द ही है आत्मा जिनका ऐसी शब्द स्वरूपे! चन्द्र कला ही आधे शरीर के आभरण है जिनके, ऐसे शंकर जी के छाती रूप घर में नित्य निवास करने वाली हे देवि आपके अतिरिक्त और कौन है जो कि दरिद्रता, दुःख भय को हरण कर सके मिटा सके हे गिरिजा! मुझ भूखे को भिक्षा दें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ओं ऐ ह्रीं श्रीं क्ली संध्यात्रये सकलभूसुर सेव्यमाने- स्वाहा-स्वधासि पितृदेव गणाहिन्त्री। जायाः सुताः परिजनातिथ-योऽन्नकामाः भिक्षां प्रदेहि गिरिजे क्षुधिताय मह्याम् क्लीं श्रीं ह्रीं ऐ ओं॥७॥

तीन संध्याओं में सभी ब्राह्मण द्वरा सेव्यमान, पितर तथा देवताओं का दुःख विनाश करने वाली (आप) स्वाहा तथा स्वधा हो। पत्नी, पुत्र, सेवकजन तथा अतिथि (ये सब) अन्न के इच्छुक हैं अतः हे गिरिजे-मुझ भूखे को भिक्षा दें।

ओं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सद्भक्त कल्पलतिके भुवनैकवन्द्यभूतेश हृत्कमलमग्न कुचाग्र भृङ्गे। कारुण्य पूर्ण नयने किमुणेक्षसे मां-भिक्षां प्रदेहि गिरिजे क्षुधिताय मह्याम् क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं ओं॥८॥

सच्चे भक्त के लिए कल्पलता सम्पूर्ण विश्व में वंदनीय शंकरजी के ह्वदय कमल में जिनके स्तर के आगे का भाग रूप भौंरा ऐसे रूप वाली आप करूणा से पूर्ण आँखों से क्या मरे को नहीं देखेगी ऐसी गिरिजा मुझ भूखे को भिक्षा दें।

आं ऐ ह्रीं श्रीं क्लीं अम्ब! त्वदीय चरणाम्बुज संश्रयेण ब्रह्मादेयोप्यविकलाश्रिय माश्रयन्ते। तस्मादहं तवनतोस्मि पदारविन्दे भिक्षाँ प्रदेहि गिरजे क्षुधिताय मह्याम् क्लीं श्रीं ह्रीं ओं॥९॥

माँ! आपके चरण कमलों के आश्रय से ब्रह्मादि देवता भी कभी नष्ट न होने वाली लक्ष्मी को पाते हैं। अतः मैं आपके चरण कमलों को प्रणाम करता हूं, हे गिरिजे! मुझ भूखे को भिक्षा का दान दें।

ओं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं एकाग्रमूल निलस्य महेश्वरस्य प्राणेश्वरि प्रणत भक्त जनायशीघ्रम्। कामाक्षी रक्षित जगत त्रितयेअन्न पूर्णे भिक्षां प्रदेहि गिरिजे क्षुधिताय मह्याम् क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं ओं॥१०॥

एकाग्र मूल ही है घर जिसके ऐसे शंकर की आप प्राणेश्वरी हैं जो भक्तजनों के लिए शीघ्र प्रणत होते हैं। हे कामाक्षि अन्नपूर्णा जी! आप तीनों लोकों की रक्षा करने वाली हैं। हे गिरिजे मुझ भूखे को आप भिक्षा दें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ओं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं भक्त्यां पठन्ति गिरिजादशकं प्रभाते मोक्षार्थिनो बहुजनाः प्रथिमात्र कामाः। प्रीतामहेशवनिता हिमशैल कन्या-तेषां ददाति सुतरां मनसेप्तितानि॥११॥

मोक्षार्थी तथा विशेष अन्न चाहने वाले मनुष्य प्रातः उठकर गिरिजा के दस श्लोक की इस स्तुति का भक्तिपूर्वक पाठ करते हैं तो पर्वत की पुत्री, महेश की पत्नी प्रसन्न होकर उनका मनोरथ सदैव पूर्ण करती हैं।

॥ इति अन्नपूर्णा कवचम् ॥

श्री अन्नपूर्णा देवी जी की आरती

बारम्बार प्रणाम मैया बारम्बार प्रणाम -
जो नहीं ध्यावे तुम्हें, अम्बिके कहां उसे विश्राम।
अन्नपूर्णा देवी नाम तिहारो, लेत होत सब काम।
प्रलय युगान्तर और जन्मान्तर कालान्तर तक नाम।
सुर सुरों की रचना करती, कहाँ कृष्ण कहां राम।
चूमहि चरण चतुर चतुरानन, चारू चक्रधर श्याम।
चन्द्र चूड़ चन्द्रानन चाकर, शोभा लखहिं ललाम।
देवि देव! दयनीय दशा में, दया दया तब नाम।
त्राहि-त्राहि शरणागत वत्सल, शरण रूप तव धाम।
श्रीं ह्रीं श्रद्धा श्री ऐं, विद्या क्लीं कमला काम।
काँति भ्राँति मयी काँति, शँतिमय वर देतु निष्काम।

●●●

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री महालक्ष्मी कवचम्

इंद्रउवाच

समस्तकवचानां तु तेजस्वि कवचोत्तमम्
आत्मरक्षणामारोग्यं सत्यं त्वं ब्रूहि गीष्पते॥

श्री गुरुरुवाच

महालक्ष्म्यास्तु कवचं प्रवक्ष्यामि समासतः।
चतुर्दशसु लोकेषु रहस्यं ब्रह्मणोदितम्॥

ब्रह्मोवाच

शिरो मे विष्णुपत्नी च ललाटममृतोद्भवा।
चक्षुषी सुविशालाक्षी श्रवणे सागराम्बुजा॥
घ्राणं पातु वरारोहा जिह्वामाम्नायरूपिणी।
मुखं पातु महालक्ष्मीः कण्ठं वैकुण्ठवासिनी॥
स्कंधौ मे जानकी पातु भुजौ भार्गवनन्दिनी।
बाहू द्वौ द्रविणी पातु करौ हरिवरांगना॥
वक्षः पातु च श्रीर्देवी हृदय हरिसुन्दरी।
कुक्षिं च वैष्णवी पातु नाभिं भुवनमातृका॥
कटिं च पातु वाराही सक्थिनी देवदेवता।
उरू नारायणी पातु जानुनी चन्द्रसोदरी॥
इन्दिरा पातु जंघे मे पादौ भक्तनमस्कृता।
नखान् तेजस्विनी पातु सर्वांगं करुणामयी॥
ब्रह्मणा लोकरक्षार्थं निर्मितं कवचं श्रियः।
ये पठन्ति महात्मानस्ते च धन्या जागत्रये॥
कवचेनावृतांगनां जनानां जयदा सदा।
मातेव सर्वसुखदा भव त्वममरेश्वरी॥
भूयः सिद्धिमवाप्नोति पूर्वोक्तं ब्रह्मणा स्वयम्।
लक्ष्मीर्हरिप्रिया पद्मा एतन्नामत्रयं स्मरन्॥
नामत्रयमिदं जस्वा स याति परमां श्रियम्।
यः पठेत्स च धर्मात्मा सर्वान्कामान् वाप्नुयात्॥

।इति श्रीब्रह्मपुराणे इन्द्रोपदिष्टं महालक्ष्मीकवचं संपूर्णम्॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तंत्रोक्त श्री लक्ष्मी कवचम्

लक्ष्मी मे चाग्रतः पातु कमला पातु पृष्ठतः।
नारायणी शीर्षदेशे सर्वांगे श्रीस्वरूपिणी।।

भावार्थ : लक्ष्मीजी हमारे अग्रभाग की, कमलाजी हमारी पीठ की रक्षा करे। नारायणी हमारे मस्तक की और श्रीस्वरूपिणी देवी हमारे संपूर्ण अंगों की रक्षा करे।

रामपत्नी तु प्रत्यंगे रामेश्वरी सदाऽवतु।
विशालाक्षी योगमाया कौमारी चक्रिणी तथा।।
जयदात्री धनदात्री पाशाक्षमालिनी शुभा।
हरिप्रिया हरिरामा जयंकरी महोदरी।।
कृष्णपरायणा देवी श्रीकृष्णमनमोहिनी।
जयंकरी महारौद्री सिद्धिदात्री शुभंकरी।।
सुखदा मोक्षदा देवी चित्रकूटनिवासिनी।
भयं हरतु भक्तानां भवबन्धं विमुञ्चतु।।

भावार्थ : रामपत्नी और रामेश्वरी हमारे सब अंग-उपांगों की रक्षा करे। वह कौमारी है, चक्रधारिणी है, जय देनेवाली है और पाशाक्षमालिनी है। वह कल्याणी है, हरिप्रिया है, हरिरामा है, जयंकारी है, महादेवी है, कृष्णपरायणा है, श्रीकृष्ण का मन मोहन करनेवाली है, महाभयंकर, सिद्धि देनेवाली है, शुभंकरी, वह सुख तथा मोक्ष की देनेवाली है और जिसके चित्रकूट निवासिनी इत्यादिक अनेक नाम हैं, वह अनपायिनी (अपायरहित) लक्ष्मी देवी हमारे भय दूर करके सदा रक्षा करे।

कवचं तन्महापुण्यं यः पठेद्भक्तिसंयुतः।
त्रिसन्ध्यमेकसन्ध्यं वा मुच्यते सर्वसंकटात्।।

भावार्थ : जो प्राणी भक्तियुक्त होकर नित्य तीन अथवा केवल एक बार ही इस पवित्र लक्ष्मी कवच का पाठ करता है, वह संपूर्ण संकटों से मुक्त हो जाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कवचस्यास्य पठनं धनपुत्रविवर्द्धनम्।
भीतिर्विनाशनं चैव त्रिषु लोकेषु कीर्तितम्।।

भावार्थ : इस कवच का पाठ करने से पुत्र और धनादि की वृद्धि होती है, भय दूर हो जाते हैं। इसका माहात्म्य तीनों लोकों में विख्यात है।

भूर्जपत्रे समालिख्य रोचनाकुंकुमेन तु।
धारणाद्गलदेशे च सर्व्वसिद्धिर्भविष्यति।।

भावार्थ : भोजपत्र पर रोचन और कुंकुम से इसको लिखकर गले में धारण करने से संपूर्ण कामना सिद्ध होती है।

अपुत्रो लभते पुत्रं धनार्थी लभते धनम्।
मोक्षार्थी मोक्षमाप्नोति कवचस्यास्य प्रसादतः।।

भावार्थ : इस कवच से प्रभाव से पुत्र, धन, मोक्ष की प्राप्ति होती है।

गर्भिणी लभते पुत्रं वंध्या च गर्भिणी भवेत्।
धारयेद्यति कण्ठे च अथवा वामबाहुके।।

भावार्थ : यदि स्त्रियां गले अथवा बाई भुजा में इस कवच को नियम से धारण करें, तो गर्भवती स्त्री के उत्तम पुत्र होता है और बांझ स्त्री भी गर्भवती होती है।

यः पठेन्नियतो भक्त्या स एव विष्णुवद्भवेत्।
मृत्युव्याधिभ्यं तस्य नासित किञ्चिन्महीतले।।

भावार्थ : जो प्राणी नियमित और भक्तिसहित इस कवच का पाठ करता है, वह विष्णु की समानता को प्राप्त होता है। संसार में उसे मृत्यु अथवा व्याधि का भय नहीं रहता।

पठेद्वा पाठयेद्वापि शृणुयाच्छ्रावयेदपि।
सर्वपापविमुक्तस्स लभते परमां गतिम्।।

भावार्थ : जो प्राणी इस कवच का पाठ करता या पाठ करने को प्रेरित करता है, स्वयं सुनता अथवा दूसरे का सुनाता है, वह मोक्ष को प्राप्त करता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

संकटे विपदे घोरे तथा च गहने वने।
राजद्वारे च नौकायां तथा च रणमध्यतः।।
पठनाद्धारणादस्य जयमाप्नोति निश्चितम्।।

भावार्थ : संकट, विपदा, घने जंगल, राजद्वार, नौका मार्ग, रण आदि स्थानों में इस कवच का पाठ करने से अथवा धारण करने से जय की प्राप्ति होती है।

अपुत्रा च तथा वन्ध्या त्रिपक्षं शृणुयाद्यदि।
सुपुत्रं लभते सा तु दीर्घायुष्कं यशस्विनम्।।

भावार्थ : बांझ स्त्री पैंतालीस दिन तक यदि इस कवच को श्रवण करे तो दीर्घायु, महायशवान् सुपुत्र लाभ प्राप्त कर सकती है, इसमें संदेह नहीं है।

शृणुयाद्यः शुद्धबुद्धया द्वौ मासौ विप्रवक्त्रतः।
सर्वान्कामानवाप्नोति सर्वबन्धाद्विमुच्यते।।

भावार्थ : जो प्राणी विशुद्ध मन से दो महीने तक ब्राह्मण के मुख से इस कवच को श्रवण करता है, उसकी संपूर्ण कामना सिद्ध होती है और संसारबंधनों से छूट जाता है।

मृतवत्सा जीववत्सा त्रिमासं श्रवणं यदि।
रोगी रोगाद्विमुच्येत पठनान्मासमध्यतः।।

भावार्थ : जिस स्त्री के पुत्र उत्पन्न होकर जीवित नहीं रहते, वह तीन महीने तक इस कवच को भक्तिपूर्वक सुने तो उसके पुत्र जीने लगते हैं। रोगी भी पाठ करने से एक मास में ही रोगमुक्त हो जाता है।

लिखित्वा भूर्जपत्रे च अथवा ताडपत्रके।
स्थापयेन्नियतं गेहे नाग्निचौरभयं क्वचित्।।

भावार्थ : जो प्राणी भोजपत्र अथवा ताड़पत्र पर इस कवच को लिखकर गृह में स्थापित करता है, उसे अग्नि या चोर आदि का भय नहीं होता।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शृणुयाद्धारयेद्वापि पठेद्वा पाठयेदपि।
यः पुमान्सततं तस्मिन्प्रसन्नाः सर्वदेवताः।।

भावार्थ : जो प्राणी प्रतिदिन इस कवच को सुनता है, पाठ करता है, दूसरे को अध्ययन हेतु प्रेरित करता है और जो इसको धारण करता है, उस पर देवगण सदा संतुष्ट रहते हैं।

बहुना किमिहोक्तेन सर्व्वजीवेश्वरेश्वरी,
आद्याशक्तिः सदालक्ष्मीर्भक्तानुग्रहकारिणी।
धारके पाठके चैव निश्चला निवसेद् ध्रुवम्।।

भावार्थ : अधिक क्या कहें, जो प्राणी इस कवच का पाठ करता है, या इसे धारण करता है, उस पर लक्ष्मीजी की सदैव कृपा बनी रहती है।

इति तन्त्रोक्तं लक्ष्मीकवचं संपूर्णम्

श्री लक्ष्मीकवच प्रारम्भ

ईश्वरउवाच

अथ वक्ष्ये महेशानि कवचं सर्वकामदम्।
यस्य विज्ञानमात्रेण भवेत्साक्षात्सदाशिवः।।

भावार्थ : ईश्वर बोले कि हे देवी! अब सर्वकामनापूरक लक्ष्मी कवच कहता हूं, जिसके जानने से शिवसायुज्य की प्राप्ति होती है।

नार्चनं तस्य देवेशि मन्त्रमात्रं जपेन्नरः।
स भवेत्पार्व्वतीपुत्रः सर्वशास्त्रेषु पारगः।।

भावार्थ : हे देवी! उसका जाप करने मात्र से ही जापक पार्वती पुत्र के समान और सर्वशास्त्र में पारंगत हो जाता है।

विद्यार्थिना सदा सेव्या विशेषे विष्णुवल्लभा।।

भावार्थ : जो विद्या की अभिलाषा करता है, उसे यत्नपूर्वक विष्णुप्रिया लक्ष्मीजी की आराधना करनी चाहिए।

अस्याश्चतुरक्षरिविष्णुवनितारूपायाः कवचस्य श्री भगवान् शिव ऋषिरनुष्टुप्छन्दोवाग्भवी देवता वाग्भवं बीजं, लज्जाशक्ती,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रमा कीलकं कामबीजात्मकं कवचं मम सुपाण्डित्यकवित्व-सर्वसिद्धिसमृद्धये जपे विनियोगः॥

भावार्थ : इस चतुरक्षरी विष्णुवनिता कवच के ऋषि भगवान् शिव, अनुष्टुप् छन्द, देवता वाग्भवी, ऐं बीज, लज्जा शक्ति, रमा कीलक है। इस कवच का कामबीजात्मक, सुपाण्डित्य, कवित्व और सर्वसिद्धिसमृद्धि के निमित्त विनियोग किया जाता है।

ऐङ्कारी मस्तके पातु वाग्भवी सर्व्वसिद्धिदा।
ह्रीं पातु चक्षुषोर्मध्ये चक्षुर्युग्मे च शांकरी॥

भावार्थ : ऐंकारी हमारे मस्तक की रक्षा करे, संपूर्ण सिद्धि को देनेवाली वाग्भवी ही हमारे दोनों नेत्रों के मध्य की और शांकरी हमारे दोनों नेत्रों की रक्षा करे।

जिह्वायां मुखवृत्ते च कर्णयोर्गण्डयोर्नसि,
ओष्ठाधरे दन्तपंक्तौ तालुमूले हनौ पुनः।
पातु मां विष्णुवनिता लक्ष्मीः श्रीवर्णरूपिणी॥

भावार्थ : वर्णरूपिणी लक्ष्मी हमारी जिह्वा, मुखमंडल कानों, नासिका, ओष्ठ, अधर, दन्तपंक्ति, तालुमूल (तालुआ) और ठोड़ी की रक्षा करे।

कर्णयुग्मे भुजद्वन्द्वे स्तनद्वन्द्वे च पार्व्वती,
हृदये मणिबन्धे च ग्रीवायां पार्श्वयोः पुनः।
सर्व्वाङ्गे पातु कामेशी महादेवी समुन्नतितिः॥

भावार्थ : पार्वतीनामक लक्ष्मी हमारे कानों की, भुजाओं, स्तनों, हृदय, मणिबन्ध, गरदन और पार्श्व की रक्षा करे। कामेशी महादेवी और समुन्नति हमारे संपूर्ण अंगों की रक्षा करे।

व्युष्टिः पातु महामाया उत्कृष्टि सर्व्वदावतु।
सन्धि पातु सदा देवी सर्व्वत्र शम्भुवल्लभा॥

भावार्थ : व्युष्टि, महामाया और उत्कृष्टि सदा हमारी रक्षा करे। देवी शंभु वल्लभा सर्वत्र सदा हमारे सन्धि की रक्षा करे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वाग्मवी सर्व्वदा पातु पातु मां हरिगेहिनी।
रमा पातु सदा देवी पातु माया स्वराट् स्वयम्।।

भावार्थःसरस्वती, हरिगेहिनी, रमा व माया सदा हमारी रक्षा करे।

सर्वांगे पातु मां लक्ष्मीर्विष्णुमाया सुरेश्वरी।
विजया पातु भवने जया पातु सदा मम।।

भावार्थ : विष्णुमाया लक्ष्मी हमारें संपूर्ण अंगों की रक्षा करे, विजया हमारे घर में सदा रक्षा करे और जया हमारी रक्षा करे।

शिवदूती सदा पातु सुंदरी पातु सर्व्वदा।
भैरवी पातु सर्व्वत्र भैरुण्डा सर्व्वदाऽवतु।।

भावार्थ : शिवदूती, सुन्दरी, भैरवी और भैरुण्डा सभी स्थानों में सदा हमारी रक्षा करे।

त्वरिता पातु मां नित्यमुग्रतारा सदाऽवतु।
पातु मां कालिका नित्यं कालरात्रिः सदाऽवतु।।

भावार्थ : त्वरिता, उग्रतारा, कालिका और कालरात्रि प्रतिदिन सदा हमारी रक्षा करे।

नवदुर्गा सदा पातु कामाख्या सर्व्वदावतु
योगिन्यः सर्व्वदा पातु मुद्राः पातु सदा मम।।

भावार्थ : नवदुर्गा, कामाख्या और योगिनीगण व मुद्रासमूह सदा हमारी रक्षा करे।

मातरः पातु देव्यश्च चक्रस्था योगिनीगणाः।
सर्व्वत्र सर्वकार्येषु सर्व्वकर्म्मसु सर्व्वदा।।
पातु मां देवदेवी च लक्ष्मीः सर्व्वसमृद्धिदा।।

भावार्थ : मातृदेवीगण, चक्र की योगिनीगण और संपूर्ण समृद्धि देनेवाली देव-देवी लक्ष्मी सदा हमारी रक्षा करे।

इति ते कथितं दिव्यं कवचं सर्वसिद्धये।
यत्र तत्र न वक्तव्यं यदीच्छेदात्मनो हितम्।।

भावार्थ : मैंने तुम्हे सर्वसिद्धिदाता इस अत्युत्तम दिव्य लक्ष्मी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कवच को सुनाया। जो इससे लाभ उठाना चाहते हैं, उन्हें यह हर किसी को नहीं बताना चाहिए।

शठाय भक्तिहीनाय निन्दकाय महेश्वरि।
न्यूनांगे अतिरिक्तांगे दर्शयेन्न कदाचन॥

भावार्थ : हे महेश्वरी! जो प्राणी भक्तिविहीन तथा निन्दक हैं और जो स्थूल अंगवाला हो, उसके निकट प्राणान्त का अवसर आने का भी यह कवच उजागर नहीं करना चाहिए।

न स्तवं दर्शयेद्दिव्यं संदर्श्य शिवहा भवेत्,
कुलीनाय महोच्छ्राय दुर्गाभक्तिपराय च
वैष्णवाय विशुद्धाय दद्यात्कवचमुत्तमम्॥

भावार्थ : दुरात्मा प्राणी के निकट कभी इस स्तोत्र को प्रकट न करें, जो प्रकट करता है वह शिवहत्या का दोषी होता है। जो प्राणी कुलीन, दुर्गाभक्त, विष्णुभक्त और विशुद्धचित्त है, उसको ही यह अत्युत्तम दिव्य कवच कहना चाहिए।

निज शिष्याय शान्ताय धनिने ज्ञानिने तथा।
दद्यात्कवचमित्युक्तं सर्व्वतन्त्रसमन्वितम्॥

भावार्थ : भक्त, ज्ञानी को ही यह कवच प्रदान किया जाना चाहिए।

विलिख्य कवचं दिव्यं स्वयम्भुकुसुमैः शुभैः।
स्वशुक्रैः परशुक्रैश्च नानागन्धसमन्वितैः॥
गोरोचनाकुंकुमेन रक्तचन्दनकेन वा।
सुतिथौ शुभयोगे वा श्रवणायां रवेर्दिने॥
अश्विन्यांकृत्तिकायांवाफल्गुन्यांवामघासु च।
पूर्व्वभाद्रपदायोगे स्वात्यां मंगलवासरे॥
विलिखेत्प्रपठेत्स्तोत्रं शुभयोगे सुरालये।
आयुष्मत्प्रीतियोगे च ब्रह्मयोगे विशेषतः॥
इन्द्रयोगे शुभयोगे शुक्रयोगे तथैव च।
कौलवे बालवे चैव वणिजे चैव सत्तमः॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भावार्थ : शुभतिथि, शुभयोग में, श्रवण नक्षत्र में, रविवार को अश्विनी, कृत्तिका, फाल्गुनी, मघा, पूर्वभाद्रपद, स्वाति नक्षत्र में, मंगलवार को विशेषकर ब्रह्मयोग में, इन्द्रयोग में शुभयोग में, शुक्र योग में, कौलव, बालव और वणिजकरण योग में स्वयम्भू, कुसुम, गोरोचन, कुंकुम, लाल चंदन अथवा अत्युत्तम गन्ध द्रव्य से इस दिव्य कवच को लिखकर इसकी पूजा करने से दीर्घायु और श्रीवृद्धि होती है।

शून्यागारे श्मशांने वा विजने च विशेषतः।
कुमारीं पूजयत्विादौ यजेद्दवीं सनातनीम्।।

भावार्थ : सूने घर, श्मशान अथवा एकांत स्थान में कुमारी पूजा करके, फिर सनातनी देवी लक्ष्मी की पूजा करनी चाहिए।

मत्स्यमांसै शाकसूपैः पूजयेत्परदेवताम्,
घृताद्यैः सोपकरणैः पूपसूपैर्व्विशेषतः।
ब्राह्मणान्भोजयित्वादौ प्रीणयेत्परमेश्वरीम्।।

भावार्थ : मत्स्य, मांस, दाल, शाक, पिट्ठी, घृत आदि द्रव्यों से लक्ष्मी की आराधना करनी चाहिए। प्रथमतः ब्राह्मणों को भली-भांति भोजन कराकर, फिर देवी की प्रसन्नता के लिए साधना करें।

बहुना किपिहोक्तेन कृते त्वेवं दिनत्रयम्।
तदाधरेन्महारक्षां शंकरेणाभिभाषितम्।।

भावार्थ : अधिक और क्या कहा जाए? जो कोई तीन दिन इस प्रकार लक्ष्मी की आराधना करता है, वह किसी भी प्रकार की विपत्ति में नहीं पड़ता, तथा वह संपूर्ण आपदाओं से सुरक्षित रहता है। शंकर द्वारा कथित यह वाक्य कभी विफल होने वाला नहीं है।

मारणद्वेषणादीनि लभते नात्र संशयः।
स भवेत्पार्व्वतीपुत्रः सर्व्वशास्त्रविशारदः।।

भावार्थ : जो प्राणी भक्ति सहित लक्ष्मी की पूजा करके इस दिव्य कवच का पाठ करता है, उसे काम्यकर्म प्रभावित नहीं करते तथा वह विद्वान होता है।

गुरुर्देवो हरः साक्षात्पत्नी तस्य हरप्रिया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अभेदेन भजेद्यस्तु तस्य सिद्धिरदूरतः॥

भावार्थ : जो प्राणी एकान्तचित्त हो लक्ष्मी देवी की आराधना करता है वह साक्षात् देवदेव शिवजी की सायुज्यमुक्ति को प्राप्त करता है, उसकी स्त्री हरिप्रिया के समान होती है और सिद्धि शीघ्र ही प्राप्त हो जाती है।

सर्वदेवमयीं देवीं सर्वमन्त्रमयीं तथा।
सुभक्त्या पूजयेद्यस्तु स भवेत्कमलाप्रियः॥

भावार्थ : जो प्राणी भक्तिसहित सर्वदेवमयी और सर्वमन्त्रमयी लक्ष्मी का पूजन करता है, उस पर देवी की कृपा होती है।

रक्तपुष्पैस्तथा गन्धैर्वस्त्रालंकरणैस्तथा।
भक्त्या यः पूजयेद्देवीं लभते परमां गतिम्॥

भावार्थ : जो कोई लाल फूल, लाल चन्दन, वस्त्र और अलंकारादि से लक्ष्मी का पूजन करता है, वह अन्तकाल में मोक्ष पाता है।

नारी वा पुरुषो वापि यः पठेत्कवचं शुभम्।
मन्त्रसिद्धिः कार्यसिद्धिर्लभते नात्र संशयः॥

भावार्थ : जो स्त्री-पुरुष इस कवच का पाठ करते हैं, निःसंदेह मंत्र सिद्धि और कार्य-सिद्धि प्राप्त करते हैं।

पठति य इह मर्त्यो नित्यमार्द्रान्तरात्मा।
जपफलमनुमेयं लप्स्यते यद्विधेयम्॥
स भवति पदमुच्चैः सम्पदां पादनम्रः।
क्षितिपमुकुटलक्ष्मीर्लक्षणानां चिराय॥

भावार्थ : जो कोई नित्य इस लक्ष्मी कवच का पाठ करता है, वह उत्तरोत्तर उन्नति करता है।

इति श्रीविश्वसारतन्त्रोक्तं लक्ष्मी कवचं संपूर्णम

●●●

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री नृसिंह कवचम्

विनियोग

अस्य श्री नृसिंह कवच मंत्रस्य प्रह्लाद ऋषिः, नृसिंहो देवता, अनुष्टुप्छन्दः, सर्वव्यापीस्तम्भभवाय इति बीजम्, श्रीः शक्तिः, गुह्यरूपधृग् इति कीलकम्, श्रीनृसिंह प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः॥

॥करन्यास॥

ॐ योगीहृत्पद्म निवासाय अंगुष्ठाभ्यां नमः॥
ॐ नृसिंहाय तर्जनीभ्यां नमः॥
ॐ स्वप्रकाशाय मध्यमाभ्यां नमः॥
ॐ सूर्यसोमाग्निलोचनाय अनामिका नमः॥
ॐ दिव्य नखास्त्राय कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥
ॐ विद्युत् जिह्वाय करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः॥

॥हृदयादिन्यास॥

ॐ योगीहृत्पद्म निवासाय हृदयाय नमः॥
ॐ नृसिंहाय शिरसे स्वाहा॥
ॐ स्व प्रकाशाय शिखायैवषट्॥
ॐ सोम सूर्याग्नि लोचनाय कवचाय हुम्॥
ॐ दिव्य नखास्त्राय नेत्राभ्यां वषट्॥
ॐ विद्युत जिह्वाय अस्त्राय फट्॥

॥अथ ध्यानम्॥

कर्पूर धाम धवलं कटकाङ्गदादि,
भूषं त्रिनेत्र शशिशेखर मण्डितास्यामं॥
वामाङ् संश्रित रमा नयनाभिरामं
चक्राब्ज शंखसगदनं नृहरिं नमामि॥१॥

अर्थ–जो नरहरि कपूर की राशि के समान श्वेतवर्ण है, कंकण तथा केयूर आदि आभूषणों से जो शोभित हैं, नेत्रों को सुन्दर दिखाई

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देने वाली लक्ष्मी बायें अंग में स्थित है, जो चक्र कमल शंख तथा गदा से युक्त हैं मैं प्रणाम करता हूं।।१।।

ध्यात्वा नृसिंह देवेशं हेमसिंहासन स्थितम्।
विततास्यं त्रिनयनं शरदिन्दु समप्रभम्।।२।।

अर्थ- सोने के सिंहासन पर स्थित विकराल जिनका मुख है तीन नेत्र शरद्कालीन चन्द्रमा के समान जो शुभ्र है।।२।।

लक्ष्म्या लिङ्गितं वाम भागं सिद्धैरुपासितम्।
चुतुर्भुजं कोमलांगं मणिकुण्डल भूषितम्।।३।।

अर्थ- लक्ष्मी वांये भाग में सुशोभित है सिद्धों के द्वारा जिनकी उपासना हो रही है चारभुजा कोमल शरीर वाले मणि कुण्डल से शोभित हैं।।३।।

हारोपशोभितोरस्कं रत्नकेयूर मण्डितम्।
तप्तकांचन संकाशं पीत निर्मल वाससम्।।४।।

अर्थ- वक्षस्थल पर जिनके हार शोभा पा रहा है रत्नों से युक्त आभूषणों से भुजा शोभित हो रही है तपे हुए सोने के समान सुन्दर पीताम्बर शरीर पर धारण किये हैं।।४।।

इन्द्रादि सुरमौलीस्थवरमाणिक्य दीप्तिभिः।
विराजित पदद्वन्द शंख चक्रादि हेतुभिः।।५।।

अर्थ- प्रणाम करने योग्य इन्द्र आदि देवताओं के मुकुटों में जड़ित श्रेष्ठ मणियों की क्रान्ति से शंख चक्र आदि शास्त्र से चिन्हित दोनों चरण शोभायमान हैं।।५।।

गुरुत्मता च विनयात्स्तूयमानं मुदान्वितम्।
स्वहृत्कमल मध्यस्थं कृत्वा तु कवचं पठेत्।।६।।

अर्थ-नम्र हो गरुड़ जी जिनकी स्तुति कर रहे हैं, ऐसे आनन्द के सागर श्री लक्ष्मी नृसिंह का (साधक) ध्यानकर उनको अपने हृदय कमल में स्थापित करके इस नृसिंह कवच का पाठ करें।।६।।

।। इति ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री राधाकवचम्

पार्वत्युवाच

कैलासवासिन् भगवन् भक्तानुग्रहकारक।
राधिकाकवचं पुण्यं कथयस्व मम प्रभो।।
यद्यस्ति करुणा नाथ त्राहि मां दुःखतो भयात्।
त्वमेव शरणं नाथ शूलपाणे पिनाकधृक्।।

शिवउवाच

श्रृणुष्व गिरिजे तुभ्यं कवचं पूर्वसूचितम्।
सर्वरक्षाकरं पुण्यं सर्वहत्याहरं परम्।।
हरिभक्तिप्रदं साक्षाद्भुक्तिमुक्तिप्रसाधनम्।
त्रैलोक्याकर्षणं देवि हरिसान्निध्यकारकम्।।
सर्वत्र जयदं देवि सर्वशत्रुभयावहम्।
सर्वेषां चैव भूतानां मनोवृत्तिहरं परम्।।
चतुर्धा मुक्तिजनकं सदानंदकरं परम्।
राजसूयाश्वमेधानां यज्ञानां फलदायकम्।।
इदं कवचमज्ञात्वा राधामंत्रं च यो जपेत्।
स नाप्नोति फलं तस्य वेध्नास्तस्य पदे पदे।।
ऋषिरस्य महादेवोऽनुष्टुप् छंदश्च कीर्तितम्।
राधाऽस्य देवता प्रोक्ता रां बीजं कीलकं स्मृतम्।।
धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः।
श्रीराधा मे शिरः पातु ललाटं राधिका तथा।।
श्रीमती नेत्रयुगलं कर्णौ गोपेंद्रनंदिनी।
हरिप्रया नासिकां च भ्रूयुगं शशिशोभना।।
ओष्ठं पातु कृपादेवी अधरं गोपिका तथा।
वृषभानुसुता दन्तांश्चिबुकं गोपनंदिनी।।
चंद्रावली पातु गंडं जिह्वां कृष्णप्रिया तथा।
कंठं पातु हरिप्राणा हृदयं विजया तथा।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बाहू द्वौ चंद्रवदना उदरं सुबलस्वसा।
कोटियोगान्विता पातु पादौ सोभद्रिका तथा।।
नखांश्चंद्रमुखी पातु गुल्फौ गोपालवल्लभा।
नखान् विधुमुखी देवी गोपी पादतलं तथा।।
शुभप्रदा पातु पृष्ठं कुक्षौ श्रीकांतवल्लभा।
जानुदेशं जया पातु हरिणी पातु सर्वतः।।
वाक्यं वाणी सदा पातु धनागारं धनेश्वरी।
पूर्वां दिशं कृष्णरता कृष्णप्राणा च पश्चिमाम्।।
उत्तरां हरिता पातु दक्षिणां वृषभानुजा।
चंद्रावली नैशमेव दिवा क्ष्वेडितमेखला।।
सौभाग्यदा मध्य देने सायाह्ने कामरूपिणी।
रौद्रो प्रातः पातु मां हि गोपिनी राजनीक्षये।।
हेतुदा संगवे पातु केतुमाला दिवार्धके।
शेषाऽपराह्नसमवे शमिता सर्वसंधिषु।।
योगिनी भोगसमये रतौ रतिप्रदा सदा।
कामेशी कौतुके नित्यं योगे रत्नावली मम।।
सर्वदा सर्वकार्ये राधिका कृष्णमानसा।
इत्येतत्कथितं देवि कवचं परमाद्भुतम्।।
सर्वैरक्षाकरं नाम महारक्षाकरं परम्।
प्रातर्मध्याह्नसमये सायाह्ने प्रपठेद्यदि।।
सर्वार्थसिद्धिस्तस्य स्याद्यन्मनसि वर्तते।
राजद्वारे सभायां च संग्रामे शत्रुसंकटे।।
प्राणार्थनाशसमये यः पठेत्प्रयतो नरः।
तस्य सिद्धिर्भवेद्देवि न भयं विद्यते कचित्।।
आराधिता राधिका च तेन सत्यं न संशयः।
गंगास्नाना द्धरेर्नामग्रहणाद्यत्फलं लभेत्।।
तत्फलं तस्य भवति यः पठेत्प्रयतः शुचिः।
हरिद्रारोचनाचंद्रमंडितं हरिचंदनम्।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कृत्वा लिखित्वा भूर्जे च धारयेन्मस्तके भुजे।
कंठे वा देवदेवेशि स हरिर्नात्र संशयः।।
कवचस्य प्रसादेन ब्रह्मा सृष्टिं स्थितिं हरिः।
संहारं चाहं नियतं करोमि कुरुते तथा।
वैष्णवाय विशुद्धाय विरागगुणशालिने।
दद्यात्कवचमव्यग्रमन्यथा नाशमाप्नुयात्।।
।।इति श्रीनारदपंचरात्रे ज्ञानामृतसारे राधाकवचं संपूर्णम्।।

श्री धनदा कवचम्

देव्युवाच

धनदा या महाविद्या कथिता न प्रकाशिता।
इदानीं श्रोतुमिच्छामि कवचं पूर्वसूचितम्।।

शिवउवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं मंत्रविग्रहम्।
सारात्सारतरं देवि कवचं मन्मुखोदितम्।।
धनदा कवचस्यास्य कुबेर ऋषिरीरितः।
पक्तिंश्छन्दो देवता च धनदा सिद्धिदा सदा।।
धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः।
धं बीजं मे शिरः पातु ह्रीं बीजं मे ललाटकम्।।
श्री बीजं मे मुख पातु रकारं हृदि मेऽवतु।
तिकारं पातु जठरं प्रिकारं पृष्ठतोऽवतु।।
येकारं जंघयोर्युग्मे स्वाकारं पादयोर्युगे।
शीर्षादिपादपर्यन्तं हाकारं सर्वतोऽवतु।।
इत्येतत्कथितं कान्ते कवचं सर्वसिद्धिदम्।
गुरुभ्यर्च्य विधिवत् कवचं प्रपठेद्यदि।।
शतवर्षं सहस्राणां पूजायाः फलमाप्नुयात्।
गुरुपूजां विना देवि नहि सिद्धिः प्रजायते।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरुपूजात्परो भूत्वा कवचं प्रपठेत्ततः।
सर्वसिद्धियुतो भूत्वा विचरेद् भैरवो यथा।।
प्रातःकाले पठेद्यस्तु मंत्रजापपुरः सरम्।
सोऽभीष्टफलमाप्नोति सत्यं सत्यं न संशयः।।
पूजाकाले पठेद्यस्तु देवीं ध्यात्वा हृदम्बुजे।
षण्मासाभ्यन्तरे सिद्धिर्नात्र कार्या विचारणा।।
सायंकाले पठेद्यस्तु स शिवो नात्र संशयः।
भूर्जे विलिख्य गुटिकां स्वर्णस्थां धारयेद्यदि।।
पुरुषो दक्षिणे बाहौ योषिद्वामभुजे तथा।
सर्वसिद्धियुती भूत्वा धनवान् पुत्रवान् भवेत्।।
इदं कवचम ज्ञात्वा यो जपेद्धनदां शुभे।
शस्त्रघातम वाप्नोति सोऽचिरान्मृत्युमाप्नुयात्।।
कवचेनावृतो नित्यं यो हि यत्रैव गच्छति।
तत्रैव स महादेवि सम्पूज्यो नात्र संशयः।।

इति धनदा कवचं सम्पूर्णम्

रुद्रयामलोक्तः श्रीबटुक-भैरव-ब्रह्म कवचराजः

भगवती पार्वती द्वारा हठपूर्वक 'भैरव-कवच' के पूछने पर भगवान् शंकर ने कृपा करके जो 'बटुकेश्वर ब्रह्मकवच' बतालाया है, वह इस प्रकार है-

अथ विनियोग-(अस्य श्रीबटुकभैरवकवचराजस्य भैरवऋषि-रनुष्टुपछन्दः श्री बटुकभैरवो देवता मम बटुकभैरव प्रसाद सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।)

(इतना कहकर विनियोगार्थ जल छोड़ें तथा नीचे लिखे श्लोकों को बोलते हुए उन-उन सूचित स्थानों पर तत्त्वमुद्रा से स्पर्श करते हुए न्यास करें अथवा केवल भावना-पूर्वक पाठ करें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ पातु शिरसि नित्यं पातु ह्रीं कण्ठदेशके।
बटुकाय पातु नाभौ चापदुद्धारणाय च॥१॥
कुरुद्वयं लिङ्गमूले त्वाधारे बटुकाय च।
सर्वदा पातु ह्रीं बीजं बाह्वोर्युगलमेव च॥२॥
षडङ्गसहितो देवो नित्यं रक्षतु भैरवः।
ॐ ह्रीं बटुकाय सततं सर्वाङ्ग मम सर्वदा॥३॥
ॐ ह्रीं पादौ महाकालः पातु वीरासनेहृदि।
ॐ ह्रीं कालः शिरः पातु कण्ठदेशे तु भैरवः॥४॥
गणराट् पातु जिह्वायामष्टभिः शक्तिभिः सह।
दण्डपाणिर्गुह्यमूले भैरवी-सहितस्तथा॥५॥
विश्वनाथः सदा पातु सर्वाङ्गं मम सर्वदा।
अन्नपूर्णा सदा पातु चांसौ रक्षतु चण्डिका॥६॥
असिताङ्ग शिरः पातु ललाटं रुरु भैरवः।
चण्डभैरवः पातु वक्त्रं कण्ठं श्रीक्रोध भैरवः॥७॥
उन्मत्तभैरवः पातु हृदयं मम सर्वदा।
नाभिदेशे कपाली च लिङ्गे भीषण भैरवः॥८॥
संहारभैरवः पातु मूलाधारं च सर्वदा।
बाहुयुग्मं सदा पातु भैरवो मम केवलम्॥९॥
हंसबीजं पातु हृदि सोऽहं रक्षतु पादयोः।
प्राणापानौ समानं च उदानं व्यानमेव च॥१०॥
रक्षन्तु द्वारमूले तु दशदिक्षु समन्ततः।
प्रणवः पातु सर्वाङ्गं लज्जाबीजं महाभये॥११॥

इति श्रीब्रह्मकवचं भैरवस्य प्रकीर्तितम्।

भैरव-तन्त्रोक्तं श्रीबटुक-भैरवःकवचम्

अस्य श्री बटुक-भैरव--कवचस्य आनन्दभैरव ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः श्री बटुकभैरवोदेवता बं बीजं ह्रीं शक्तिं ॐ बटुकायेति कीलकं ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ॐ सहस्रारे महाचक्रे कर्पूरधवले गुरुः।
पातु मां बटुको देवो भैरवः सर्वकर्मसु॥१॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूर्वस्यामसिताङ्गो मां दिशि रक्षतु सर्वदा।
आग्नेय्यां च रुरुः पातु दक्षिणे चण्डभैरवः॥२॥
नैर्ऋत्यां क्रोधनः पातु उन्मत्तः पातु पश्चिमे।
वायव्यां मां कपाली च नित्यं पायात् सुरेश्वरः॥३॥
भीषणो भैरवः पातु उत्तरस्यां तु सर्वदा।
संहारभैरवः पायादीशान्यां च महेश्वरः॥४॥
ऊर्ध्वं पातु विधाता च पाताले नन्दको विभु।
सद्योजातस्तु मां पायात् सर्वतो देवसेवितः॥५॥
वामदेवो वनान्ते च वनेऽघोरस्तथाऽवतु।
जले तत्पुरुषः पातु स्थले ईशान एव च॥६॥
डाकिनीपुत्रकः पातु पुत्रान् मे सर्वतः प्रभुः।
हाकिनीपुत्रकः पातु दारांस्तु लाकिनी सुतः॥७॥
पातु शाकिनिकापुत्रः सैन्यं वै कालभैरवः।
मालिनीपुत्रकः पातु पशूनश्वान् गंजास्तथा॥८॥
महाकालेऽवतु क्षेत्रं श्रियं मे सर्वतो गिरा।
वाद्यं वाद्यप्रियः पातु भैरवो नित्यसम्पदा॥९॥
नमो भैरवदेवाय सर्वभूताय वै नमः।
नमस्त्रै लोक्यनाथाय नाथनाथाय वै नमः॥१०॥

ऐश्वर्यदायकं श्रीबटुक-भैरव-कवचम्

अस्य श्रीबटुक-भैरव-कवचस्य शिवब्रह्मऋषिरनुष्टुप् छन्दः श्रीबटुकभैरवो देवता ममैश्वर्यस्याभिष्टद्धयर्थं श्रीबटुकभैरवतः प्रसादसिद्धये जपे विनियोगः।

ध्यानम्

दिग्वासरां कमलपत्रविशालनेत्रं, भस्माङ्गरागमभयं प्रभुमादिदेवम्।
ध्यायामि तं बटुकनाथमहर्निशं मे, सर्वार्थसिद्धिमतुलां कृपया दिशन्तम्।

कवच-पाठ- शिरो मे भैरवः पातु, भालं पुर-निषूदनः।
दृशौ पातु त्रिनेत्री मे, श्रवणं नीलकण्ठकः॥१॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दिग्वासा मे पातु कण्ठं, नासिकाभगकन्यभाक्।
औष्ठौ त्रिपुरधाती मे, जिह्वां पातु कपालधृक॥२॥

दन्तान् पातु क्रतुध्वंसी, चिबुकं भूतवासकः।
कपाली पातु मे ग्रीवां, स्कन्धौ पातु गजान्तकः॥३॥

भुजौ मे पातु कौमारो, हृदयं क्षेत्र-पालकः।
अभीरुर्मे स्तनौ पातु, वक्षः पातु महेश्वरः॥४॥

कुक्षौ मे पातु संहर्त्ता, नाभिं मे षण्मुखप्रियः।
भूतनाथः कटिं पातु, गुह्यं पातु जटाधरः॥५॥

ऊरू पातु वृषारूढो, जानुनी भूतभावनः।
शमशानवासी मे पातु, पातु सर्वाङ्गमीश्वरः॥६॥

आरती श्री भैरवजी की

जय भैरव देवा, प्रभु जय भैरव देवा।
जय काली और गौरी देवी कृत सेवा। जय............
तुम्हीं पाप उद्धारक दुख सिन्धु ताकर।
भक्तों के सुख कारक दीप बसू मारक। जय............
वाहन श्वान विराजत कर त्रिशूलधारी।
महिमा अमित तुम्हारी जय जय भय हारी। जय............
तुम बिन देवा पूजा सफल नहीं होवे।
चतुर्वर्तिका दीपक दर्शक दुःख खोवे। जय............
तुल बटुक दधी मिश्रित मास बली तेरा।
कृपा करो भैरव करिये नहीं देरी। जय............
पांव घुंघरू बाजत डमरू डम गावत।
बटुकनाथ वनि बालक जनमन हर्षावत। जय............
बटुक नाथ की आरती जो कोई जन गावे।
कहे धरणीधर सौ नर मनवांछित फल पावे। जय............

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री सुदर्शन कवचम्

अस्य श्रीसुदर्शनकवचस्तोत्रमहामंत्रस्यान्तर्यामी भगवानन्नारायण ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः। श्रीसुदर्शननारसिंहे देवता। सहस्रार इति वीजम्ः। सुदर्शनशक्तिः। चक्रादि कीलकम्। श्रीसुदर्शननृसिंहप्रीतिपूर्वक मम सर्वारिष्ट-निवृत्तिपूर्वकं सुदर्शन कवचधारणे विनियोगः॥

अथ करन्यासः

ॐ सं अचक्राय स्वाहा अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ हं विचक्रायस्वाहा तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ स्त्रां सुचक्राय स्वाहा मध्यमाभ्यां नमः।
ॐर सूर्यचक्राय स्वाहा अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ हुँ ज्वालाचक्राय स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥

अथहृदयादिन्यासः

ॐ सं अचक्राय स्वाहा हृदयाय नमः।
ॐ हं विचक्राय स्वाहा शिर से स्वाहा।
ॐ स्त्रां सुचक्राय स्वाहा शिखायै वषट्
ॐ र सूर्यचक्राय स्वाहा कवच हुम्।
ॐ हुं ज्वालाचक्राय स्वहा नेत्राभ्यां वौषट्।
ॐ फट् सुदर्शनचक्राय स्वाहा अस्त्रायफट्।
भूर्भुवः स्वरोंसहस्रार हुँ फट् सर्वतोमां रक्ष रक्ष इति दिग्बन्धः।

अथ ध्यानम्

शङ्खचक्रंचापंपरशुमिष्ठुमशिं शूलपाशाङ् कुशांश्च।
विभ्राणं वज्रखेटं हलमुशलगदाकुन्त मत्युग्रदंष्ट्रम्।
ज्वालाकेशं त्रिनेत्रं ज्वलदनलनिभं हारकेयूरभूषं।
ध्यायेत्षट्कोणसंस्थं सकलरिपुकुलप्राणसंहारचक्रम्।
मस्तकं में सहस्रारा भालं पातु सुदर्शनः।
भ्रवौ में चक्रराट् पातु नेत्रेद्वेऽक्रेन्दु लोचनः॥१॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कर्णो वेदैस्तुतः पातु घ्राणं पातु विभीषणः।
महादीप्तः कपोलौ मे ओष्ठौ रुद्रवरप्रदः॥२॥
दन्तान्पातु जमद्ग्न्धो रसनां मम सर्वदा।
सर्व विद्यार्णवः पातु गिरं वागीश्वरो मम॥३॥
वीरसिहो मुखं पातु चिबुकं भक्त्वत्सलः।
सर्वदा पातु कण्ठं मे मेधगम्भीरनिस्वनः॥४॥
ममस्कन्धयुगं पातु धरामाराऽपहारकः।
वाणासुरभुजारण्यदावाग्निः पातु मे भुजौ॥५॥
कालनेमिशिरछेत्ता पातु मे कर्पूरद्वयम।
करौ दिव्यायुधः पातु नखान्वज्रनखोपम॥६॥
कुक्षी पातु महा शूरः स्तनौ शत्रुनिषूदनः।
पातु मे हृदयं भक्तजनानदश्च सर्वदा॥७॥
सर्वशास्त्रार्थसद्भूतिहेतुः पातूदरं मम।
वक्षः पातु महाघोरो दैत्यदानवमर्दनः॥८॥
पार्ष्णी में पातु दीनार्तः शरणागतवत्सलः।
सर्वदा पृष्ठदेशं मे देवानामभयप्रदः॥९॥
नाभिं षट्कोणधामा मे पातु घण्टारवः कटिम्।
आदिमूलपुमान् पातु गुह्यदेशं निरन्तरम्॥१०॥
ऊरू पातु महाशूरो जानुनी भीमविक्रमः।
जङ्घे पातु महावेगो गुल्फौ पातु महाबलः॥११॥
पादौ पातु सदाश्री दो ब्रह्मद्यैरभिवन्दितः।
पातु पादतलद्वन्द्वं विश्वाधारो निरन्तम्॥१२॥
मम सुदर्शननृसिंहो मे शरीरं पातु सर्वदा।
सर्वाङ्ग रोमाणि ज्वाला केशः सरक्षतु।
मम सर्वाङ्गकान्तीं व कल्पान्ताग्निसमप्रभः॥१३॥
अन्तर्बहिश्व मे पातु विश्वात्मा विश्वतोमुखः।
रक्षाहीनं च यत्स्थानं प्रचण्डस्तत्र रक्षतु॥१४॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सर्वतो दिक्षु मे पातु ज्वालाशतपरीवृतः।
त्रिनेमिः पातु मत्प्राणान्भ्रातृन्पात्वनलद्युतिः।।१५।।
भार्या लक्ष्मीसखः पातु पुत्रान्पातु सुदर्शनः।
श्रीकरो में श्रियः पातु बन्धून्पातु बलाधिकः।।१६।।
गोपांश्चैव पशूनू पातु सहस्रारधरसदा।
क्षेत्रं विश्वंभरः पातु मित्रं पात्वघनाशनः।।१७।।
दिवारात्रौ च मां पातु अहिर्बुघ्र्यवरप्रदः।
षोड़शोतुङ्गबाहुस्तु पातु मे राजसन्मुखम्।।१८।।
वैरिविद्वेषसङ्धे तु संग्रामे शत्रुसूदनः।
आवान्तरा अवाधाश्च त्रासयेत्सार्वकालिकम्।।१९।।
आधिव्याधिमहाव्याधिमध्यतोऽपद्गणेऽपिच।
अपमृत्युमहामृत्युनाशयेचक्रनायकः ।।२०।।
परप्रयुक्तमंत्रांश्च यंत्रतंत्रविभुञ्ज्नः।
सुदर्शनोऽयमस्माकं दुर्दशादुः खनासनः।।२१।।
सर्वसम्पत्प्रदाता मां चक्रराजो निरन्तरम्।
जपं पातु जग द्वन्द्यो मानसामक्षयप्रदः।।२२।।
प्रमदाश्चास्त्रधामासौ ज्ञानं रक्षतु सर्वदा।
अणिमादिमहैश्वर्य पातु साम्राज्यसिद्धिदः।।२३।।
तिर्यग्ज्वालाग्रिरूपश्च नष्टराज्यार्थदों मम।
राज्यं पातु सहस्रारः पदातिं पातु वाऽच्युतः।।२४।।
चतुरङ्गबलस्तोमं रक्षतु चक्रभावनः।
ज्योतिर्मयश्चक्रराजः सर्वान्वरुणरक्षकः।।२५।।
अखण्डमण्डितः पातु परचक्रापहारकः।
त्रिविक्रमश्चक्रराजः पातु धैर्य सदा मम।।२६।।
नभोदशदिशव्याप्तकीर्तिः पातु सदुर्शनः।
आयुर्बलं धृतिं पातु लोकत्रयभयापहः।।२७।।
सुधामण्डलसंविष्टी मायासश्चसुशीतलः।
राजद्वारे सभामध्ये पातु मां चण्डविक्रमः।।२८।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूर्वे सुदर्शनः पातु आग्नेये पातु चक्रराट्।
याम्ये रथाङ्गकः पातु त्रिनेमिः पातु नैर्ऋते॥२९॥
लोकत्रयप्रभाकारज्वालो रक्षतु पश्चिमे।
षट्कोणः पातु वायव्ये हास्रराजोत्तरां दिशम्॥३०॥
ऐशान्यां चक्रराट् पातु मध्ये भूचक्रधारकः।
अनन्तादित्यसङ्काशः क्ष्मान्तरिक्षे च पातु मे॥३१॥
सर्वतो दिक्षु, मे पातु ज्वालासाहस्रसंवृतः।
एवं सर्वत्र संरक्षेत्सर्वदा सर्वरूपवान्॥३२॥
इति सोदर्शनं दिव्यं कवचं सर्वकादकम्।
सर्वबाधाप्रशमनं सर्वव्याधिविनाशनम्॥३३॥
सर्वशत्रुक्षयकरं सर्वमङ्गलदायकम्।
त्रिसन्ध्यं पठता नृणां सर्वदा विजयप्रदम्॥३४॥
सर्वपापप्रशमनं। भोगमोक्षैकसाधकम्।
प्रातरूत्थाय यो भक्त्या पठेदेतत्सदा नरः॥३५॥
तस्य सर्वेषु कालेषु विघ्नः क्वापि न जायते।
यक्षराक्षसवेतालभैरवाश्च विनायकाः॥३६॥
शाकिनी डाकिनी ज्येष्ठानिद्राबालग्राहादयः।
भूतप्रेतपिशाचाद्या अन्ये दुष्टग्रहा अपि॥३७॥
कवचस्यास्य जप्तारं दृष्टमात्रेण तेऽखिलाः।
पलायन्ते यथा नागाः पक्षिराजस्य दर्शनात्॥३८॥
अस्यायुतं पुरश्चार्या दशांशं तिलतर्पणम्।
हवनंतद्दशांशेन तर्पणं गन्धवारिणा॥३९॥
पुष्पाञ्जलिर्दशाशं च मिष्टान्नं सघृतप्लुतम्।
चतुर्विंशत्द्विजाभोज्या वैष्णवा वेदपारगाः॥
पञ्चसंस्कार संपन्नास्ततः कार्याणि साधयेत्॥४०॥
विन्यस्यङ्गोत्विदं धीरो युद्धार्थ योऽभिगच्छति।
रणे जित्वाऽखिलाञ्शत्रु न विजयीभवति ध्रुवम्॥४१॥
मन्त्रिताम्बु त्रिवारं वा पिवेत्सप्तदिनावधि।
व्याधयः प्रविनश्यन्ति सकलाः कुक्षिसम्भवाः॥४२॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मुखप्रक्षालनान्नेत्रनासिकारोगनाशनम् ।
भीतानामभिषेकं च महाभयनिवारणम॥४३॥
सप्ताभि मन्क्षितानेन तुलसीमूलमृत्तिका।
लेपनान्नश्यन्ति तेरोगाः सद्य कुष्ठादयोऽखिलाः॥४४॥
ललाटे तिलकं नृणां मोहनं सर्वश्यकृत।
परेषां मंत्रयंत्राणि तंत्राणिमपि नाशकृत्॥४५॥
अलिसर्पादि सर्वेषां विषापहरणं परम्।
सौवर्णे राजते वापि भूर्जेताम्म्रादिकेऽपि वा॥४६॥
लिखित्वा त्वर्चयेद्भक्त्या सः श्रीमान् भवतिध्रुवम्।
बहुना किमिहोक्तेन यद्यद्वाञ्छतियो नरः॥४७॥
सकलं प्राप्नुया दस्य कवचस्य प्रसादतः

●●●

श्रीदत्तात्रेयवज्रकवचम्

श्रीगणेशाय नमः। श्रीदत्तात्रेयाय नमः॥

भगवान् श्रीगणेशजी को नमस्कार। भगवान् श्रीदत्तात्रेयजी को नमस्कार।

ऋषय ऊचुः

कथं संकल्पसिद्धिः स्याद्वेदव्यास कलौ युगे।
धर्मार्थकाममोक्षाणां साधनं किमुदाहृतम्॥१॥

ऋषियों ने पूछा- व्यास जी महाराज! आप कृपाकर यह बतालायें कि कलियुग में धर्म, अर्थ, काम और मोक्षकी सिद्धि किस प्रकार से होगी तथा क्लेश, मुक्ति और अन्य सत्संकल्प आदि कार्य कैसे सिद्ध होंगे॥१॥

व्यास ऊवाच

शृण्वन्तु ऋषयः सर्वे शीघ्रं संकल्पसाधनम्।
सकृदुच्चारमात्रेण भोगमोक्षप्रदायकम्॥२॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भगवान् व्यास बोले- ऋषिगण! आप सभी लोग सुनें। मैं (विधिपूर्वक) एक बार के पाठमात्र से भोग और मोक्ष आदि सभी को तत्काल सिद्ध करने वाला एक स्तोत्र बतलाता हूँ।।२।।

गौरी शृङ्गे हिमवतः कल्पवृक्षोपशोभितम्।
दीप्ते दिव्यमहारत्नहेममण्डपमध्यगम्।।३।।
रत्नसिंहासनासीनं प्रसन्नं परमेश्वरम्।
मंदस्मितमुखाम्भोजं शंकरं प्राह पार्वती।।४।।

हिमालय पर्वत के ऊपर एक गौरीशिखर नाम का दिव्य शृङ्ग है, वह अनेक कल्पवृक्षों से सुशोभित रहता है, साथ ही महान् रत्नों से सदा उद्भाषित होता रहता है। वहीं भगवान् शिव और पार्वती के निवास के लिये एक सुवर्णमय मण्डप बना हुआ है। वहीं रत्नसिंहासन पर प्रसन्न मन से बैठे हुए मन्दस्मित मुखकमल भगवान् शंकर से भगवती पार्वती ने आदरपूर्वक इस प्रकार पूछा।।३-४।।

श्रीदेव्युवाच

देवदेव महादेव लोकशंकर शंकर।
मन्त्रजालानि सर्वाणि यन्त्रजालानि कृत्स्नशः।।५।।
तन्त्रजालान्यनेकानि मया त्वत्तः श्रुतानि वै।
इदानीं द्रष्टुमिच्छामि विशेषेण महीतलम्।।६।।

देवी पार्वती बोली- हे देवाधिदेव महादेव! समस्त लोकों के कल्याण करने वाले भगवान् शंकर् आपसे मैंने अनेक प्रकार के मन्त्र, यन्त्र और तन्त्र समुदायों को भलीभाँति सुना, अब मेरी इस भूमण्डल पर विचरण करने और उनके दृश्यों को देखने की विशेष इच्छा हो रही है।।५-६।।

इत्युदीरितमाकर्ण्य पार्वत्या परमेश्वरः।
करेणामृज्य संतोषात्पार्वतीं प्रत्यभाषत।।७।।
मयेदानीं त्वया सार्धं वृषमारूह्य गम्यते।
इत्युक्त्वा वृषमारूह्य पार्वत्या सह शंकरः।।८।।
ययौ भूमण्डलं द्रष्टुं गौर्याश्चित्राणि दर्शयन्।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पार्वती जी के इस कथन को सुनकर भगवान शंकर ने उनके हाथ को प्रसन्नतापूर्वक स्पर्श कर इस प्रस्ताव का अनुमोदन करते हुए कहा कि ठीक है 'मैं ऐसा ही करता हूँ।' मैं तुम्हारे साथ अपने वृषभ वाहन पर बैठकर भूमण्डल के दृश्यों के अवलोकन के लिये चल रहा हूँ। ऐसा कहकर भगवान् शंकर पार्वती के साथ अपने वृषभ वाहन पर बैठकर उन्हें विभिन्न क्षेत्रों की शोभा दिखाते हुए भूमण्डल के दृश्यों को देखने के लिये निकल पड़े।।७-८।।

क्वचिद् विंध्याचलप्रान्ते महारण्ये सुदुर्गमे।।९।।
तत्र व्याहन्तुमायान्तं भिल्लं परशुधारिणम्।
वध्यमानं महाव्याघ्रं नखदंष्ट्राभिरावृतम्।।१०।।
अतीव चित्रचारित्र्यं वज्रकायसमायुतम्।
अप्रयत्नमनायासमखिन्नं सुखमास्थितम्।।११।।

घूमते-घूमते वे लोग विन्ध्याचल पर्वत के अत्यन्त दुर्गम वन के एक भाग में पहुँचे। वहाँ उन्होंने फरसा लिये एक भिल्ल को देखा, जो शिकार के लिये उस वन में घूम रहा था। उसका शरीर वज्र के समान कठोर था, वह विशाल नख एवं दाढ़ वाले एक बाघ को मारने में प्रवृत्त था। उसका चरित्र अत्यन्त विचित्र था और उसके शरीर में लेशमात्र भी श्रम एवं क्लान्ति के लक्षण नहीं दीख रहे थे तथा आनन्दपूर्वक निश्चिन्त खड़ा था।।९-११।।

पलायन्तं मृगं पश्चाद् व्याघ्रो भीत्या पलायितः।
एतदाश्चर्यमालोक्य पार्वती प्राह शंकरम्।।१२।।

बाघ मृग को देखकर डर कर भागने लगा और उसके पीछे-पीछे हिरन भी खदेड़ता हुआ जा रहा था। इस आश्चर्य को देखकर भगवती पार्वती ने भगवान् शंकर से कहा।।१२।।

श्रीपार्वत्युवाय

किमाश्चर्यं किमाश्चर्यमग्रे शम्भो निरीक्ष्यताम्।
इत्युक्तः स ततः शम्भुर्दृष्ट्वा प्राह पुराणवित्।।१३।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पार्वती जी बोलीं- 'प्रभो! यह सामने देखिये कितने बड़े आश्चर्य की बात है।' यह सुनकर सभी रहस्यों के मर्मज्ञ भगवान् शंकर ने उधर देखा और फिर वे कहने लगे॥१३॥

श्रीशंकर उवाच

गौरि वक्ष्यामि ते चित्रमवाङ्मनसगोचरम्।
अदृष्टपूर्वमस्माभिर्नास्ति किञ्चिन्न कुत्रचित्॥१४॥
मया सम्यक् समासेन वक्ष्यते शृणु पार्वति।

भगवान् शंकर बोले- हे पार्वति! इस विचित्र घटना का रहस्य जो मेरी समझ में आया है, वह मैं तुमसे बतला रहा हूँ। वैसे तो हम लोगों के लिये कहीं भी कोई भी वस्तु नयी नहीं है, सब कुछ देखा-सुना हुआ है। फिर भी मैं संक्षेप में बतला रहा हूँ, तुम ध्यान देकर सुनो॥१४॥

अयं दूरश्रवा नाम भिल्लः परमधार्मिकः॥१५॥
समित्कुशप्रसूनानि कन्दमूलफलादिकम्।
प्रत्यहं विपिनं गत्वा समादाय प्रयासतः॥१६॥
प्रिये पूर्वं मुनीन्द्रेभ्यः प्रयच्छति न वाञ्छति।
तेऽति तस्मिन्नपि दयां कुर्वते सर्वमौनिनः॥१७॥

यह दूरश्रवा नाम का अत्यन्त धर्मात्मा भिल्ल है। प्रिये! यह प्रतिदिन प्रयत्नपूर्वक वन से समिधा, पुष्प, कुश, कन्द-मूल-फल आदि लेकर बिना कुछ पारिश्रमिक प्राप्त किये ही मुनियों के आश्रमों पर पहुँचा देता है। वह उनसे कुछ भी लेने की इच्छा भी नहीं करता, पर मुनि लोग उस पर बहुत कृपा करते हैं॥१५-१७॥

दलादनोमहायोगी वसन्नेव निजाश्रमे।
कदाचिदस्मरत् सिद्धं दत्तात्रेयं दिगम्बरम्॥१८॥
दत्तात्रेयः स्मर्तृगामी चेतिहासं परीक्षितुम्।
तत्क्षणात्सोऽपियोगीन्द्रो दत्तात्रेयः समुत्थितः॥१९॥

यहीं दलादन (पत्तों के आहार पर जीवन धारण करने वाले पर्णाद) मुनि भी अपने आश्रम में निवास करते हैं। एक बार उन्होंने दत्तात्रेयमुनि की स्मर्तृगामिता की परीक्षा के लिए के लिये उनका स्मरण किया। फिर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्या था, महर्षि दत्तात्रेय तत्क्षण वहीं प्रकट हो गये।।१८-१९।।

तं दृष्ट्वाऽऽश्चर्यतोषाभ्यां दलादनमहामुनिः।
सम्पूज्याग्रे निषीदन्तं दत्तात्रेयमुवाच तम्।।२०।।
मयोपहूतः सम्प्राप्तो दत्तात्रेय महामुने।
स्मर्तृगामी त्वमित्येतत् किंवदन्तीं परीक्षितुम्।।२१।।

उन्हें उपस्थित देखकर दलादन मुनि को महान् आश्चर्य और अपार हर्ष हुआ। उन्होंने बड़ी आवभगतपूर्वक आसन पर बैठाकर उनका स्वागत-सत्कार एवं पूजन कर उनसे कहा-'महामुन दत्तात्रेय ! मैंने तो केवल आपकी स्मृर्गगामिता की प्रसिद्धि परीक्षा की दृष्टि से सामान्य रूप से ही आपको स्मरण किया था।।२०-२१।।

मयाद्य संस्मृतोऽसि त्वमपराधं क्षमस्व मे।
दत्तात्रेयो मुनिं प्राह मम प्रकृतिरीदृशी।।२२।।
अभक्त्या वा सुभक्त्या वा यः स्मरेन्मामनन्यधीः।
तदानीं तमुपागत्य ददामि तदभीप्सितम्।।२३।।
दत्तात्रेयो मुनिं प्राह दलादनमुनीश्वरम्।
यदिष्टं तद्वृणीष्व त्वं यत् प्राप्तोऽहं त्वया स्मृतः।।२४।।

आज जो मैंने आपको स्मरण किया और आप तत्काल यहाँ पधार गये, यह मैंने बड़ा भारी अपराध किया, आप मेरे इस अपराध को क्षमा करें' इस पर दत्तात्रेय जी ने दलादन मुनि से कहा कि 'मेरा तो यह स्वभाव ही है कि कोई मुझे भाव-कुभाव, भक्ति या अभक्ति से तल्लीनतापूर्वक स्मरण करे तो मैं तत्क्षण उसके पास पहुँच जाता हूँ और उसकी अभीष्ट वस्तु उसे प्रदान कर देता हूँ। पुनः दत्तात्रेय जी ने कहा-'अतः जब आपने मुझे स्मरण किया है और मैं आ गया हूँ तो अब जो चाहो मुझसे माँग लो, मैं तुम्हे वह वस्तु प्रदान कर दूँगा।।२२-२४।।

दत्तात्रेय मुनिः प्राह मया किमपि नोच्यते।
त्वच्चित्ते यत्स्थितं तन्मे प्रयच्छ मुनिपुङ्गव।।२५।।

इस पर दलादन मुनि बोले-हे मुनिपुङ्गव! मेरी तो कोई माँग नहीं है, पर आपके मन में मेरे कल्याण के लिये जो कुछ अच्छी वस्तु देने की इच्छा हो उसे दे सकते हैं।।२५।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्रीदत्तात्रेय उवाच

ममास्ति वज्रकवचं गृहाणेत्यवदन्मुनिम्।
तथेत्यङ्गीकृतवते लादमुनये मुनिः॥२६॥
स्ववज्रकवचं प्राह ऋषिच्छन्दः पुरःसरम्।
न्यासं ध्यानं फलं तत्र प्रयोजनमशेषतः॥२७॥

दत्तात्रेय जी बोले- तब तुम मेरा यह वज्रकवच ही ग्रहण कर लो। इस पर दलादनमुनिके 'ऐसा ही हो' यह कहने पर उन्होंने अपने वज्रकवच का उपदेश कर दिया और साथ-ही साथ इसके ऋषि, छन्द, न्यास, ध्यान, फल और प्रयोजन का भी उपदेश कर दिया॥२६-२७॥

विनियोग इस प्रकार है-

अस्य श्रीदत्तात्रेयवज्रकवचस्तोत्रमन्त्रस्य किरातरूपी महारुद्र ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीदत्तात्रेयो देवता, द्रां बीजम्, आं शक्तिः, क्रौं कीलकम्,ॐ आत्मने नमः। ॐ द्रीं मनसे नमः। ॐ आं द्रीं श्रीं सौः ॐ क्लां क्लीं क्लूं कलैं कलौं क्लः। श्रीदत्तात्रेयप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः॥

(करन्यास-) **ॐ द्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ द्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ द्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ द्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐद्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐद्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।**

हृदयादिन्यास भी इसी प्रकार कर लेना चाहिये।

'ॐ भूर्भुवःस्वरोम्' ऐसा कहकर (चुटकी बजाते हुए भूत-प्रेतों से अपने स्थान तथा शरीर की रक्षा के लिये) दिग्बन्ध करना चाहिये।

अथ ध्यानम्

जगदङ्कुरकन्दाय सच्चिदानन्दमूर्तये।
दत्तात्रेयाय योगीन्द्रन्द्राय परमात्मने॥१॥

उनका ध्यान इस प्रकार है- संसार-वृक्ष के मूलस्वरूप, सच्चिदानन्द की मूर्ति और योगीन्द्रों के लिये आह्लदकारी चन्द्रमा एवं परमात्मस्वरूप दत्तात्रेय मुनि को नमस्कार है॥१॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कदा योगी कदा भोगी कदा नग्नः पिशाचवत्।
दत्तात्रेयो हरिः साक्षाद्भुक्तिमुक्तिप्रदायकः॥२॥

कभी योगी-वेश में, कभी भोगी-वेश में और कभी नग्न दिगम्बर के वेश में पिशाच के समान इधर-उधर घूमते महामुनि दत्तात्रेय भोग एवं मोक्ष को देने में समर्थ साक्षात् विष्णु ही हैं॥२॥

वाराणसीपुरस्नायी कोल्हार पुरजपादरः।
माहुरीपुरभिक्षाशी सह्यशायी दिगम्बरः॥३॥

ये महामुनि प्रतिदिन प्रातः काशी में गङ्गा नदी में स्नान करते हैं और फिर समुद्र तटवर्ती कोल्हापुर के महालक्ष्मी-मन्दिर में पहुँचकर देवी का जप-ध्यान करते हैं तथा माहुरीपुर पहुँकर कुछ भिक्षा करते हैं और फिर सह्याचल की कन्दराओं में दिगम्बर-वेश में विश्राम एवं शयन करते हैं॥३॥

इन्द्रनीलसमाकारश्चन्द्रकान्तसमद्युतिः ।
वैदूर्यसदृशस्फूर्तिश्चलत्किञ्चिज्जटाधरः ॥४॥

देखने में इन्द्रनीलमणि के समान भस्म पोते हुए उनका शरीर पूरा नीला है और उनकी चमक चन्द्रकान्तमणि के समान श्वेतवर्ण की है। इनकी फहराती हुई काली-नीली जटा कुछ-कुछ वैदूर्यमणि के समान दीखती है॥4॥

स्निग्धधावल्ययुक्ताक्षोऽत्यन्तनीलकनीनिकः ।
भ्रूवक्षःश्मश्रुनीलाङ्कशशाङ्कसदृशाननः ॥५॥

इनकी आँखें स्नेह से भरी हुई श्वेतवर्ण की हैं। इनकी आँखों की पुतलियाँ बिलकुल नीली हैं। इनका मुखमण्डल चन्द्रमा के समान और इनकी भौंहें तथा छाती तक लटकी दाढ़ी नीली है॥5॥

हासनिर्जितनीहारः कण्ठनिर्जितकम्बुकः।
मांसलांसो दीर्घबाहुः पाणिनिर्जितपल्लवः॥6॥

इनकी हास्यछटा नीहार की हिम-बिन्दुओं को तिरस्कृत करती है और कण्ठ की शोभा शंख को लज्जित करती है। सारा शरीर मांस से भरा कुछ उभरा-सा है तथा इनकी भुजाएँ लम्बी हैं और करकमल नवीन पत्तों से भी अधिक कोमल हैं॥६॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विशालपीनवक्षाश्च ताम्रपाणिर्दलोदरः।
पृथुलश्रोणिललितो विशालजघनस्थलः॥७॥

इनकी छाती चौड़ी और मांसल है तथा करतल पूरा लाल है। इनका कटिप्रदेश मांसल एवं ललित है तथा जघनस्थल विशाल है।॥७॥

रम्भास्तम्भोपमानोरूर्जानुपूर्वैकजंघकः ।
गूढगुल्फः कूर्मपृष्ठो लसत्पादोपरिस्थलः॥९॥

इनकी जाँघें केले के स्तम्भ के समान घुटने तक उतरती हुई हैं तथा उनकी घुट्टियाँ मांस से ढकी हुई हैं और पैर का ऊपरी भाग कछुए की पीठ के समान ऊपर उठा हुआ है।॥८॥

रक्तारविन्दसदृशरमणीयपदाधरः ।
चर्माम्बरधरो योगी स्मर्तृगामी क्षणे क्षणे॥९॥

इनका पदतल रक्तकमल के समान अत्यन्त मृदुल और रमणीय है। वे ऊपर से अपने शरीर पर मृगचर्म धारण किये रहते हैं और जो भी भक्त इन्हें जब-जब जहाँ-जहाँ पुकारते हैं, वे अपनी योग बल से तब-तब वहाँ पहुँचते हैं।॥९॥

ज्ञानोपदेशनिरतो विपद्धरणदीक्षितः।
सिद्धासनसमासीन ऋजुकायो हसन्मुखः॥१०॥

वे ज्ञान के उपदेश में निरस्तर निरत रहते हैं और दूसरों को क्लेश से मुक्त करने के लिये सदा बद्धपरिकर रहते हैं। वे प्रायः सीधे शरीर से सिद्धासन लगाकर बैठे रहते हैं और उनके मुखपर मुस्कान सदा विराजमान रहती है।॥१०॥

वामहस्तेन वरदो दक्षिणेनाभयंकरः।
बालोन्मत्तपिशाचीभिः क्वचिद्युक्तः परीक्षितः॥११॥

उनके बाँये हाथ से वरद मुद्रा और दाहिने हाथ सेअभय मुद्रा प्रदर्शित होती है। वे कभी-कभी बालकों, उन्मत्त व्यक्तियों और पिशाचिनियों से घिरे हुए दीखते हैं॥11॥

त्यागी भोगी महायोगी नित्यानन्दो निरञ्जनः।
सर्वरूपी सर्वदाता सर्वगः सर्वकामदः॥१२॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वे एक ही साथ त्यागी, भोगी, महायोगी और मायामुक्त नित्य आनन्दस्वरूप विशुद्ध ज्ञानी हैं। वे एक ही साथ सब रूप धारण कर सकते हैं, सब जगह जा सकते हैं और सभी को सभी अभिलषित पदार्थ प्रदान करने में भी समर्थ हैं।।१२।।

भस्मोद्धूलितसर्वाङ्गो महापातकनाशनः।
भुक्तिप्रदो मुक्तिदाता जीवन्मुक्तो न संशयः।।१३।।

महर्षि दत्तात्रेय अपने सारे शरीर में भस्म लपेटे रहते हैं। इनके दर्शन या स्मरण से सब पापों का नाश हो जाता है। ये भोग एवं मोक्ष सब कुछ देने में समर्थ हैं और इसमें भी कोई संदेह नहीं कि ये पूर्ण जीवन्मुक्त हैं।।१३।।

एवं ध्यात्वाऽनन्यचित्तो मद्वज्रकवचं पठेत्।
मामेव पश्यन्सर्वत्र स मया सह संचरेत्।।१४।।

महर्षि दत्तात्रेय दलादनजी से कहते हैं- जो इस प्रकार अनन्य भाव से सब जगह मुझे देखते और मेरा ध्यान करते हुए मेरे इस वज्रकवच का पाठ करेगा, वह जीवन्मुक्त होकर सदा मेरे साथ विचरण करेगा।।१४।।

दिगम्बरं भस्मसुगन्धलेपनं चक्रं त्रिशूल डमरुं गदायुधम्।
पद्मासनं योगिमुनीन्द्रवन्दितं दत्तेति नामस्मरणेन नित्यम्।।१५।।

जो निर्वस्त्र, भस्म लपेटे, सुगन्धित द्रव्यों से उपलिप्त, चक्र, त्रिशूल, डमरू और गदा-इन आयुधों को क्रमशः अपने चार हाथों में धारण किये हैं, पद्मासन लगाकर बैठे हैं और योगी तथा श्रेष्ठ मुनिगण जिनकी वन्दना-प्रार्थना कर रहे हैं ऐसे दत्तमुनि नित्य नाम-जप में तल्लीन रहते हैं (ऐसे स्वरूप वाले दत्तात्रेय मुनि का मैं ध्यान कर रहा हूँ)।।१५।।

(अथ पञ्चोपचारैः सम्पूज्य, 'ॐ द्रां' इति अष्टोत्तरशतं जपेत्)

(इसके बाद चन्दन, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य-इन पाँच उपचारों से पूजा करके दत्तात्रेय जी का मूलबीज-मन्त्र **'ॐ द्रां'** का 108 बार जप करे।)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(तदनन्तर कवच का इस प्रकार पाठ करना चाहिये-)

ॐ दत्तात्रेय शिरः पातु सहस्राब्जेषु संस्थितः।
भालं पात्वानसूयेयश्चन्द्रमण्डलमध्यगः॥१॥

सहस्रदल कमल (शून्य चक्र) में स्थित दत्तात्रेय जी मेरे मस्तक की रक्षा करें। चन्द्र मण्डल में स्थित रहने वाले अनसूया के पुत्र भगवान् दत्तात्रेय मेरे ललाट की रक्षा करें॥१॥

कूर्चंमनोमयः पातु हं क्षं द्विदलपद्मभूः।
ज्योतिरूपोऽक्षिणी पातु पातु शब्दात्मकः श्रुती॥२॥

द्विदल पद्म (आज्ञा चक्र) में स्थित मनस्वरूपी भगवान् दत्तात्रेय कूर्च (मेरी नासिक के ऊपरी भाग) की रक्षा करें। ज्योतिस्वरूप भगवान् दत्तात्रेय मेरे नेत्रों की तथा शब्दात्मक दत्त मेरे दोनों कानों की रक्षा करें॥२॥

नासिकां पातु गन्धात्मा मुखं पातु रसात्मकः।
जिह्वां वेदात्मकः पातु दन्तोष्ठौ पातु धार्मिकः॥३॥

गन्धात्मक दत्त मेरी नासिका की तथा रसरूपी भगवान् दत्त मेरे मुख की रक्षा करें। वेदज्ञानस्वरूपी दत्त मेरी जिह्वा की तथा धर्मात्मा दत्त मेरे ओष्ठ और दाँतों की रक्षा करें॥३॥

कपोलावत्रिभूः पातु पात्वशेषं ममात्मवित्।
स्वरात्मा षोडशाराब्जस्थितः स्वात्माऽवताद्गलम्॥४॥

अत्रिपुत्र दत्त मेरे कपालों की तथा आत्मवेत्ता दत्तात्रेय जी मेरे समूचे शरीर की रक्षा करें। स्वरस्वरूप षोडशदल कमल (विशुद्धिचक्र) में स्थित निजात्मस्वरूप भगवान दत्तात्रेय जी मेरे गले की रक्षा करें॥4॥

स्कन्धौ चन्द्रानुजः पातु भुजौ पातु कृतादिभूः।
जत्रुणी शत्रुजित् पातु पातु वक्षःस्थलं हरि॥५॥

चन्द्रमा मुनि के छोटे भाई दत्तात्रेय जी मेरे दोनों कन्धों की तथा सतयुग के आदि में उत्पन्न होने वाले भगवान् दत्तात्रेय मेरी दोनों भुजाओं की रक्षा करें। शत्रुओं के विजेता भगवान दत्त मेरी पसलियों की तथा साक्षात् विष्णुस्वरूप दत्तात्रेय जी मेरे वक्षःस्थल की रक्षा करें॥५॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कादिठान्तद्वादशारपद्मगो मरुदात्मकः।
योगीश्वरेश्वरतः पातु हृदयं हृदयस्थितः॥६॥

कसेठ तक द्वादशदल कमल (अनाहतचक्र) में स्थित योगीश्वरों के भी ईश्वर तथा हृदयस्थ वायुरूपी भगवान् दत्तात्रेय मेरे हृदय की रक्षा करें॥६॥

पार्श्वे हरिः पार्श्ववर्ती पातु पार्श्वस्थितः स्मृतः।
हठयोगादियोगज्ञः कुक्षी पातु कृपानिधिः॥७॥

स्मर्तृगामी पास में रहने वाले साक्षात् भगवान् दत्तात्रेय मेरे पार्श्व भागों की तथा हठयोग आदि सभी योग-विद्याओं के ज्ञाता कृपासिन्धु दत्तात्रेय जी मेरी कुक्षि (पेट) की रक्षा करें॥७॥

डकारादिफकारान्तदशारसरसीरुहे ।
नाभिस्थले वर्तमानो नाभिं वह्न्यात्मकोऽवतु॥८॥
वह्नितत्त्वमयो योगी रक्षतान्मणिपूरकम्।
कटिं कटिस्थब्रह्माण्डवासुदेवात्मकोऽवतु॥९॥

डकार से लेकर फकारतक दशदल कमलयुक्त, अग्नितत्त्वमय नाभिस्थल मणिपूरचक्र में स्थित अग्निस्वरूप योगी भगवान् दत्तात्रेय मणिपूरचक्रसहित मेरी नाभि की रक्षा करें। जिनके कटिप्रदेश में समस्त ब्रह्माण्ड स्थित हैं, वे वासुदेवस्वरूप भगवान् दत्तात्रेय मेरे कटिप्रदेश की रक्षा करें॥८-९॥

बकारादिलकारानतषट्पत्राम्बुजबोधकः ।
जलतत्त्वमयो योगी स्वाधिष्ठानं ममावतु॥१०॥

बकार से लेकर लकारतक षड्दल कमल में स्थित जलतत्त्वरूपी योगी भगवान् दत्रात्रेय जी मेरे स्वाधिष्ठानचक्र की रक्षा करें॥10॥

सिद्धासनसमासीन ऊरू सिद्धेश्वरोऽवतु।
वादिसान्तचतुष्पत्रसरोरूहनिबोधकः ॥११॥
मूलाधारं महीरूपो रक्षताद्वीर्यनिग्रही।
पृष्ठं च सर्वतः पातु जानुन्यस्तकराम्बुजः॥१२॥

सिद्धासन लगाकर बैठे हुए सिद्धों के स्वामी भगवान् दत्तात्रेय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जी मेरी दोनों जाँघों की रक्षा करें। 'व' कार से लेकर 'स' कारतक चतुर्दल कमल में स्थित महीरूप अखण्ड नैष्ठिक ब्रह्मचारी भगवान् दत्तात्रेय मेरे मूलाधारचक्र की रक्षा करें। घुटने पर हस्तकमल को रखकर बैठे हुए भगवान् दत्तात्रेय मेरी पीठ की सभी ओर से रक्षा करें॥११-१५॥

जङ्घे पात्ववधूतेन्द्रः पात्वंघ्री तीर्थपावनः।
सर्वाङ्गं पातु सर्वात्मा रोमाण्यवतु केशवः॥१३॥

अवधूतों के स्वामी भगवान् दत्तात्रेय मेरे पैर की दोनों पिण्डलियों तथा (अपने पैरों से सम्पूर्ण) तीर्थों को पवित्र करने वाले भगवान् दत्तात्रेय मेरे पदतलों की रक्षा करें। सर्वात्मा भगवान् दत्तात्रेय मेरे सभी अङ्गों की तथा विचित्र केशों वाले भगवान् दत्तात्रेय मेरे रोमसमूहों की रक्षा करें॥१३॥

चर्म चर्माम्बरः पातु रक्तं भक्तिप्रियोऽवतु।
मांसं मांसकरः पातु मज्जां मज्जात्मकोऽवतु॥१४॥

मृगचर्म धारण करने वाले भगवान् दत्तात्रेय मेरी त्वचा की तथा भक्तिप्रिय भगवान् दत्तात्रेय मेरे शरीर के रक्त की रक्षा करें। मांस बढ़ाने वाले दत्तात्रेय मेरी मांसस्थली की तथा मज्जात्मा भगवान् दत्तात्रेय मेरी मज्जा धातु की रक्षा करें॥१४॥

अस्थीनि स्थिरधीः पायान्मेधां वेधाः प्रपालयेत्।
शुक्रं सुखकरः पातु चित्तं पातु दृढाकृतिः॥१५॥

स्थिल बुद्धि वाले भगवान् दत्तात्रेय जी मेरी मेधा (धारणाशक्ति) की रक्षा करें। सुख देने वाले भगवान् दत्तात्रेय मेरे शुक्र (तेज) की और दृढ़ वज्रशरीर वाले दत्तात्रेय जी मेरे चित्त की रक्षा करें॥१५॥

मनोबुद्धिमहंकारं हृषीकेशात्मकोऽवतु।
कर्मेन्द्रियाणि पात्वीशः पातु ज्ञानेन्द्रियाण्यजः॥१६॥

इन्द्रियों के स्वामीरूप भगवान् दत्तात्रेय मेरे मन, बुद्धि और अहंकार की रक्षा करें। ईश्वर स्वरूप भगवान् दत्तात्रेय मेरी कर्मेन्द्रियों की और अजन्मा भगवान् दत्त मेरी ज्ञानेन्द्रियों की रक्षा करें॥16॥

बन्धून् बन्धूत्तमः पायाच्छत्रुभ्यः पातु शत्रुजित्।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गृहारामधनक्षेत्रपुत्रादीञ्छंकरोऽवतु ॥१७॥

बन्धुओं में उत्तम भगवान् दत्त मेरे बन्धु-बान्धवों की और शत्रु विजेता भगवान् दत्तात्रेय मेरी शत्रुओं से रक्षा करें। शंकरस्वरूप भगवान् दत्तात्रेय हमारे घर, खेत तथा बाग-बगीचे, धन-सम्पत्तियों और मेरे पुत्र आदि की रक्षा करें॥१७॥

भार्यां प्रकृतिवित् पातु पश्वादीन्पातु शार्ङ्गभृत्।
प्राणान्पातु प्रधानज्ञो भक्ष्यादीन्पातु भास्करः॥१८॥

प्रकृति तत्व के मर्मज्ञ भगवान् दत्तात्रेय मेरी पत्नी की और शार्ङ्गधनुष धारण करने वाले विष्णुस्वरूप भगवान् दत्तात्रेय मेरे पशु आदि की रक्षा करें। प्रधान तत्व के रहस्यवेत्ता भगवान् दत्तात्रेय मेरे प्राणों की और सूर्यस्वरूपी भगवान् दत्तात्रेय मेरे भक्ष्य-भोज्य आदि पदार्थों की कुदृष्टि एवं विष आदि से रक्षा करें॥१८॥

सुखं चन्द्रात्मकः पातु दुःखात् पातु पुरान्तकः।
पशून्पतिः पातु भूतिं भूतेश्वरो मम॥१९॥

चन्द्ररूपी भगवान् दत्त मेरे सुखों की रक्षा करें तथा त्रिपुर दैत्य को मारने वाले शिवस्वरूपी दत्तात्रेय जी मुझे सभी क्लेशों से बचायें। पशुपतिनाथरूपी दत्तात्रेय जी मेरे पशुओं की और भूतेश्वर रूपी दत्त मेरे वैभवों-योगसिद्धियों की रक्षा करें॥१९॥

प्राच्यां विषहरः पातु पात्वाग्नेय्यां मखात्मकः।
याम्यां धर्मात्मकः पातु नैर्ऋत्यां सर्ववैरिहृत्॥२०॥

विष को दूर करने वाले दत्त जी पूर्व दिशा में और यज्ञ स्वरूपी भगवान् दत्तात्रेय अग्निकोण में रक्षा करें। धर्मराज रूपी दत्त दक्षिण दिशा में और सभी वैरियों को नष्ट करने वाले भगवान् दत्तात्रेय नैर्ऋत्यकोण में मेरी रक्षा करें॥२०॥

वराहः पातु वारूण्यां वायव्यां प्राणदोऽवतु।
कौबेर्यां धनदः पातु पात्वैशान्यां महागुरुः॥२१॥

भगवान् वराहरूपी दत्त पश्चिम दिशा में और सबों को नासिका-मार्ग से वायु द्वारा प्राण-संचार करने वाले भगवान् दत्त वायुकोण में रक्षा करें। उत्तर दिशा में धनाध्यक्ष कुबेर रूपी और ईशानकोण में विश्व के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

महागुरु शिवस्वरूप भगवान् दत्तात्रेय जीरक्षा करें।।२१।।

ऊर्ध्वं पातु महासिद्धः पात्वधस्ताज्जटाधरः।
रक्षाहीनं तु यत्स्थानं रक्षत्वादिमुनीश्वरः।।२२।।

महासिद्धरूपी दत्तात्रेय जी ऊपर की ओर और जटाधारी भगवान् दत्तात्रेय जी मेरी नीचे की दिशा में रक्षा करें। जो रक्षा के लिये स्थान निर्दिष्ट नहीं किये गये हैं, शेष बच गये हैं, आदि मुनि दत्तात्रेय जी उसकी रक्षा करें।।२२।।

(मालामन्त्रजपः। हृदयादिन्यासः)

इसी प्रकार कवच के अन्त मेंभी पूर्ववत् मालामन्त्र का जप, (करन्यास) हृदयादि अंगन्यास सम्पन्न कर लेना चाहिये।

एतन्मे वज्रकवचं यः पठेच्छृणुयादपि।
वज्रकायश्चिरञ्जीवी दत्तात्रेयोऽहमब्रुवम्।।२३।।
त्यागी भोगी महायोगी सुखदुःखविवर्जितः।
सर्वत्रसिद्धसंकल्पो जीवन्मुक्तोऽथ वर्तते।।२४।।

दत्तात्रेय जी कहते हैं कि जो मेरे इस वज्र कवच का पाठ एवं श्रवण भी करता है उसका सम्पूर्ण शरीर वज्र का हो जाता है और उसकी आयु भी अतिदीर्घ हो जाती है। यह मेरा स्वयं का कथन है। वह मेरे ही समान त्यागी, भोगी, महायोगी तथा सुख-दुःखों से परे हो जाता है, उसके सभी संकल्प सदा सर्वत्र सिद्ध होने लगते हैं और वह जीवन्मुक्त हो जाता है।।२३-२४।।

इत्युक्त्वान्तर्दधे योगी दत्तात्रेयो दिगम्बरः।
दलादनोऽपि तज्जप्त्वा जीवन्मुक्तः स वर्तते।।२५।।

ऐसा कहकर अवधूत दत्तात्रेय जी तो अन्तर्धान हो गये और दलादनमुनि भी इसका जपकर उनके ही समान जीवन्मुक्त के रूप में आज भी विद्यमान हैं।।२५।।

भिल्लो दूरश्रवा नाम तदानीं श्रुतवानिदम्।
सकृच्छ्रवणमात्रेण वज्राङ्गोऽभवदप्यसौ।।२६।।

उसी समय दूरश्रवा नाम के उस भिल्ल ने भी इस स्तोत्र को दूर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

से ही सुन लिया था और एक ही बार सुनने से उसका भी शरीर वज्र के समान सुदृढ़ हो गया।।२७।।

इत्येतद्वज्रकवचं दत्तात्रेयस्य योगिनः।
श्रुत्वाशेषं शम्भुमुखात् पुनरप्याह पार्वती।।२७।।

इस प्रकार महायोगी दत्तात्रेय जी के वज्र कवच को भगवान् शंकर के मुख से सुनकर पार्वती जी ने उनसे पुनः प्रश्न किया।।२७।।

पार्वत्युवाच

एतत्कवचमाहात्म्यं वद विस्तरतो मम।
कुत्र केन कदा जाप्यं किं यज्जाप्यं कथं कथम्।।२८।।

पार्वती जी बोलीं-भगवन्! आप कृपापूर्वक इस वज्रकवच का माहात्म्य मुझे विस्तारपूर्वक बताइये। इसके जप का कौन अधिकारी है और इसे कहाँ, किस प्रकार और कब-कैसे जपना चाहिये।।28।।

उवाच शम्भुस्तत्सर्वं पार्वत्या विनयोदितम्।

श्रशिव उवाच

शृणु पार्वति वक्ष्यामि समाहितमनाविलम्।।२९।।
धर्मार्थकाममोक्षाणामिदमेव परायणम्।
हस्त्यश्वरथपादातिसर्वैश्वर्यपदायकम् ।।३०।।

पार्वती जी के द्वारा विनीत भाव से पूछे जाने पर भगवान् शंकर ने सब कुछ बतला दिया।

श्री शिव जी बोले-पार्वती! तुमने जो पूछा है उसे मैं बतला रहा हूँ। तुम ध्यान देकर सब सुनो। एकमात्र यह स्तोत्र धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सबका सम्पादन करने वाला है तथा हाथी, घोड़ा, रथ तथा पादचारी चतुरंगिणी सेना और सम्पूर्ण ऐश्वर्यों का प्रदान करने वाला है।।२९-३०।।

पुत्रमित्रकलत्रादिसर्वसन्तोषसाधनम् ।
वेदशास्त्रादिविद्यानां निधानं परमं हि तत्।।३१।।
सङ्गीतशास्त्रसाहित्यसत्कवित्वविधायकम् ।
बुद्धिविद्यास्मृतिप्रज्ञामतिप्रौढिप्रदायकम् ।।३२।।

इसके पढ़ने से पुत्र, मित्र, स्त्री आदि तथा सर्वोपरि तत्त्व

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भगवत्प्राप्तिरूप संतोष भी प्राप्त हो जाता है और यही वेदशास्त्र आदि सभी विद्याओं तथा ज्ञान-विज्ञान का आकर है। साथ-ही-साथ यह संगीतशास्त्र, अलंकार, काव्य और श्रेष्ठ कविता के निर्माण का ज्ञान भी प्राप्त करा देता है। बुद्धि, विद्या, धारणाशक्तिरूप स्मृति, नव नवोन्मेषशालिनी प्रतिभाशक्ति तथा विशुद्ध बोधात्मिका बुद्धि आदि को भी यह प्रदान कर देता है।।३१-३२।।

सर्वसन्तोषकरणं सर्वदु:खनिवारणम्।
शत्रुसंहारकं शीघ्रं यश:कीर्तिविवर्धनम्।।३३।।

यह सब प्रकार के क्लेशों को नष्ट करने वाला तथा सभी प्रकार से सुख-संतोषों को प्रदान करने वाला है। इसका पाठ तत्काल सभी काम, क्रोध आदि आन्तरिक और बाह्य-शत्रुओं का संहार कर यश और कीर्ति का विस्तार करता है।।३३।।

अष्टसंख्या महारोगा: सन्निपातास्त्रयोदश।
षण्णवत्यक्षिरोगाश्च विंशतिर्मेहरोगका:।।३४।।
अष्टादश तु कुष्ठानि गुल्मान्यष्टविधान्यपि।
अशीतिर्वातरोगाश्च चत्वारिंशत्तु पैत्तिका:।।३५।।
विंशति श्लेष्मरोगाश्च क्षयचातुर्थिकादय:।
मन्त्रयन्त्रकुयोगाद्या: कल्पतन्त्रादिनिर्मिता:।।३६।।

यह आठ प्रकार के महारोगों, तेरह प्रकार के सन्निपातों, छियानबे प्रकार के नेत्र-रोगों और बीस प्रकार के प्रमेह, अठारह प्रकार के कुष्ठ, आठ प्रकार के शूल-रोग, अस्सी प्रकार के वात-रोग, चालीस प्रकार के पित्तरोग, बीस प्रकार के कफ सम्बन्धी रोग, साथ ही क्षयरोग, चतुराहिक, जिरा और बारी आदि से आने वाले ज्वर एवं मन्त्र-यन्त्र, कुयोग, टोटना आदि से उत्पन्न रोग, दु:ख, पीड़ा आदि भी नष्ट हो जाते हैं।।३४-३६।।

ब्रह्मराक्षसवेतालकूष्माण्डादिग्रहोद्भवा: ।
संगजादेशकालस्थास्तापत्रयसमुत्थिता: ।।३७।।

इसके अतिरिक्त भूत, प्रेत, ब्रह्मराक्षस, कूष्माण्ड आदि से होने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वाले दैवी प्रकोप और दुष्ट ग्रहों के द्वारा गोचर से उत्पन्न अनेक प्रकार की पीड़ाएँ स्पर्श दोष से उत्पन्न होने वाली छूआछूत की बीमारियाँ और विभिन्न देश, काल से उत्पन्न होने वाली प्रतिश्याय (जुकाम आदि) शीत ज्वर (मलेरिया आदि) तथा तापत्रयों (आधिदैहिक, आधिदैविक और आधिभौतिक) का इससे शमन हो जाता है।।३७।।

नवग्रहसमुद्भूता महापातकसम्भवाः।
सर्वे रोगाः प्रणश्यन्ति सहस्त्रावर्तनाद्ध्रुवम्।।३८।।

इस कवच के सहस्त्रावर्तन-हजार बार पाठ करने से नवग्रह से उत्पन्न, पूर्व जन्म के पातक-महापातकों से उत्पन्न सभी रोग, दुःख सर्वथा एवं निश्चित रूप से नष्ट हो जाते हैं।।३८।।

अयुतावृत्तिमात्रेण वन्ध्या पुत्रवती भवेत्।
अयुतद्वितयावृत्त्या ह्यपमृत्युजयो भवेत्।।३९।।

इसके दस हजार बार पाठ करने से वन्ध्या स्त्री को भी सुलक्षण पुत्र प्राप्त हो जाता है और इसके बीस हजार बार पाठ करने से अकाल मृत्यु भी दूर हो जाती है।।३९।।

अयुतत्रितयाच्चैव खेचरत्वं प्रजायते।
सहस्त्रादयुतादर्वाक् सर्वकार्याणि साधयेत्।।४०।।
लक्षावृत्त्या कार्यसिद्धिर्भवत्येव न संशयः।।४१।।

इसके तीस हजार पाठ करने से साधक आकाशगमन की शक्ति प्राप्त कर लेता है और हजार से लेकर दस हजार तक की संख्या में पाठ करते-न-करते सारी कामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं। इसके एक लाख आवृत्ति से निः संदेह साधक के सभी कार्य सिद्ध हो जाता है।।४०-४१।।

विषवृक्षस्य मूलेषु तिष्ठन् वै दक्षिणामुखः।
कुरूते मासमात्रेण वैरिणं विकलेन्द्रियम्।।४२।।

गूलर के वृक्ष के नीचे दक्षिण की ओर मुख कर बैठ कर इसका एक मास तक जप करने से शत्रु की सभी इन्द्रियाँ सर्वथा विकल हो जाती हैं।।४२।।

औदुम्बरतरोर्मूले वृद्धिकामेन जाप्यते।
श्रीवृक्षमूले श्रीकामी तिंतिणी शान्तिकर्मणि।।४३।।

गूलर के वृक्ष के नीचे धन-धान्य की वृद्धि करने के लिये जप

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करने का विधान है। लक्ष्मी-प्राप्ति की कामना से बिल्व-वृक्ष के नीचे एवं किसी भी उपद्रव की शान्ति के लिये इमली वृक्ष के नीचे जप करना चाहिये।।४३।।

ओजस्कामोऽश्वत्थमूले स्त्रीकामैः सहकारके।
ज्ञानार्थी तुलसीमूले गर्भगेहे सुतार्थिभिः।।४४।।

तेज, ओज और बल की कामना से पीपल के वृक्ष के नीचे, विवाह की इच्छा से नवीन आम्र वृक्ष के नीचे तथा ज्ञान की इच्छा से तुलसी वृक्ष के नीचे एवं पुत्र की इच्छा वालों को भगवान् के मन्दिर के गर्भ गृह में बैठकर इसका पाठ करना चाहिये।।४४।।

धनार्थिभिस्तु सुक्षेत्रेपशुकामैस्तु गोष्ठके।
देवालये सर्वकामैस्तत्काले सर्वदर्शितम्।।४५।।

धन की इच्छा वालों को किसी शुभ स्थान में तथा पशु की इच्छा वालों को गौशाले में बैठकर पाठ करना चाहिये। देवालय में किसी भी कामना से बैठकर जप करने से उसकी तत्काल सिद्धि होती है।।४५।।

नाभिमात्रजले स्थित्वा भानुमालोक्य यो जपेत्।
युद्धे वा शास्त्रवादे वा सहस्त्रेण जयो भवेत्।।४६।।

नदी, सरोवर आदि में नाभिपर्यन्त जल में स्थित होकर भगवान् सूर्य को देखते हुए इस कवच का एक हजार बार जप करता है वह युद्ध, शास्त्रार्थ और सभी प्रकार के विवादों में विजयी होता है।।४६।।

कण्ठमात्रे जले स्थित्वा यो रात्रौ कवचं पठेत्।
ज्वरापस्मारकुष्ठादितापज्वरनिवारणम् ।।४७।।

जो रात्रि में किसी जलाशय आदि में कण्ठमात्र जल में स्थित होकर इस कवच का पाठ करता है, उसके सामान्य ज्वर, मिर्गी, कुष्ठ और ऊष्ण ज्वर आदि ताप भी नष्ट हो जाते हैं।।४७।।

यत्र सत्स्यात्स्थिरं यद्यत्प्रसक्तं तन्निवर्तते।
तेन तत्र हि जप्तव्यं ततः सिद्धिर्भवेद्ध्रुवम्।।४८।।

जहाँ कहीं जो कुछ उपद्रव, महामारी, दुर्भिक्ष आदि बीमारियाँ स्थिर हो गयी हैं, वहाँ जाकर इस कवच के जप मात्र से निश्चित ही

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वे उपद्रव आदि निर्वृत्त हो जाते हैं और शन्ति हो जाती है।।४८।।

इत्युक्तवान् शिवो गौर्यै रहस्यं परमं शुभम्।
यः पठेद् वज्रकवचं दत्तात्रेयसमो भवेत्।।४९।।

(व्यास जी ऋषियों से कहते हैं कि) भगवान् शंकर ने पार्वती जी से इस परम गुप्त और कल्याणकारी स्तोत्र को कहा था। जो व्यक्ति इस वज्रकवच का पाठ करता है वह भी परम सिद्ध दत्तात्रेय जी के समान ही समस्त गुणों से सम्पन्न हो जाता है।।४९।।

एवं शिवेन कथितं हिमवत्सुतायै
प्रोक्तं दलादमुनयेऽत्रिसुतेन पूर्वम्।
यः कोऽपि वज्रकवचं पठतीह लोके।
दत्तोपम श्चरति योगिवरश्चिरायुः।।५०।।

इस बात को पहले अत्रिपुत्र दत्तात्रेय जी ने दलादन मुनि से कहा था और उसे ही भगवान् शंकर ने पर्वतराज हिमालय की पुत्री भगवती पार्वती जी को बतलाया। जो व्यक्ति इस वज्र कवच का पाठ करता है वह चिरायु एवं योगियों में श्रेष्ठ होकर दत्तात्रेय भगवान् की तरह सर्वत्र विचरण करता है।।५०।।

इति श्रीरूद्रयामले हिमवत्खण्डे मन्त्रशास्त्रे उमामहे श्वरसंवादे श्री दत्तात्रेयवज्रकवचस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

इस प्रकार रूद्रयामल-तन्त्र के अन्तर्गत मन्त्र शास्त्र रूप हिम-वत्खण्ड में शिव-पार्वती के संवाद रूप में श्री दत्तात्रेय जी का वज्र कवच परिपूर्ण हुआ।

●●●

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मृतसञ्जीवनकवचम्

एवमाराध्य गौरीशं देवं मृत्युञ्जयेश्वरम्।
मृतसञ्जीवनं नाम कवचं प्रजपेत् सदा॥१॥

गौरी पति मृत्युञ्जजश्वेर भगवान् शंकर की विधिपूर्वक आराधना करने के पश्चात भक्तको सदा मृतसञ्जीवन नामक कवच का सुस्पष्ट पाठ करना चाहिये॥१॥

सारात् सारतरं पुण्यं गुह्याद् गुह्यतरं शुभम्।
महादेवस्य कवचं मृतसञ्जीवनाभिधम्॥२॥

महादेव भगवान् शङ्कर का यह मत सञ्जीवन नामक कवच तत्त्व का भी तत्त्व है, पुण्यप्रद है, गुह्य से भी गुह्य और मङ्गल प्रदान करने वाला है॥२॥

समाहितमना भूत्वा शृणुष्व कवचं शुभम्।
श्रुत्वैतद् दिव्यकवचं रहस्यं कुरु सर्वदा॥३॥

[आचार्य शिष्य को उपदेश करते हैं कि-हे वत्स!] अपने मन को एकाग्र करके इस मृत सञ्जीवन कवच को सुनो। यह परम कल्याणकारी दिव्य कवच है। इसकी गोपनीयता सदा बनाये रखना॥३॥

जराभयकरो यज्वा सर्वदेवनिषेवितः।
मृत्युञ्जयो महादेवः प्राच्यां मां पातु सर्वदा॥४॥

जरा से अभय करने वाले, निरन्तर यज्ञ करने वाले, सभी देवताओं से आराधित हे मृत्युञ्जय महादेव! आप पूर्व-दिशा में मेरी सदा रक्षा करें॥४॥

दधानः शक्तिमभयां त्रिमुखः षड्भुजः प्रभुः।
सदाशिवोऽग्निरूपी मामाग्नेय्यां पातु सर्वदा॥५॥

अभय प्रदान करने वाली शक्ति को धारण करने वाले, तीन मुखों वाले तथा छः भुजाओं वाले अग्निरूपी प्रभु सदाशिव अग्नि कोण में मेरी सदा रक्षा करें॥५॥

अष्टादशभुजोपेतो दण्डाभयकरो विभुः।
यमरूपी महादेवो दक्षिणस्यां सदाऽवतु॥६॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अट्ठारह भुजाओं से युक्त, हाथ में दण्ड और अभयमुद्रा धारण करने वाले, सर्वत्र व्याप्त यमरूपी महादेव शिव दक्षिण-दिशा में मेरी सदा रक्षा करें।।६।।

खड्गाभयकरो धीरो रक्षोगणनिषेवितः।
रक्षोरूपी महेशो मां नैर्ऋत्यां सर्वदाऽवतु।।७।।

हाथ में खड्ग और अभयमुद्रा धारण करने वाले, धैर्यशाली, दैत्यगणों से आराधित रक्षोरूपी महेश नैर्ऋत्यकोण में मेरी सदा रक्षा करें।।७।।

पाशाभयभुजः सर्वरत्नाकर निषेवितः।
वरुणात्मा महादेवः पश्चिमे मां सदाऽवतु।।८।।

हाथ में अभयमुद्रा और पाश धारण करने वाले, सभी रत्नाकरों से सेवित, वरुण स्वरूप महादेव भगवान् शङ्कर पश्चिम-दिशा में मेरी सदा रक्षा करें।।८।।

गदाभयकरः प्राणनायकः सर्वदागतिः।
वायव्यां मारुतात्मा मां शङ्करः पातु सर्वदा।।९।।

हाथों में गदा और अभयमुद्रा धारण करने वाले, प्राणों के रक्षक, सर्वदा गतिशील वायु स्वरूप शङ्कर जी वायव्यकोण में मेरी सदा रक्षा करें।।९।।

शङ्खाभयकरस्थो मां नायकः परमेश्वरः।
सर्वात्मान्तरदिग्भागे पातु मां शङ्करः प्रभुः।।१०।।

हाथों में शङ्ख और अभयमुद्रा धारण करने वाले नायक (सर्वमार्गद्रष्टा) सर्वात्मा सर्वव्यापक परमेश्वर भगवान् शिव समस्त दिशाओं के मध्य में मेरी रक्षा करें।

शूलाभयकरः सर्वविद्यानामधिनायकः।
ईशानात्मा तथैशान्यां पातु मां परमेश्वरः।।११।।

हाथों में त्रिशूल और अभयमुद्रा को धारण करने वाले, सभी विद्याओं के स्वामी, ईशानस्वरूप भगवान् परमेश्वर शिव ईशानकोण में मेरी रक्षा करें।।११।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऊर्ध्वभागे ब्रह्मरूपी विश्वात्माऽधः सदाऽवतुः।
शिरो मे शङ्कर पातु ललाटं चन्द्रशेखरः॥१२॥

ब्रह्मरूपी शिव मेरे ऊर्ध्व भाग में तथा विश्वात्मस्वरूप शिव अधोभाग में मेरी सदा रक्षा करें। शंङ्कर मेरे सिर की और चन्द्रशेखर मेरे ललाट की रक्षा करें॥१२॥

भ्रूमध्यं सर्वलोकेशस्त्रिनेत्रोऽवतु लोचने।
भ्रूयुग्मं गिरिशः पातु कर्णौ पातु महेश्वरः॥१३॥

मेरे भौंहो के मध्य में सर्वलोकेश और दोनों नेत्रों की त्रिनेत्र भगवान् शंकर रक्षा करें, दोनों भौहों की रक्षा गिरिश एवं दोनों कानों की रक्षा भगवान् महेश्वर करें॥१३॥

नासिकां मे महादेव ओष्ठौ पातु वृषध्वजः।
जिह्वां में दक्षिणामूर्तिर्दन्तान् मे गिरिशोऽवतु॥१४॥

महोदव मेरी नासिका की तथा वृषभध्वज मेरे दोनों ओठों की सदा रक्षा करें। दक्षिणामूर्ति मेरी जिह्वा की तथा गिरिश मेरे दाँतों की रक्षा करें॥१४॥

मृत्युञ्जयो मुखं पातु कण्ठं मे नागभूषणः।
पिनाकी मत्करौ पातु त्रिशूली हृदयं मम॥१५॥

मृत्युञ्जय मेरे मुख की एवं नागभूषण भगवान् शिव मेरे कण्ठ की रक्षा करें। पिनाकी मेरे दोनों हाथों की तथा त्रिशूली मेरे हृदय की रक्षा करें॥१५॥

पञ्चवक्त्रः स्तनौ पातु उदरं जगदीश्वरः।
नाभिं पातु विरूपाक्षः पार्श्वे मे पार्वतीपतिः॥१६॥

पञ्चवक्त्र मेरे दोनों स्तनों की और जगदीश्वर मेरे उदर की रक्षा करें। विरूपाक्ष नाभि की और पार्वतीपति पार्श्वभाग की रक्षा करें॥१६॥

कटिद्वयं गिरीशो मे पृष्ठं प्रमथाधिपः।
गुह्यं महेश्वरः पातु ममोरू पातु भैरवः॥१७॥

महेश्वर मेरे गुह्य भाग की और भैरव मेरे दोनों उरुओं की रक्षा करें॥१७॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जानुनी मे जगद्धर्ता जङ्घे मे जगम्बिका।
पादौ मे सततं पातु लोकवन्द्यः सदाशिवः॥१८॥

जगद्धर्ता मेरे दोनों घुटनों की, जगदम्बिका मेरे दोनों जंघों की तथा लोकवन्दनीय सदाशिव निरन्तर मेरे दोनों पैरों की रक्षा करें॥१८॥

गिरीशः पातु मे भार्यां भवः पातु सुतान् मम।
मृत्युञ्जयो ममायुष्यं चित्तं मे गणनायकः॥१९॥

गिरीश मेरी भार्या की रक्षा करें तथा भव मेरे पुत्रों की रक्षा करें। मृत्युञ्जय मेरे आयु की तथा गणनायक मेरे चित्त की रक्षा करें॥१९॥

सर्वाङ्गं मे सदा पातु कालकालः सदाशिवः।
एतत्ते कवचं पुण्यं देवतानां च दुर्लभम्॥२०॥

कालों के काल सदाशिव मेरे सभी अङ्गों की रक्षा करें। [हे वत्स!] देवताओं के लिये भी दुर्लभ इस पवित्र कवच का वर्णन मैंने तुमसे किया है॥२०॥

मृतसञ्जीवनं नाम्ना महादेवेन कीर्तितम्।
सहस्त्रावर्तनं चास्य पुरश्चरणमीरितम्॥२१॥

महोदव जी ने मृतसञ्जीवन नामक इस कवच को कहा है। इस कवच की सहस्त्र आवृत्ति को पुरश्चरण कहा गया है॥२१॥

यः पठेच्छृणुयान्नित्यं श्रावयेत् सुसमाहितः।
सोऽकालमृत्युं निर्जित्य सदायुष्यं समश्नुते॥२२॥

जो अपने मन को सकाग्र करके नित्य इसका पाठ करता है, सुनता अथवा दूसरों को सुनाता है, वह अकाल मृत्यु को जीतकर पूर्ण आयु का उपभोग करता है॥२२॥

हस्तेन वा यदा स्पृष्ट्वा मृतं सञ्जीवयत्यसौ।
आधयो व्याधयस्तस्य न भवन्ति कदाचन॥२३॥

जो व्यक्ति अपने हाथ से मरणासन्न व्यक्ति के शरीर का स्पर्श करते हुए इस मृतसञ्जीवन कवच का पाठ करता है, उस आसन्न मृत्यु प्राणी के भीतर चेतनता आ जाती है। फिर उसे कभी आधि-व्याधि नहीं होतीं॥२३॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कालमृत्युमति प्राप्तमसौ जयति सर्वदा।
अणिमादिगुणैश्वर्यं लभते मानवोत्तमः॥२४॥

यह मृतसञ्जीवन कवच काल के गाल में गये हुए व्यक्ति को भी जीवन प्रदान कर देता है और वह मानवोत्तम अणिमा आदि गुणों से युक्त ऐश्वर्य को प्राप्त करता है॥२४॥

युद्धारम्भे पठित्वेदमष्टाविंशतिवारकम्।
युद्धमध्ये स्थितः शत्रुः सद्यः सर्वैर्न दृश्यते॥२५॥

युद्ध आरम्भ होने के पूर्व जो इस मृतसञ्जीवन कवच का २८ बार पाठ करके रणभूमि में उपस्थित होता है, वह उस समय सभी शत्रुओं से अदृश्य रहता है॥२५॥

न ब्रह्मादीनि चास्त्राणि क्षयं कुर्वन्ति तस्य वै।
विजयं लभते देवयुद्धमध्येऽपि सर्वदा॥२६॥

यदि देवताओं के भी साथ युद्ध छिड़ जाये तो उसमें उसका विनाश ब्रह्मास्त्र भी नहीं कर सकते, वह विजय प्राप्त करता है॥२६॥

प्रातरुत्थाय सततं यः पठेत् कवचं शुभम्।
अक्षय्यं लभते सौख्यमिह लोके परत्र च॥२७॥

जो प्रातःकाल उठकर इस कल्याणकारी कवच का सदा पाठ करता है, उसे इस लोक तथा परलोक में भी अक्षय्य सुख प्राप्त होता है॥२७॥

सर्वव्याधिविनिर्मुक्तः सर्वरोगविवर्जितः।
अजरामरणो भूत्वा सदा षोडशवार्षिकः॥२८॥

वह सम्पूर्ण व्याधियों से मुक्त हो जाता है, सब प्रकार के रोग उसके शरीर से भाग जाते हैं। वह अजर-अमर होकर सदा के लिए सोलह वर्षवाला व्यक्ति बन जाता है॥२८॥

तस्मादिदं महागोप्यं कवचं समुदाहृतम्।
मृतसंजीवनं नाम्ना दैवतैरपि दुर्लभम्॥२९॥

इस लोक में दुर्लभ भोगों को प्राप्त कर सम्पूर्ण लोगों में विचरण करता है। इसलिए इस महागोपनीय कवच को मृतसंजीवन नाम से कहा है। यह देवताओं के लिए भी दुर्लभ है॥२९॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्रीप्रत्यंङ्गिरा कवचम्

देव्युवाच

भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वशास्त्रार्थ पारग।
देव्याः प्रत्यंगिरायाश्चकवचं यत्प्रकाशितम्॥१॥
सर्वार्थसाधनं नाम कथयस्वमयि प्रभो।

॥भैरवउवाच॥

शृणुदेवि प्रवक्ष्यामिकवचं परमाद्भुतम्॥२॥
सर्वार्थसाधनं नाम त्रैलोक्ये चातिदुर्लभं।
सर्वसिद्धिमयं देविसर्वैश्वर्य प्रदायके॥३॥
पठनाच्छ्रवणान्मर्त्यस्त्रैलाक्यैश्वर्य भाग्भवेत्॥
सर्वार्थ-साधकस्यास्य कवचस्य ऋषिः शिवः॥४॥
छंदोविराट् पराशक्ति-र्जदद्धात्री च देवता।
धर्मार्थकाम मोक्षेषुविनियोगः प्रकीर्त्तितः॥५॥
प्रणवं मे शिरः पातु वाग्भवं च ललाटकम्।
ह्रींपातु दक्षनेत्रं मे लक्ष्मीर्वामं सुरेश्वरी॥६॥
प्रत्यंगिरादक्षकर्णं वामेकामेश्वरी तथा।
लक्ष्मीः प्राणं सदापातु बंधनं पातु केशवः॥७॥
गौरी तु रसनां पातु कंठं पातु महेश्वरः।
स्कंधदेशं रतिः पातुभुजौ तु मकरध्वजः॥८॥
शंखनिधिकरः पातुवक्षः पद्मनिधिस्तथा।
ब्राह्मी मध्यं सदापातु नाभिं पातु महेश्वरी॥९॥
कौमारी पृष्ठदेशं तु गुह्यं रक्षतु वैष्णवी।
वाराही च कटिं पातु चैन्द्री पातु पदद्वयम्॥१०॥
भार्यां रक्षतु चामुण्डा लक्ष्मीरक्षतु पुत्रकान्।
इन्द्रः पूर्वेसदापातु आग्नेय्यामग्निदेवता॥११॥
याम्ये यमः सदापातु नैर्ऋत्यां निर्ऋतिस्तथा।
पश्चिमे वरुणः पातु वायव्यां वायुदेवता॥१२॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सौम्यां सोमः सदापातु चैशान्यामीश्वरो विभुः।
ऊर्ध्वं प्रजापतिः पातु ह्यधश्चनं त देवता॥१३॥
राजद्वारे श्मशाने च अरण्येप्रान्तरे तथा।
जलेस्थलेचांतरिक्षे शत्रूणां निवहेतथा॥१४॥
एताभिः सहिता देवी चतुर्बीजामहेश्वरी।
प्रत्यंगिरा म हाशक्तिः सर्वत्र मांसदावतु॥१५॥
इति ते कथितं देवि सारात्सारं परात्परम्।
सवार्थ - साधनं नामकवचं परमाद्भुतम्॥१६॥
अस्यापि पठनात्सद्यः कुबेरोपिधनेश्वरः।
इन्द्राद्याः सकलादेवाः धारणात्पठनाद्यतः॥१७॥
सर्वसिद्धिश्वराः संतः सर्वैश्वर्यवाप्नयुः।
पुष्पांजल्यष्टकं दत्त्वा मूलेनैवकृत्पठेत्॥१८॥
संवत्सरकृतायास्तु पूजायाः फलमाप्नुयात्।
प्रीतिमन्येन्यतः कृत्वा कमलानिश्चलागृहे॥१९॥
वाणी च निवसेद्वक्रेसत्यं न संशयः।
यो धारयतिपुण्यात्मा सर्वार्थ साधनाभिधम्॥२०॥
कवचं परमं पुण्यं सोपिपुण्यवतां वरः।
सर्वेश्वर्य युतौभृत्वा त्रैलोक्य विजयी भवेत्॥२१॥
पुरुषो दक्षिणेबाहौ नारी वामभुजे तथा।
बहुपुत्रवतीभृत्वा धन्यापि लभतेसुतम्॥२२॥
ब्रह्मास्त्रादीनि-शस्त्राणि नैव कृन्तंतितत्तनुम्।
एतत्कवचमज्ञात्वा योजपेत्परमेश्वरीम्॥२३॥
दारिद्र्यं परमं प्राप्यसेचिरान्मृत्युमाप्नुयात्।

इतिश्रीरुद्रयामले तन्त्रपञ्चांगखण्डेप्रत्यंगिरायाः
सर्वार्थसाधनंनाम कवचं समाप्तम्

●●●

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री तारा कवचम्

इस कवच स्तोत्र में भगवती तारा के कई मंत्रों का वर्णन है, साधक उन मंत्रों का अलग से प्रयोग कर सकते हैं।

ईश्वर वाच

कोटितन्त्रेषु गोप्या हि विद्यातिभयमोचिनी।
दिव्यं हि कवचं तस्याः श्रृणुष्व सर्वकामदम्॥१॥

विनियोगः- अस्य श्री ताराकवचस्य अक्षोभ्य ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, भगवती तारा देवता। सर्वमंत्रसिद्धि समृद्धये जपे विनियोगः।

प्रणवो मे शिरः पातु ब्रह्मरूपा महेश्वरी।
ललाटे पातु ह्रींकारो बीजरूपा महेश्वरी॥२॥
स्त्रींकारो वदने नित्यं लज्जारूपा महेश्वरी।
हूँकारः पातु हृदये भवानीरूपशक्तिधृक्॥३॥
फट्कारः पातु सर्वाङ्गे सर्वसिद्धिफलप्रदा।
खर्वा मां पातु देवेशी गण्डयुग्मे भयापहा॥४॥
निम्नोदरी सदा स्कंधयुग्मे पातु महेश्वरी।
व्याघ्रचर्मावृता कट्यां पातु देवी शिवप्रिया॥५॥
पीनोन्नतस्तनी पातु पार्श्वयुग्मे महेश्वरी।
रक्तवर्तुलनेत्रा च कटिदेशे सदाऽवतु॥६॥
ललज्जिह्वा सदा पातु नाभौ मां भुवनेश्वरी।
करालास्या सदा पातु लिङ्गेदेवी हरप्रिया॥७॥
पिङ्गोग्रैकजटा पातु जङ्घायां विघ्ननाशिनी।
प्रेतखर्परभृछेवी जानुवक्रे महेश्वरी॥८॥
नीलवर्णा सदा पातु जानुनी सर्वदा मम।
नागकुण्डलधर्त्री च पातु पादयुगेः ततः॥९॥
नागहार धरा देवी सर्वाङ्गं पातु सर्वदा।
नागकङ्कधरा देवी पातु प्रान्तरदेशतः॥१०॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चतुर्भुजा सदा पातु गमने शत्रुनाशिनी।
खड्गहस्ता महादेवी श्रवणे पातु सर्वदा॥११॥
नीलाम्बरधरा देवी पातु मां विघ्ननाशिनी।
कर्त्रिहस्ता सदा पातु विवादे शत्रुमध्यतः॥१२॥
ब्रह्मरूपधरा देवी संग्रामे पातु सर्वदा।
नागकङ्कणधर्त्री च भोजने पातु सर्वदा॥१३॥
शवकर्णा महादेवी शयने पातु सर्वदा।
वीरासनधरा देवी निद्रायां पातु सर्वदा॥१४॥
धनुर्बाणधरा देवी पातु मां विघ्नसंकुले।
नागाञ्चितकटी पातु देवी मां सर्वकर्मसु॥१५॥
छिन्नमुण्डधरा देवी कानने पातु सर्वदा।
चितामध्यस्थिता देवी मारणे पातु सर्वदा॥१६॥
द्वीपिचर्मधरा देवी पुत्रदारधनादिषु।
अलंङ्कारान्विता देवी पातु मां हरवल्लभा॥१७॥
रक्ष रक्ष नदीकुञ्जे हूं हूं फट् सुसमन्विते।
बीजरूपा महादेवी पर्वते पातु सर्वदा॥१८॥
मणिभृद्वज्रिणी देवी महाप्रतिसरे तथा।
रक्ष रक्ष सदा हूं हूं ॐ ह्रीं स्वाहा महेश्वरी॥१९॥
पुष्पकेतुरजार्हेति कानने पातु सर्वदा।
ॐ ह्रीं वज्रपुष्पं हुं फट् प्रान्तरे सर्वकामदा॥२०॥
ॐ पुष्पे पुष्पे महापुष्पे पातु पुत्रान्महेश्वरी।
हूं स्वाहा शक्तिसंयुक्ता दारान् रक्षतु सर्वदा॥२१॥
ॐ आं हूंस्वाहा महेशानी पातु द्यूते हरप्रिया।
ॐ ह्रीं सर्वविघ्नोत्सारिणी देवी विघ्नान्मां सदाऽवतु॥२२॥
ॐ पवित्रवज्रभूमे हुं फट् स्वाहा समन्विता।
पूरिका पातु मां देवी सर्वविघ्नविनाशिनी॥२३॥
ॐ आः सुरेखे वज्ररेखे हुं फट् स्वाहा समन्विता।
पाताले पातु सा देवी लाकिनी नामसंज्ञिका॥२४॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ह्रींकारी पातु मां पूर्वे शक्तिरूपा महेश्वरी।
स्त्रींकारी पातु देवेशी वधूरूपा महेश्वरी॥२५॥
हूंस्वरूपा महादेवी पातु मां क्रोधेरूपिणी।
फटस्वरूपा महामाया उत्तरे पातु सर्वदा॥२६॥
पश्चिमे पातु मां देवी फट्स्वरूपा हरप्रिया।
मध्ये मां पातु देवेशी हूंस्वरूपा नगात्मजा॥२७॥
नीलवर्णा सदा पातु सर्वतो वाग्भवा सदा।
भवानी पातु भवने सर्वैश्वर्यप्रदायिनी॥२८॥
विद्यादानरता देवी वक्त्रे नीलसरस्वती।
शास्त्रे वादे च संग्रामे जले च विषमे गिरौ॥२९॥
भीमरूपा सदा पातु श्मशाने भयनाशिनी।
भूतप्रेतालये घोरे दुर्गमा श्रीघनाऽवतु॥३०॥
पातु नित्यं महेशानी सर्वत्र शिवदूतिका।
कवचस्य च महात्म्यं नाहं वर्षशतैरपि॥३१॥
शक्नोमि गदितुं देवि भवेत्तस्य फलं च यत्।
पुत्रदारेषु बन्धूनां सर्वदेशे च सर्वदा॥३२॥
न विद्यते भयं तस्य नृपपूज्यो भवेच्च सः।
शुचिर्भूत्वाऽशुचिर्वापि कवचं सर्वकामदम्॥३३॥
प्रपठन् वा स्मरन्मर्त्यो दुःखशोक-विवर्जितः।
सर्वशास्त्रे महेशानि कविराड् भवति ध्रुवम्॥३४॥
सर्ववागीश्वरो मर्त्योलाकवश्यो धनेश्वरः।
रणे द्यूते विवादे च जयस्तत्र भवेद्ध्रुवम्॥३५॥
पुत्रपौत्रान्वितो मर्त्यो विलासी सर्वयोषिताम्।
शत्रवो दासतां यान्तिं सर्वेषां वल्लभः सदा॥३६॥
गर्वी खर्वी भवत्येव वादी स्खलति दर्शनात्।
मृत्युश्च वश्यतां याति दासास्तस्यावनीभुजः॥३७॥
प्रसङ्गात्कथितं सर्वं कवचं सर्वकामदम्।
प्रपठन्वा स्मरन्मर्त्यः शपानुग्रहणे क्षमः॥३८॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आनन्दवृन्द सिन्धूनामधिपः कविराड् भवेत्।
सर्ववागीश्वरो मर्त्यो लोकवश्यः सदा सुखी॥३९॥
गुरोः प्रसादमासाद्य विद्यां प्राप्त सुगोपिताम्।
तत्रापि कवचं देवि दुर्ल्लभं भुवनत्रये॥४०॥
गुरुर्देवो हरः साक्षात्तत्पत्नी तु हरप्रिया।
अभेदेन भजेद्यस्तु तस्य सिद्धिरदूरतः॥४१॥
मंत्राचारा महेशानि कथिताः पूर्ववत्प्रिये।
नाभौ ज्योतिस्तथा रक्तं हृदयोपरि चिन्तयेत्॥४२॥
ऐश्वर्यं सुकवित्वं च महावागीश्वरो नृपः।
नित्यं तस्य महेशानि महिलासङ्गमं चरेत्॥४३॥
पंचाचाररतो मर्त्यः सिद्धो भवति नान्यथा।
शक्तियुक्तो भवेन्मर्त्यः सिद्धो भवति नान्यथा॥४४॥
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ये देवासुरमानुषाः।
तं दृष्ट्वा साधकं देवि लज्जायुक्ता भविन्त ते॥४५॥
स्वर्गे मर्त्ये च पाताले ये देवाः सिद्धिदायकाः।
प्रशंसन्ति सदा देवि तं दृष्ट्वा साधकोत्तमम्॥४६॥
विघ्नात्काश्च ये देवाः स्वर्गे मर्त्ये रसातले।
प्रशंसन्ति सदा सर्वे तं दृष्ट्वा साधकोत्तमम्॥४७॥
इति ते कथितं देवि मया सम्यक्प्रकीर्तितम्।
भुक्तिमुक्तिकरं साक्षात्कल्पवृक्षस्वरूपकम्॥४८॥
आसाद्याद्यगुरुं प्रसाद्य य इदं कल्पद्रुमालम्बनं,
मोहेनापि मदेन चापि रहिता जाड्येन वा युज्यते॥
सिद्धोऽसौ भुवि सर्वदुःखविपदां पारं प्रयात्यन्तके,
मित्रंतस्यनृपाश्च देवि विपदोनश्यन्ति तस्याशु च॥४९॥
तद्गात्रं प्राप्य शस्त्राणि ब्रह्मास्त्रादीनि वै भुवि।
तस्य गेहे स्थिरा लक्ष्मीर्वाणी वक्त्रे वसेद् ध्रुवम्॥५०॥
इदं कवचमज्ञात्वा तारां यो भजते नरः।
अल्पायुर्निर्द्धनो मूर्खो भवत्येव न संशयः॥५१॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लिखित्वा धारयेद्यस्तु कण्ठे वा मस्तके भुजे।
तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्याद्यद्यन्मनसि वर्तते।।५२।।
गोरोचना कुंकुमेन रक्तचन्दनकेन वा।
यावकैर्वा महेशानि लिखेन्मन्त्रं समाहितः।।५३।।
अष्टम्यां मङ्गलदिने चतुर्द्दश्यामथापि वा।
संध्यायां देवदेवेशि लिखेद्यन्त्रं समाहितः।।५४।।
मघायां श्रवणे वापि रेवत्यां वा विशेषतः।
सिंहराशौगते चन्द्रे कर्कटस्थे दिवाकरे।।५५।।
मीनराशौ गुरौ याते वृश्चिकस्थे शनैश्चरे।
लिखित्वा धारयेद्यस्तु उत्तराभिमुखो भवेत्।।५६।।
श्मशाने प्रान्तरे वापि शून्यागारे विशेषतः।
निशायां वा लिखेन्मंत्रं तस्य सिद्धिरचञ्चला।।५७।।
भूर्जपत्रे लिखेन्मंत्रं गुरुणा च महेश्वरि।
ध्यानधारणयोगेन धारयेद्यस्तु भक्तितः।।५८।।
अचिरात्तस्य सिद्धिः स्यान्नात्र कार्या विचारणा।।

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे उग्रताराकवचं समाप्तम्

श्री बालात्रिपुरसन्दरी कवचम्

श्री भैरवी उवाच

देवदेव! महादेव! भक्तानां प्रीतिवर्द्धन!
सूचितं यत् त्वया देव्याः कवचं कथयस्व मे।।1।।

श्री भैरव उवाच

शृणु देवि! प्रवक्ष्यामि कवचं देवदुर्लभम्।
अप्रकाश्यं परं गुह्यं साधकाभीष्ट सिद्धिदम्।।2।।

विनियोगः- अस्य श्री बालात्रिपुरसन्दरी कवचस्य श्री दक्षिणामूर्ति ऋषिः, पंक्तिश्छंदः श्री बालात्रिपुरसन्दरी देवता, ऐं बीजं, सौः शक्ति, क्लीं कीलकं, चतुर्वर्ग साधने पाठे विनियोगः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऋष्यादिन्यासः- श्रीदक्षिणामूर्ति ऋषये नमः शिरसि। पंक्तिश्छंदसे नमः मुखे। श्री बालात्रिपुरसन्दरी देवतायै नमः हृदि।, ऐं बीजाय नमो गुह्ये, सौः शक्तये नमो नाभौ, क्लीं बीजाय नमः पादयोः, चतुर्वर्ग साधने पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु।

षडङ्गन्यासः करन्यास अङ्गन्यासः

ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
क्लीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
सौः	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ऐं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुँ
क्लीं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्रत्रयाय वौषट्
सौः	करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

ध्यानम्

मुक्ताशेखर- कुण्डलाङ्गद मणि-ग्रैवेय-हारोर्मिका
विद्योतद् वलयादि कङ्कणकटिसूत्रां स्फुरन् नूपुराम्।
माणिक्योदर बन्धकम्बु कबरीमिन्दोः कलां विभ्रतीं
पाशं चांकुश पुस्तकाक्ष वलयं दक्षोर्ध्व बाह्वादितः॥

मानसोपचारैः सम्पूज्य कवचं पठेत्-

ऐं वाग्भवं पातु शीर्षं क्लीं कामस्तु तथा हृदि।
सौः शक्तिबीजं च पातु नाभौ गुह्ये च पादयोः॥१॥
ऐं क्लीं सौः वदने पातु बाला मां सर्वसिद्धये।
हसकलह्रीं सौः पातु भैरवी कण्ठदेशतः॥२॥
सुन्दरी नाभि देशेऽव्याच्छीर्षिका सकला सदा।
भ्रू नासयोरन्तराले महात्रिपुरसन्दरी॥३॥
ललाटे सुभगा पातु भगा मां कण्ठदेशतः।
भगा देवी तु हृदये उदरे भगसर्पिणी॥४॥
भगमाला नाभिदेशे लिङ्ग पातु मनोभवा।
गुह्ये पातु महादेवी राजराजेश्वरी शिवा॥५॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चैतन्यरूपिणी पातु पादयोर्जगदम्बिका।
नारायणी सर्वगात्रे सर्वकार्ये शुभङ्करी॥६॥
ब्रह्माणी पातु मां पूर्वे दक्षिणे वैष्णवी तथा।
पश्चिमे पातु वाराही उत्तरे तुमहेश्वरी॥७॥
आग्नेय्यां पातु कौमारी महालक्ष्मीश्चनैर्ऋते।
वायव्यां पातु चामुण्डा इन्द्राणी पातु चेशके॥८॥
जले पातु महामाया पृथिव्यां सर्वमङ्गला।
आकाशे पातु वरदा सर्वतो भुवनेश्वरी॥९॥

॥फलश्रुति॥

इदं तु कवचं नाम देवानामपि दुर्लभम्।
पठेत् प्रातः समुत्थाय शुचिः प्रयत मानसः॥१०॥
नाधयो व्याधयस्तस्य न भयं च क्वचिद् भवेत्।
न च मारीभयं तस्य पातकानां भयं तथा॥११॥
न दारिद्र्यवशं गच्छेत् तिष्ठन्मृत्यु वशे न च।
गच्छेच्छिवपुरे देवि! सत्यं सत्यं वदाम्यहम्॥१२॥
इदं कवचमज्ञात्वा श्रीविद्यां यो जपेच्छिवे।
स माप्नोति फलं तस्य प्राप्नुयाच्छस्त्र घातनम्॥१३॥

॥इति श्रीरुद्रयामल तन्त्रे भैरव-भैरवी संवादे श्रीबाला त्रिपुरसुन्दरी कवचम्॥

श्री सौभाग्य कवच स्तोत्रम्

कैलास शिखरे रम्ये सुखासीनं सुरार्चितम्,
गिरीशं गिरिजा स्तुत्वा स्तोत्रैर्वेदान्त पारगैः।
प्रणम्य परया भक्त्या तमपृच्छत् कृतांजलिः,
रहस्यं रक्षणं किं वा सर्व सम्पत्करं वद॥१॥

॥श्रीशिवोवाच॥

शृणु देवि! प्रवक्ष्यामि यस्मात् त्वं परिपृच्छसि,
यस्य श्रवण मात्रेण भवभीतिर्न जायते।
एतत् सौभाग्य कवचं रहस्याति रहस्यकम्,
सौभाग्यकवचं देवि! शृणु सौभाग्यदायकम्॥२॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विनियोग:- ॐ अस्य श्रीसौभाग्य कवच स्तोत्रस्य श्रीआनन्द भैरवो ऋषि:। अनुष्टुप् छन्द:। श्रीसौभाग्य सुन्दरी देवता। ॐ क्लीं सौ: बीजं। ह्रीं क्लीं शक्ति:। आं ह्रीं क्रों कीलकं। सर्वसौभाग्य सिद्ध्यर्थे पाठे विनियोग:।

ऋष्यादिन्यास:- शिरसि श्रीआनन्दभैरवाय ऋषये नम:। मुखे अनुष्टुप्छन्दसे नम:। हृदि श्री सौभाग्यसुन्दरी देवतायै नम:। गुह्ये ॐ क्लीं सौ: बीजाय नम:। पादयो ह्रीं क्लीं शक्तये नम:। नाभौ आं ह्रीं क्रों कीलकाय नम:। सर्वाङ्गे सर्व सौभाग्य सिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगाय नम:।

षडङ्गन्यास: करन्सास अङ्गन्यास:

ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नम:	हृदयाय नम:
क्लीं	तर्जनीभ्यां नम:	शिरसे स्वाहा
सौ:	मध्यमाभ्यां नम:	शिखायै वषट्
ऐं	अनामिकाभ्यां नम:	कवचाय हुँ
क्लीं	कनिष्ठिकाभ्यां नम:	नेत्रत्रयाय वौषट्
सौ:	करतलकरपृष्ठाभ्यां नम:	अस्त्राय फट्

ध्यानम्

ऐहिक परफलदात्रीमैशानीं मानसी भावये मुद्राम्।
ऐन्दव - कलावतंसामैश्वर्य स्फुरण परिणतिं जगताम्॥१॥
क्लीवत्व-दैत्यहन्त्रीं क्लिन्नमनस्कां महेश्वराश्लिष्टाम्।
क्लृप्त जनेष्टकर्त्रीं कल्पित लोकप्रभां नमामि कलाम्॥२॥
सौभाग्यदिव्यक-निधिं सौरभ कचवृन्द विचलदलिमालाम्।
सौशील्यशेष तल्पां सौन्दर्यविभा - मंजरीं कलये॥३॥
पाशपाणि सृणि पाणि भावये चापपाणि शरपाणि दैवतम्।
यत्प्रभा पटल - पाटलं जगत् - पद्मरागमणिमण्डपायते॥४॥
हेमाद्रौ हेमपीठ - स्थितामखिल - सुरैरीड्यमानां विराजत्।
पुष्पेष्विष्वास पाशांकुश करकमलां रक्तवेषाति - रक्ताम्॥५॥
दिक्षूद्यद्भि श्चतुर्भिर्मणिमय - कलशैः पञ्चशक्त्याञ्चितैः।
स्वभ्रष्टैः क्लृप्ताभिषेकां भजत भगवतीं भूतिदामन्त्य यामे॥६॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री महात्रिपुरसुन्दरी कवचम्

श्री ईश्वर उवाच

शृणु देवि! प्रवक्ष्यामि कवचं सुन्दरी प्रियम्।
रहस्यामि रहस्यं च मन्त्ररूपमिदं प्रिये॥

श्रीपार्वत्युवाच

भगवन! सर्वलोकेश! सर्वलोकैक वन्दित!
गुह्याद् गुह्यतमं तत्त्वं श्रोतुमिच्छामि तत्त्वतः॥

विनियोगः- अस्य श्री महात्रिपुरसुन्दरी कवच स्तोत्र मंत्रस्य श्री दक्षिणामूर्ति ऋषिः, अनुष्टुप्छंदः, श्री महात्रिपुरसन्दरी देवता, ऐं-५ कएईल ह्रीं बीजं, क्लीं-६ हसकहल ह्रीं कीलकं, सौः स-४ सकल ह्रीं शक्तिः, सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थं श्री महात्रिपुरसुन्दरी कवच स्तोत्र पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासं कृत्वा मूलमन्त्रेण षडङ्गन्यासं कुर्यात्।

ध्यानम्

स कुंकुम - विलेपनामलिक - चुम्बिकस्तूरिकाम्
स - मन्द - हसितेक्षणां स शरचाप पाशाङ्कुशाम्।
अशेष जन मोहिनीमरूण - माल्य - भूषाम्बरां
जपाकुसुम भासुरां जप विधौ स्मरेदम्बिकाम्॥१॥
चतुर्भुजे! चन्द्रकलावतंसे कुचोन्नते कुंकुम रागशोणे।
पुण्ड्रेक्षु पाशांकुश पुष्पवाण हस्ते नमस्ते जगदेकमातः॥२॥

मानसोपचारेण भगवती सम्पूज्य विधिना कवचं पठेत्-

ककारः पातु शीर्षं मे एकारः पातु फालके।
ईकारः पातु वक्त्रं मे लकारः कूर्पयुग्मके॥१॥
ह्रींकारः पातु हृदयं वाग्भवश्च सदाऽवतु।
हकारः पातु जठरं सकारो नाभि देशके॥२॥
ककारः पार्श्वभागे च हकारः पातु पृष्ठके।
लकारश्च नितम्बके मे ह्रींकारः पातु मूलके॥३॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कामराजः सदापातु जठरादि प्रदेशके।
सकारः पातु कट्यां मे ककारः पातु लिङ्गके॥४॥
लकारो जानुनी पातु ह्रींङ्कारो जङ्घ युग्मके।
शक्तिबीजं सदा पातु मूलविद्या सदाऽवतु॥५॥
त्रिपुरा मां सदा पातु त्रिपुरेशी च सर्वदा।
त्रिपुरासुन्दरी पातु वसुपत्रस्य देवता॥६॥
त्रिपुरावासिनी पातु त्रिपुराश्रीः सदाऽवतु।
त्रिपुरामालिनी पातु त्रिपुरा सिद्धिसदाऽवतु॥७॥
त्रिपुरा तथा पातु पातु त्रिपुराभैरवी।
अणिमाद्यास्तथा पांतु ब्राह्म्याद्याः पातु मां सदा॥८॥
नवमुद्रास्तथा पान्तु कामाकर्षणि पूर्विकाः।
पान्तु मां षोडशारे तु अनङ्गकुसुमादिकाः॥९॥
पान्तु मामष्टपत्रेषु सर्वसंक्षोभणादिकाः।
पान्तु चक्रकोणेषु सर्वसिद्धि प्रदायिकाः॥१०॥
पान्तु मां बाह्यकोणेषु मध्यादि कोणके तथा।
सर्वज्ञाद्यास्तथा पान्तु सर्वाभीष्ट प्रपूरिकाः॥११॥
वशिन्याद्यास्तथा पान्तुवसु पत्रस्य देवताः।
त्रिकोणस्यान्तरालेषु पान्तु मामायुधानि च॥१२॥
कामेश्वर्यादिकाः पांतु त्रिकोणे कोण संस्थिताः।
विन्दुचक्रे तथा पातु श्रीमत् त्रिपुरसुन्दरी॥१३॥
इदं श्रीकवचं नित्यं त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नर।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति सर्वाभीष्ट फलप्रदम्॥१४॥

इति श्री महात्रिपुर-सुन्दरी कवचं सम्पूर्णम्

●●●

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्रीपरा महायोनि कवचम्

ॐ नमः शिवाय गुरवे नाद विन्दुकलात्मने।
श्रीगणेशाय नमः। श्रीमन्महात्रिपुर सुन्दर्यै नमः।

श्रीभैरव उवाच

क्रमदीक्षा विधानानि मयोक्तानि महेश्वरि!
त्वयात्मनः कुलागारे कवचं यत् सुगोपितं॥१॥
अधुना कृपया त्वं च तत् सर्वं वक्तुमर्हसि।

श्रीभैरव्युवाच

शृणु! प्रवक्ष्यामि तन्त्रसारमिदं महत्॥२॥
एतच्छ्री कवचस्यास्य परब्रह्म ऋषिः शिवः।
महती जगतीच्छन्दश्चिच्छरिक्तिर्देवतोच्यते॥३॥
ऐं बीजं ह्रीं तथा शक्तिः सकलह्रीं कीलकं तथा।
परब्रह्म प्राप्ति हेतौ विनियोगः प्रकीर्तितः॥४॥

ऋष्यादिन्यासं कृत्वा कवचं पठेत्। यथा–

ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं फट् उग्रतारा मूलाधारं ममावतु।
ह्रीं भुवनेश्वरी पातु स्वाधिष्ठानं च मे सदा॥५॥
क्रीं हूं ह्रीं दक्षिणा पातु मणिपुरं तथा मम।
नमो भगवत्यै हस्ख्फ्रें कुब्जिकायै
स्ह्रां स्ह्रीं स्ह्रूं ङञणन मे अघोरा।
मुखि छांछीं किणि किणि विच्चे॥६॥
अनाहतं सदा पातु कुब्जिका परमेश्वरी।
फ्रं ख्फ्रें गुह्यकाली सा विशुद्धं मे च रक्षतु॥७॥
कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं श्रीं।
आज्ञाचक्रं महादेवी षोडशी पातु मे सदा॥८॥
हस्क्ष्म्लवरयूँ स्हक्ष्म्लवरयीं नादचक्रं।
च मे पातु श्रीमदानन्दभैरवः॥९॥
हसौः स्हौः अर्धनारीश्वरी बिन्दुश्च मेऽवतु।
हंसः सोऽहं सदापातु सहस्रारं सदा मम॥१०॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं श्रीं।
शिरो मे पातु सा देवी महात्रिपुरसुन्दरी॥११॥
कएईलह्रीं कामेशी भ्रूमध्यं मे सदाऽवतु।
हसकहलह्रीं वज्रेशी दक्षनेत्रं सदाऽवतु॥१२।
सकलह्रीं वामनेत्रं रक्षतु भगमालिनी।
ह्स्त्रें हसकलह्रीं ह्सौः त्रिनेत्रं पातु भैरवी॥१३॥
ह्रीं श्रीं सौः त्रिपुरासिद्धा कर्णौ म परिरक्षतु।
ह्रीं क्लीं क्षुं मां सदा पातु मुखं त्रिपुरमालिनी॥१४॥
हसैं हस्क्लीं हसौं कण्ठं पातु श्रीत्रिपुराश्रीर्मे हैं।
हक्लीं हसौं पातु वक्षस्त्रिपुरवासिनी॥१५॥
दौबारिजौ सदापातु ह्यणिमाद्यष्ट सिद्धयः।
ह्रीं क्लीं सौः पातु मे नाभिं परा त्रिपुरसन्दरी॥१६॥
दशमुद्रायुता देवी ममोरू पातु सर्वदा।
ऐं क्लीं सौः पातु म जानू श्रीमहात्रिपुरेश्वरी॥१७॥
षड्दर्शनं सदापातु जङ्घायुग्मं च सर्वदा।
अं आं सौः त्रिपुरा पातु पादौ च सततं नमः॥१८॥
ॐ ह्रीं श्रीं पातु मां पूर्वे श्रीमहाभुवनेश्वरी
कएईलह्रीं दक्षिणे मां पराऽऽद्या परिरक्षतु॥१९॥
सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं श्रीकुजापश्चिमे मांसदाऽवतु।
श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः चोत्तरे मां पातु योगे श्वरी परा॥२०॥
हसकहलह्रीं पातु मामधो वज्रयोगिनी।
सकलह्रीं सा ललिता ह्यूर्ध्वे मां परिरक्षतु॥२१॥
श्रीं 5 ॐ 3 क 5 ह 6 स 4 सौः 5 सदाऽवतु।
सर्वाङ्गं मे च चिद्रूपा महात्रिपुर सुन्दरी॥२२॥

(टीका-ॐ३=ॐह्रीं श्रीं। स४=सकल ह्रीं। क५=कएईलल ह्रीं। श्रीं५=श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः। सौः ५= सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं। ह ६ = हसकहल ह्रीं।)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फलश्रुति

इति ते कथितं देव! ब्रह्मानन्द मयं परं।
श्रीमहायोनिराख्यातं कवचं देवदुर्लभम्।।२३।।
मम तेजसा रचितं श्रीविद्या क्रम संयुतम्।
तव स्नेहान्महादेव तवाग्रे तु मयोदितम्।।२४।।
राज्यं देयं शिरो देयं न देयं कवचं परम्।
देयं पूर्णाभिषिक्ताय स्वशिष्याय महेश्वर।।२५।।
अन्यथा नारकी भूयात् कल्प कोटि शतैरपि।
दिक्सहस्त्रेण पाठेन ह्यसाध्यं साध्यते क्षणात्।।२६।।
लक्षं जप्त्वा महादेव तद्दशांशं हुनेद् यदि।
ब्रह्मज्ञानमवाप्नोति परब्रह्मणि लीयते।।२७।।
भूर्जे विलिख्य गुटिकां स्वर्णस्थां धारयेद् यदि।
कण्ठे वा दक्षिणे बाहौ साक्षात् कामेश्वरो भवेत्।
नारी वामभुजे धृत्वा भवेत् त्रिपुर सुन्दरी।।२८।।

ॐ तत्सत् श्रीमहानिर्वाणतन्त्रे श्रीमहायोनि
नाम श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरी कवचम्

श्री षोडशी कवच स्तोत्रम्

श्री देव्युवाच

देव देव महादेव भक्तानां प्रीतिवर्द्धनं।
सूचितं यन् महादेव्याः कवचं कथयस्व मे।।

श्रीमहादेव उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं देव दुर्लभं।
न प्रकाश्यं परंगुह्यं साधकाभीष्ट सिद्धिदं।।
कवचस्य ऋषिर्देवि दक्षिणामूर्तिरव्ययः।
छन्दः पंक्ति समुद्दिष्टं देवी त्रिपुरसुन्दरी।।
धर्मार्थ काम मोक्षाणां विनियोगस्तु साधने।
वाग्भवः कामराजश्च शक्ति बीजं सुरेश्वरि।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कवच स्तोत्रम्

वाग्भवः पातु शीर्षे मां कामराजस्तथा हृदि।
शक्ति बीजं सदा पातु नाभौ गुह्यै च पादयोः॥
ऐं क्लीं सौः वदने पातु बाला मां सर्वसिद्धये।
ह्सौः सकलह्रीं पातु भैरवी कण्ठ देशतः।
सुंदरी नाभिदेशे च शीर्षे कामकला सदा।
भ्रू नासयोरन्तराले महात्रिपुरसन्दरी॥
ललाटे सुभगा पातु भगा मां कण्ठदेशतः।
भगोदया च हृदये उदरे भग सर्पिणी॥
भगमाला नाभिदेशे लिङ्ग पातु मनोभवा।
गुह्ये पातु महादेवी राजराजेश्वरी शिवा॥
चैतन्य रूपिणी पातु पादयोर्जगदम्बिका।
नारायणी सर्वगात्रे सर्वकार्ये शुभङ्करी॥
ब्रह्माणी पातु मां पूर्वे दक्षिणे वैष्णवी तथा।
पश्चिमे पातु वाराही उत्तरे तु महेश्वरी॥
आग्नय्यां पातु कौमारी महालक्ष्मीस्तु नैर्ऋते।
वायव्यां पातु चामुण्डा इन्द्राणी पातु ईशके॥
जले पातु महामाया पृथिव्यां सर्वमङ्गा।
आकाशे पातु वरदा सर्वत्र भुवनेश्वरी॥

फलश्रुति

इदं तु कवचं देव्या देवानामपि दुर्लभम्।
पठेत् प्रातः समुत्थाय शुचिर्प्रयत मानसः॥
नाधयों व्याधयस्तस्य न भयं च कश्चिद भवेत्।
न च मारीभयं तस्य पातकानां भयं तथा॥
न दारिद्र्यवशं गच्छेत् तिष्ठेन्मृत्युवशे न च।
गच्छेच्छिवपुरं देवि सत्यं सत्यं वदाम्यहं॥
इदं कवचमज्ञात्वा श्री विद्यां यो जपेत् सदा।
स नाप्नोति फलं तस्य प्राप्नुयाच्छस्त्र घातनं॥

इति सिद्ध यामले श्री षोडशी कवचं सम्पूर्णम्

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री षोडशी कवच स्तोत्रम्

श्री देव्युवाच

भगवन् देव-देवेश लोकानुग्रह कारक
त्वत्प्रसादान्महादेव श्रुता मन्त्रास्तवनेकधा।
साधनं विविधं देव कीलकोद्धरण तथा
शापादि दूषणोद्धारः श्रुतस्त्वत्तो मया प्रभो।
राजराजेश्वरी देव्याः कवचं सञ्चितं मया
श्रोतुमिच्छामि त्वत्तस्तत्कथयस्व दयानिधे॥

श्रीईश्वरोवाच

लक्षवारसहस्त्राणि वारिताऽसि पुनः पुनः
स्त्रीस्वभावात् पुनर्देवि पृच्छसि त्वं मम प्रिये।
अत्यन्तगुह्यं कवचं सर्वकामफलप्रदं प्रीतये
तव देवेशि कथयामि शृणुष्व तत्॥

विनियोगः :- अस्य षोडशी कवचस्य श्रीमहादेव ऋषिः, प्रस्तार पंक्तिश्छन्दः, श्री रांजराजेश्ववरी महात्रिपुरसुन्दरी देवता। धर्मार्थ काम मोक्ष साधने पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः

श्रीमहादेव ऋषये नमः शिरसि। प्रस्तार पंक्तिश्चन्दसे नमः मुखे। श्री राजराजेश्वरी महात्रिपुरसुन्दरी देवतायै नमः हृदि। सर्वार्थ काम मोक्ष साधने पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

कवच स्तोत्रम्

पूर्वे मां भैरवी पातु बाला मां पातु दक्षिणे,
मालिनी पश्चिचमे पातु त्रासिनी तूत्तरेऽवतु॥
ऊर्ध्वं पातु महादेवी महात्रिपुरसुन्दरी,
अधस्तात् पातु देवेशी पातालातल वासिनी॥
आधारे वाग्भवः पातु कामराजस्तथा हृदि,
डामरः पातु मां नित्यं मस्तके सर्व कामदः॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ब्रह्मरन्ध्रे सर्वगात्रे छिद्रस्थाने च सर्वदा,
महाविद्या भगवती पातु मां परमेश्वरी॥
ऐं ह्रीं ललाटे मां पातु क्लीं क्लुं सश्च नेत्रयोः,
नासायां मे कर्णयोश्च द्रीं द्रैं द्रां द्रीं चिबुकेतथा॥
स ह्रीं मां सर्वतः पातु सकली पातु सन्धिषु,
जल स्थले तथाकाशे दिक्षु राजगृहे तथा॥
हूं क्षेमा त्वरिता पातु स ह्रीं स क्लीं
मनोभवा हंसः पायान्महादेवि परं निष्कल देवता॥
विजया मंगला दूती कल्याणी भगमालिनी,
ज्वाला च मालिनी नित्या सर्वदा पातु मां शिवा॥
इत्येवं कवचं देवि देवानामपि दुर्लभं,
तव प्रीत्या मयाख्यातं गोपनीयं प्रयत्नतः॥
इदं रहस्यं परमं गुह्याद् गृह्यातरं प्रिये,
धन्यं यशस्यमायुष्यं भोग मोक्षं प्रद शिवे॥
दुःस्वप्न नाशनं पुण्यं नर-नारी वशङ्करम्,
आकर्षणकरं देवि स्तम्भोच्चाटकं शिवे॥
इदं कवचमज्ञात्वा राजराजेश्वरीं पराम्,
योऽर्चयेद् यागिनी वृन्दैः स भक्ष्यो नात्र संशयः॥
न तस्य मन्त्रसिद्धिः स्यात् कदाचिदपि शांकरि,
इह लोके च दारिद्र्यं रोगदुःखाशुभानि च॥
परत्र नरकं गत्वा पशु योनिमवाप्नुयात्,
तस्मादेतत् सदाभ्यासादधिकारी भवेत् किल॥
मद्वक्त्र निर्गतमिदं कवचं सुपुण्यं,
पूजाविधेश्च पुरतो विधिना पठेद्यः॥
सौभाग्य भाग ललितानि शुभानि भुक्त्वा,
देव्याः पदं भजति तत् पुनरन्तकाले॥

कुलानन्द संहितायां षोडशीकवचं सम्पूर्णम्

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भुवनेश्वरी त्रैलोक्य मंगल कवचम्

इस कवच में दुर्गा, भुवनेश्वरी एवं त्रिपुरा के मंत्रों का मंत्रोद्धार है।

श्री देव्युवाच

भुवनेश्याश्च देवेश! या या विद्या प्रकाशिताः।
श्रुताश्चाधिगताः सर्वाः श्रोतुमिच्छामि सांप्रतं॥१॥
त्रैलाक्य मङ्गलं नाम कवचं यत् पुरोदितम्।
कथयस्व महादेव! मम प्रीतिकरं परम्॥२॥

ईश्वर उवाच

शृणु पार्वति! वक्ष्यामि सावधानाऽवधारय।
त्रैलोक्यमङ्गलं नाम कवचं मन्त्र विग्रहम्॥३॥
सिद्धविद्यामयं देवि! सर्वैश्वर्य प्रदायकम्।
पठनाद् धारणान्मर्त्य स्त्रैलेक्यैश्वर्यवान् भवेत्॥४॥
त्रैलोक्य मंगलस्यास्य कवचस्य ऋषिशिवः,
छन्दो विराट् जगद्धात्री देवता भुवनेश्ववरी।
धर्मार्थ काम मोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः॥५॥

कवच स्तोत्र

ह्रीं बीजं मे शिरः पातु भुवनेशी ललाटकम्।
ऐं पातु दक्ष नेत्रं मे ह्रीं पातु वाम लोचनम्॥१॥
श्रीं पातु दक्षकर्णं मे त्रिवर्णात्मा महेश्वरी।
वामकर्णं सदा पातु ऐं घ्राणं पातु मे सदा॥२॥
ह्रीं पातु वदनं देवी ऐं पातु रसनां मम।
वाक्पुटा च त्रिवर्णात्मा कण्ठं पातु पराम्बिका॥३॥
श्रींस्कन्धौ पातु नियतं ह्रीं भुजौ पातु सर्वदा।
क्लीं करौ त्रिपुरेशानी त्रिपुरैश्वर्य दायिनी॥४॥
ॐ पातु हृदयं ह्रीं मे मध्यदेशं सदाऽवतु।
क्रों पातु नाभि देशं सा त्र्यक्षरी भुवनेश्वरी॥५॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सर्व - बीजप्रभा पृष्ठं पातु सर्ववशङ्करी।
ह्रीं पातु गुह्यदेशं मे नमो भगवती कटिम्॥६॥
माहेश्वरी सदा पातु सक्थिनी जानुयुग्मकम्।
अन्नपूर्णा सदापातु स्वाहा पातु पदद्वयम्॥७॥
सप्तदशाक्षरी पायादन्नपूर्णाऽखिलं वपुः तारं।
माया रमा कामः षोडशार्णा ततः परं॥८॥
शिरःस्था सर्वदा पातु विंशत्यर्णात्मिका परा।
तारं दुर्गे युगं रक्षिणि स्वाहेति दशाक्षरी॥९॥
जयदुर्गा घनश्यामा पातु मां पूर्वतो मुदा।
माया - बीजादिका चैषा दशार्णा च परा तथा॥१०॥
उत्तप्त काञ्चनाभासा जय दुर्गाऽनलेऽवतु।
तारं ह्रीं दुं दुर्गायै नमोऽष्टवर्णात्मिका परा॥११॥
शङ्खचक्र धनुर्बाण-धरा मां दक्षिणेऽवतु।
महिष मर्दिनी स्वाहा वसु वर्णात्मिका परा॥१२॥
नैर्ऋत्यां सर्वदा पातु महिषासुर-नाशिनी।
माया पद्मावती स्वाहा सप्तार्णा परिकीर्तिता॥१३॥
पद्मावती पद्मसंस्था पश्चिमे मां सदाऽवतु।
पाशांकुश-पुटा मायेति परमेश्वरि स्वाहा॥१४॥
त्रयोदशार्णा ताराद्या अश्वारूढाऽनिलेऽवतु।
सरस्वती पञ्चस्वरे नित्यक्लिन्ने मदद्रवे॥१५॥
स्वाहा च त्र्यक्षरी विद्या मामुत्तरे सदाऽवतु।
तारं माया तु कवचं खे रक्षेत् सततं वधूः॥१६॥
हूं क्षें ह्रीं फट् महाविद्या द्वादशार्णाऽखिलप्रदा।
त्वरिताष्टादिभिः पायाच्छिव कोणे सदा च मां॥१७॥
ऐं क्लीं सौः सततं बाला मामूर्ध्व देशतोऽवतु।
विन्द्वन्ता भैरवी बाला भूमौ च मां सदाऽवतु॥१८॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फलश्रुति

इति ते कथितं पुण्यं त्रैलोक्य मङ्गल परं।
सारात् सारतरं पुण्यं महाविद्यौघ विग्रहम्।।१।।
अस्य हि पठनात् सद्यः कुबेरोऽपि धनेश्वरः।
इन्द्राद्याः सकला देवाः पठनाद धारणाद्यतः।।२।।
सर्वसिद्धीश्वराः सन्तः सर्वैश्वर्यमवाप्नुयुः।
पुष्पांजल्यष्टकं दत्वा मूलेनैव पठेत् सकृत्।।३।।
संवत्सर कृतायास्तु पूजायाः फलमाप्नुयात्।
प्रीतिमान् योऽन्यतः कृत्वा कमला निश्चला गृहे।।४।।
वाणी च निवसेद् वक्त्रे सत्यं न संशयः।
यो धारयति पुण्यात्मा त्रैलोक्य मङ्गलाभिधम्।।५।।
कवचं परमं पुण्यं सोऽपि पुण्यवतां वरः।
सर्वैश्वर्ययुतो भूत्वा त्रैलोक्यविजयी भवेत्।।६।।
पुरुषो दक्षिणे-बाहौ नारी वामभुजे तथा।
बहुपुत्रवती भूत्वा वन्ध्याऽपि लभते सुतम्।।७।।
ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि नैव कृन्तन्ति तं जनम्।
एतत् कवचमज्ञात्वा यो जपेद् भुवनेश्वरीम्।।
दारिद्र्यं परमं प्राप्य सोऽचिरान्मृत्युमाप्नुयात्।।

भुवनेश्वरी त्रैलोक्य मोहन कवचम्

श्री देव्युवाच

भगवन् परमेशान, सर्वागम विशारद,
कवचं भुवनेश्वर्याः कथयस्व महेश्वर!

श्रीभैरव उवाच

शृणु देवि महेशानि! कवचं सर्वकामदं
त्रैलोक्य मोहनं नाम सर्वेप्सित फलप्रदं।

विनियोगः-ॐ अस्य श्रीत्रैलोक्यमोहन कवचस्य श्रीसदाशिव ऋषिः। विराट् छन्दः। श्रीभुवनेश्ववरी देवता। चतुवर्ग सिद्ध्यर्थं कवच पाठे विनियोगः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऋष्यादिन्यास :- श्रीसदाशिव ऋषये नमः शिरसि। विराट् छन्दसे नमः मुखे। श्रीभुवनेश्वरी देवतायै नमः हृदि। चतुर्वर्ग सिद्ध्यर्थं कवच पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

कवचस्तोत्र

ॐ ह्रीं क्लीं मे शिरः पातु श्रीं फट् पातु ललाटकम्।
सिद्धपञ्चाक्षरी पायान्नेत्रे मे भुवनेश्वरी॥१॥
श्रीं क्लीं ह्रीं मे श्रुतीः पातु नमः पातु च नासिकाम्।
देवी षडक्षरी पातु वदनं मुण्डभूषणा॥२॥
ॐ ह्रीं श्रीं ऐं पातु जिह्वां गलं पायान्महेश्वरी।
ऐं स्कन्धौ पातुमे देवी महात्रिभुवनेश्वरी॥३॥
ह्रूं घण्टां मे सदा पातु देव्येकाक्षर रूपिणी।
ऐं ह्रीं श्रीं हूं तु फट् पायादीश्वरी मे भुजद्वयम्॥४॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं फट् पायाद् भुवनेशी स्तन द्वयम्।
ह्रां ह्रीं ऐं फट् महामाया देवी च हृदयं मम॥५॥
ऐं ह्रीं श्रीं हूं तु फट् पायात् पार्श्वौ कामस्वरूपिणी।
ॐ ह्रीं क्लीं ऐं नमः पायात् कुक्षिं महाषडक्षरी॥६॥
ऐं सौः ऐं ऐं क्लीं फट् स्वाहा कटिदेशे सदाऽवतु।
अष्टाक्षरी महाविद्या देवशी भुवनेश्वरी॥७॥
ॐ ह्रीं ह्रौं ऐं श्रीं ह्रीं फट् पायान्मे गुह्यस्थलं सदा।
षडक्षरी महाविद्या साक्षाद् ब्रह्मस्वरूपिणी॥८॥
ऐं ह्रां ह्रौ ह्रूं नमो देव्यै देवि!
सर्वं पदं ततः, दुस्तरं पदं तारय तारय प्रणवद्वयम्।
स्वाहा इति महाविद्या जानुनि मे सदाऽवतु॥९॥
ऐं सौः ॐ ऐं क्लीं फट् स्वाहा जंघेऽव्याद् भुवनेश्वरी।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं फट् पायात् पादौ मे भुवनेश्वरी॥१०॥
ॐ ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं क्लीं क्लीं ऐं ऐं सौः सौः वद वद।
वाग्वादिनीति च देवि विद्या या विश्वव्यापिनी॥११॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सैः सैः सैः ऐंऐंऐं क्लीं क्लीं क्लीं श्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ।
ॐ ॐ चतुर्दशात्मिका विद्या पायात् बाहू तु मे॥१२॥
सकलं सर्वभीतिभ्यः शरीरं भुवनेश्वरी।
ॐ ह्रीं श्रीं इन्द्रदिग्भागे पायान्मे चापराजिता ॥१३॥
स्त्रीं ऐं ह्रीं विजया पायादिन्दुमदग्नि दिक्स्थले।
ॐ श्रीं सौः क्लीं जया पातु याम्यां मां कवचान्वितम्॥१४॥
ह्रीं ह्रीं ऐं सौः ह्सौः पायान्नैर्ऋतिर्मां तु परात्मिका।
ॐ श्रीं श्रीं ह्रीं सदापायात् पश्चिमे ब्रह्मरूपिणी॥१५॥
ॐ ह्रां ऐं सौः मां भयाद् रक्षद् वायव्यां मन्त्ररूपिणी।
ऐं क्लीं श्रीं सौः सदाऽव्यान्मां कौवेर्यां नगनन्दिनी॥१६॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महादेवी ऐशान्यां पातु नित्यशः।
ॐ ह्रीं मन्त्रमयी विद्या पायादूर्ध्वं सुरेश्वरी॥१७॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं मां पायादधस्था भुवनेश्वरी।
एं वं दशदिशो रक्षेत् सर्वमन्त्रमयी शिवा॥१८॥
प्रभाते पातु चामुण्डा श्रीं क्लीं ऐं सौः स्वरूपिणी।
मध्याह्नेऽव्यान्मामम्बा श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः स्वरूपिणी॥१९॥
सायं पायादुमा देवी ऐं ह्रीं क्लीं सौः स्वरूपिणी।
निशादौ पातु रुद्राणी ॐ क्लीं क्रीं सौः स्वरूपिणी॥२०॥
निशीथे पातु ब्रह्माणी क्रीं ह्रूं ह्रीं ह्रीं स्वरूपिणी।
निशान्ते वैष्णवी पायादो मैं ह्रीं क्लीं स्वरूपिणी॥२१॥
सर्वकाले च मां पायादो ॐ ह्रीं श्रीं भुवने श्वरी।
एषा विद्या मया गुप्ता तन्त्रेभ्यश्चापि साम्प्रतम्॥२२॥

फलश्रुति

देवेशि! कथितां तुभ्यं कवचेच्छा त्वयि प्रिये!
इति ते कथितं देवि! गुह्यतर परं।
त्रैलोक्यमोहनं नाम कवचं मन्त्रविग्रहं,
ब्रह्मविद्यामयं भद्रे! केवलं ब्रह्मरूपिणं॥१॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मन्त्रविद्या मयं चैव कवचं मन्मुखोदितं,
गुरुमभ्यर्च्यं विधिवत् कवचं धारयेद्यदि।
साधको वै यथा ध्यानं तत्क्षणाद् भैरवो भवेत्,
सर्वपापविनिर्मुक्तः कुलकोटि समुद्धरेत्॥२॥
गुरु स्यात् सर्वविद्यासु ह्यधिकारो जपादिषु,
शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्या विधिः स्मृता।
शतमष्टोत्तरं जप्त्वा तावद्धोमादिकं तथा,
त्रैलोक्ये विचरेद्वीरो गणनाथो यथा स्वयं॥३॥
गद्य-पद्यमयी वाणी भवेद् गङ्गाप्रवाहवत्,
पुष्पाञ्जल्यष्टकं दत्वा मूलेनैव पठेत् सकृत्॥४॥

अथ श्री भैरवी त्रैलोक्य विजय कवचम्

श्री देव्युवाच

भैरव्याः सकला विद्याः श्रुताश्चाधिगता मया।
सांप्रतं श्रोतुमिच्छामि कवचं यत्पुरोदितम्॥१॥
त्रैलाक्यविजयं नाम शस्त्रास्त्रविनिवारणम्।
त्वत्तः परतरो नाथ कः कृपां कर्तुमर्हति॥२॥

॥ईश्वर उवाच॥

शृणु पार्वति वक्ष्यामि सुन्दरी प्राणवल्लभे।
त्रैलोक्यविजयं नाम शस्त्रास्त्रविनिवारकम्॥३॥
पठित्वा धारयित्वेदं त्रैलाक्यविजयी भवेत्।
जघान सकलान्दैत्यान् यद्धृत्वा मधुसूदनः॥४॥
ब्रह्मासृष्टिं वितनुते यद्धृत्वाभीष्टदायकम्।
धनाधिपः कुबेरोऽपि वासवस्त्रिदशेश्वरः॥५॥
यस्य प्रसादादीशोऽहं त्रैलोक्यविजयी विभुः।
न देयं परशिष्येभ्योऽसाधकेभ्यः कदाचन॥६॥
पुत्रेभ्यः किमथान्येभ्यो दद्याच्चेन्मृत्युमाप्नुयात्।
ऋषिस्तु कवचस्यास्य दक्षिणामूर्तिरिव च॥७॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विराट् छन्दो जगद्धात्री देवता बालभैरवी।
धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः॥८॥
अधरो बिन्दुमानाद्यः कामः शक्तिशशीयुतः।
भृगुर्मनुस्वरयुतः सर्गोबीजत्रयात्मकः॥९॥
बालैषा मे शिरः पातु बिन्दुनादयुतापि सा।
भालं पातु कुमारीशा सर्गहीना कुमारिका॥१०॥
दृशौ पातु च वाग्बीजं कर्णयुग्मं सदावतु।
कामबीजं सदा पातु घ्राणयुग्मं परावतु॥११॥
सरस्वतीप्रदा बाला जिह्वां पातु शुचिप्रभा।
हस्त्रैं कंठं हसकलरीं स्कंधौ पातु हस्त्रौ भुजौ॥१२॥
पंचमी भैरवी पातु करौ हसैं सदावतु।
हृदयं हसकलीं वक्षः पातु हसौः स्तनौ मम॥१३॥
पातु सा भैरवी देवी चैतन्यरूपिणी मम।
हस्त्रैं पातु सदा पार्श्वयुग्मं हसकलरीं सदा॥१४॥
कुक्षिं पातु हसौर्मध्ये भैरवी भुवि दुर्लभा।
ऐंईओंवं मध्यदेशं बीजविद्या सदावतु॥१५॥
हस्त्रैं पृष्ठं सदा पातु नाभिं हसकलह्रीं सदा।
पातु हसौं करौ पातु षट्कूटा भैरवी मम॥१६॥
सहस्त्रैं सक्थिनी पातु सहसकलरीं सदावतु।
गुह्यदेशं हस्त्रौं पातु जनुनी भैरवी मम॥१७॥
संपत्प्रदा सदा पातु हैं जंघे हसक्लीं पदौ।
पातु हंसौः सर्वदेहं भैरवी सर्वदावतु॥१८॥
हसैं मामवतु प्राच्यां हरक्लीं पावकेऽवतु।
हसौं मे दक्षिणे पातु भेरवी चक्रसंस्थिता॥१९॥
ह्रीं क्लीं ल्वें मां सदा पातु निर्ऋत्यां चक्रभैरवी।
क्रीं क्रीं क्रीं पातु वायव्ये हूं हूं पातु सदोत्तरे॥२०॥
ह्रीं ह्रीं पातु सदैशान्ये दक्षिणे कालिकावतु।
ऊर्ध्वं प्रागुक्तबीजानि रक्षन्तु मामधः स्थले॥२१॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दिग्विदिक्षु स्वाहा पातु कालिका खड्गधारिणी।
ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं फट् सा तारा सर्वत्र मां सदावतु॥२२॥
संग्रामे कानने दुर्गे तोये तरंगदुस्तरे।
खड्गकर्त्रिधरा सोग्रा सदा मां परिरक्षतु॥२३॥
इति ते कथितं देवि सारात्सारतरं महत्।
त्रैलोक्यविजयं नाम कवचं परमाद्भुतम्॥२४॥
यः पठेत्प्रयतो भूत्वा पूजायाः फलमाप्नुयात्।
स्पर्द्धामूद्धूय भवने लक्ष्मीर्वाणी वसेत्ततः॥२५॥
यः शत्रुभीतो रणकातरो वा भीतो वने वा सलिलालये वा।
वादे सभायां प्रतिवादिनो वा रक्षःप्रकोपाद् ग्रहसकुलाद्वा॥२६॥
प्रचंडदंडाक्षमनाच्च भीतो गुरोः प्रकोपादपि कृच्छ्रसाध्यात्।
अभ्यर्च्य देवीं प्रपठेत्त्रिसंध्यं स स्यान्महेशप्रतिमो जयी च॥२७॥
त्रैलोक्यविजयं नाम कवचं मन्मुखोदितम्।
विलिख्य भूर्जगुटिकां स्वर्णस्थां धारयेद्यदि॥२८॥
कंठे वा दक्षिणे बाहौ त्रैलोक्यविजयी भवेत्।
तद्गात्रं प्राप्य शस्त्राणि भवंति कुसुमानि च॥२९॥
लक्ष्मीः सरस्वती तस्य निवसेद्भवने मुखे।
एतत्कवचमज्ञात्वा यो जपेद्भैरवीं पराम्।
बालां वा प्रजपेद्विद्वान्दरिद्रो मृत्युमाप्नुयात्॥३०॥

इति श्रीरुद्रयामले देवी श्वरसंवादे त्रैलोक्यविजयं नाम भैरवीकवचं समाप्तम्

●●●

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अथ श्री त्रिपुरभैरवी कवचम्

श्री पार्वत्युवाच

देवदेव महादेव सर्वशास्त्र विशारद।
कृपां कुरु जगन्नाथ धर्म्मज्ञोऽसि महामते॥१॥
भैरवी या पुरा प्रोक्ता विद्या त्रिपुरपूर्विका।
तस्यास्तु कवचं दिव्यं मह्यं कथय तत्त्वतः॥२॥
तस्यास्तु वचनं श्रुत्वा जगाद जगदीश्वरः।
अद्भुतं कवचं देव्या भैरव्या दिव्यरूपि वै॥३॥

ईश्वर उवाच

कथयामि महाविद्या कवचं सर्वदुर्लभम्।
शृणुष्वं त्वं च विधिना श्रुत्वा गोप्यं तवापि तत्॥४॥
यस्याः प्रसादात्सकलं बिभर्मि भुवनत्रयम्।
यस्याः सर्वं समुत्पन्नं यस्यामद्यापि तिष्ठति॥५॥
माता पिता जगद्धन्या जगद् ब्रह्मस्वरूपिणी।
सिद्धिदात्री च सिद्धास्या ह्यसिद्धा दुष्टजंतुषु॥६॥
सर्वभूतप्रियकरी सर्वभूतस्वरूपिणी।
ककारी पातु मां देवी कामिनी कामदायिनी॥७॥
एकारी पातु मां देवी मूलधारस्वरूपिणी।
इकारी पातु मां देवी भूरिसर्वसुखप्रदा॥८॥
लकारी पातु मां देवी इन्द्राणी वरवल्लभा।
ह्रींकारी पातु मां देवी सर्वदा शम्भुसुन्दरी॥९॥
एर्तर्वर्णैर्महामाया शाम्भवी पातु मस्तकम्।
ककारे पातु मां देवी शर्वाणी हर -गेहिनी॥१०॥
मकारे पातु मां देवी सर्वपापप्रणाशिनी।
ककारे पातु मां देवी कामरूपधरा सदा॥११॥
ककारे पातु मां देवी शम्बराररिप्रिया सदा।
पकारे पातु मां देवी धरा धरणिरूपधृक॥१२॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ह्रींकारी पातु मां देवी अकारार्द्ध- शरीरिणी।
एतैर्वर्णैर्महामाया कामराहुप्रियाऽवतु॥१३॥
मकारः पातु मां देवी सावित्री सर्वदायिनी।
ककारः पातु सर्वत्र कलाम्बर स्वरूपिणी॥१४॥
लकारः पातु मां देवी लक्ष्मीः सर्वसुलक्षणा।
ह्रीं पातु मां तु सर्वत्र देवी त्रिभुवनेश्वरी॥१५॥
एतैर्वर्णैर्महामाया पातु शक्तिस्वरूपिणी।
वाग्भवं मस्तकं पातु वदनं कामराजिका॥१६॥
शक्तिस्वरूपिणी पातु हृदयं यंत्रसिद्धिदा।
सुन्दरी सर्वदा पातु सुन्दरी परिरक्षतु॥१७॥
रक्तवर्णा सदा पातु सुन्दरी सर्वदायिनी।
नानालंकार - संयुक्ता सुन्दरी पातु सर्वदा॥१८॥
सर्वांगसुन्दरी पातु सर्वत्र शिवदायिनी।
जगदाह्लाद- जननी शम्भुरूपा च मां सदा॥१९॥
सर्वमंत्रमयी पातु सर्वसौभाग्यदायिनी।
सर्वलक्ष्मीमयी देवी परमानन्द दायिनी॥२०॥
पातु मां सर्वदा देवी नानाशंखनिधिः शिवा।
पातु पद्मनिधिर्देवी सर्वदा शिवदायिनी॥२१॥
मां पातु दक्षिणामूर्तिर्ऋषिः सर्वत्र मस्तके।
पंक्तिश्छन्दः स्वरूपा तु मुखे पातु सुरेश्वरी॥२२॥
गंधाष्टकात्मिका पातु हृदयं शाङ्करी सदा।
सर्वसम्मोहिनी पातु पातु संक्षोभिणी सदा॥२३॥
सर्वसिद्धिप्रदा पातु सर्वाकर्षणकारिणी।
क्षोभिणी सर्वदा पातु वशिनी सर्वदावतु॥२४॥
आकर्षिणी सदा पातु सम्मोहिनी सदावतु।
रतिर्देवी सदा पातु भगांगा सर्वदावतु॥२५॥
माहेश्वरी सदा पातु कौमारी सर्वदावतु।
सर्वाह्लदनकरी मां पातु सर्ववशंकरी॥२६॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्षेमंकरी सदा पातु सर्वांगसुन्दरी तथा।
सर्वांगं युवतिः सर्वा सर्वसौभाग्यदायिनी॥२७॥
वाग्देवी सर्वदा पातु वाणिनी सर्वदावतु।
वशिनी सर्वदा पातु महासिद्धिप्रदा सदा॥२८॥
सर्वविद्राविणी पातु गणनाथः सदावतु।
दुर्गादेवी सदा पातु वटुकः सर्वदावतु॥२९॥
क्षेत्रपालः सदा पातु पातु चा वीरशांतिका।
अनंतः सर्वदा पातु वराहः सर्वदावतुः॥३०॥
पृथिवी सर्वदा पातु स्वर्णसिंहासनं तथा।
रक्तामृतं च सततं पातु मां सर्वकालतः॥३१॥
सुरार्णवः सदा पातु कल्पवृक्षः सदावतु।
श्वेतच्छत्रं सदा पातु रक्तद्वीपः सदावतु॥३२॥
सततं नन्दनोद्यानं पातु मां सर्वसिद्धये।
दिक्पालाः सर्वदा पातु द्वन्द्वौघाः सकलास्तथा॥३३॥
वाहनानि सदा पांतु अस्त्राणि पांतु सर्वदा।
शस्त्राणि सर्वदा पातु योगिन्यः पांतु सर्वदा॥३४॥
सिद्धाः पांतु सदा देवी सर्वसिद्धिप्रदावतु।
सर्वांगसुन्दरी देवी सर्वदा पातु मां तथा॥३५॥
आनन्दरूपिणी देवी चित्स्वरूपा चिदात्मिका।
सर्वदा सुन्दरी पातु सुन्दरी भवसुन्दरी॥३६॥
पृथग्देवालये घोरे संकटे दुर्गमे गिरौ।
अरण्ये प्रांतरे वापि पातु मां सुन्दरी सदा॥३७॥
इदं कवचमित्युक्तो मंत्रोद्धारश्च पार्वति।
यः पठेत्प्रयतो भूत्वा त्रिसंध्यं नियतः शुचिः॥३८॥
तस्य सर्वार्थसिद्धि स्याद्यद्यन्मनसि वर्तते।
गोरोचना कुंकमेन रक्तचन्दननेन वा॥३९॥
स्वयंभूकुसुमैः शुक्लैर्भूमिपुत्रे शनौ सुरै।
श्मशाने प्रांतरे वापि शून्यागारे शिवालये॥४०॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्वशक्त्या गुरुणां यंत्रं पूजयित्वा कुमारिकाः।
तन्मनुं पूजयित्वा च गुरुपंक्तिं तथैव च॥४१॥
देव्यै बलिं निवेद्याथ नरमार्जार सूकरैः।
नकुलैर्महिषैर्मेषैः पूजयित्वा विधानतः॥४२॥
धृत्वा सुवर्णमध्यस्थं कण्ठे वा दक्षिणे भुजे।
सुतिथौ शुभनक्षत्रे सूर्यस्योदयने तथा॥४३॥
धारयित्वा च कवचं सर्वसिद्धिं लभेन्नरः॥
कवचस्य च माहात्म्यं नाहं वर्षशतैरपि॥४४॥
शक्नोमि तु महेशानि वक्तुं तस्य फलं तु यत्।
न दुर्भिक्षफलं तत्र न चापि पीडनं तथा॥४५॥
सर्वविघ्नप्रशमनं सर्वव्याधि- विनाशनम्।
सर्वारक्षाकरं जंतोश्चतुर्वर्ग- फलप्रदम्॥४६॥
मंत्रं प्राप्य विधानेन पूजयेत्सततं सुधीः।
तत्रापि दुर्लभं मन्ये कवचं देवरूपकम्॥४७॥
गुरोः प्रसाद मासाद्य विद्यां प्राप्य सुगोपिताम्।
तत्रापि कवचं दिव्यं दुर्लभं भुवनत्रये॥४८॥
सर्वं वा श्लोकमेकं वा यः पठेत्प्रयतः शुचिः।
तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्याच्छंकरेण प्रभाषितः॥४९॥
गुरुर्देवो हरः साक्षात्पत्नी तस्य च पार्वती।
अभेदेन भजेद्यस्तु तस्य सिद्धिरदूरतः॥५०॥

इति श्रीरुद्रयामले भैरव-भैरवीसंवादे श्रीत्रिपुरभैरवी कवचं समाप्तम्

●●●

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री त्रैलोक्यविजय छिन्नमस्ता कवचम्

देव्युवाच

कथिताश्छिन्नमस्ताया या या विद्याः सुगोपिताः।
त्वया नाथेन जीवेश श्रुताश्चधिगता मया।।१।।
इदानीं श्रोतुमिच्छामि कवचं पूर्वसूचितम्।
त्रैलोक्यविजयं नाम कृपया कथ्यतां प्रभो।।२।।

भैरव उवाच

शृणु वक्ष्यामि देवेशि! सर्वदेवनमस्कृते।
त्रैलाक्यविजयं नामकवचं सर्वमोहनम्।।३।।
सर्वविद्यामयं साक्षात्सुरासुर जयप्रदम्।
धारणात्पठनादीशस्त्रैलोक्यविजयी विभुः।।४।।
ब्रह्मा नारायणो रुद्रो धारणात्पठनाद्यतः।
कर्ता पाता च संहर्ता भुवनानां सुरेश्वरि।।५।।
न देयं परशिष्येभ्योऽभक्तेभ्योऽपि विशेषतः।
देयं शिष्याय भक्ताय प्राणेभ्योन्नप्यधिकाय च।।६।।
देव्याश्च च्छिन्नमस्तायाः कवचस्य च भैरवः।
ऋषिस्तु स्याद्विराट् छंदो देवता छिन्नमस्तका।।७।।
त्रैलोक्यविजये मुक्तौ विनियोगः प्रकीर्तितः।
हुंकारा पे शिरः पातु छिन्नमस्ता बलप्रदा।।८।।
ह्रां ह्रूं ऐं त्र्यक्षरी पातु भालं वक्त्रं दिगंबरा।
श्रीं ह्रीं ह्रूं ऐं दृशौ पातु मुंडं कर्त्रिंधरापि सा।।९।।
सा विद्या प्रणवाद्यंता श्रुतियुग्मं सदाऽवतु।
वज्रवैरोचनीये हुं फट् स्वाहा च ध्रुवादिका।।१०।।
घ्राणं पातु च्छिन्नमस्ता मुण्डकर्त्रिविधारिणी।
श्रीमायाकूर्चवाग्बीजै र्वज्रवैरोचनीय हू।।११।।
हूं फट् स्वाहा महाविद्या षोडशी ब्रह्मरूपिणी।
स्वपार्श्वो वर्णिनी चासृग्धारां पाययती मुदा।।१२।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वदनं सर्वदा पातु च्छिन्नमस्ता स्वशक्तिका।
मुण्डकर्त्रिधरा रक्ता साधकाभीष्टदायिनी॥१३॥
वर्णिनी डाकिनीयुक्ता सापि मामभितोऽवतु।
रामाद्या पातु जिह्वां च लज्जाद्या पातु कंठकम्॥१४॥
कूर्चाद्या हृदयं पातु वागाद्या स्तनयुग्मकम्।
रमया पुटिता विद्या पार्श्वौं पातु सरेश्वरी॥१५॥
मायया पुटिता पातु नाभिदेशे दिगंबरा।
कूर्चेण पुटिता देवी पृष्ठदेशे सदाऽवतु॥१६॥
वाग्बीजपुटिता चैषा मध्यं पातु सशक्तिका।
ईश्वरी कूर्चवाग्बीजै र्वज्रवैरोचनीय हूं॥१७॥
हूं फट् स्वाहा महाविद्या कोटिसूर्य्यसमप्रभा।
छिन्नमस्ता सदा पायादुरुयुग्मं सशक्तिका॥१८॥
ह्रीं ह्रूं वर्णिनी जानुं श्रीं ह्रीं च डाकिनी पदम्।
सर्वविद्यास्थिता नित्या सर्वांगं मे सदाऽवतु॥१९॥
प्राच्यां पायादेकलिंगा योगिनी पावकेऽवतु।
डाकिनी दक्षिणे पातु श्रीमहाभैरवी च माम्॥२०॥
नैर्ऋत्यां सततं पातु भैरवी पश्चिमेऽवतु।
इन्द्राक्षी पातु वायव्येऽसितांगी पातु चोत्तरे॥२१॥
संहारिणी सदापातु शिवकोणे सकर्त्रिका।
इत्यष्टशक्तयः पांतु दिग्विदिक्षु सकर्त्रिकाः॥२२॥
क्रीं क्रीं क्रीं पातु सा पूर्वं ह्रीं ह्रीं मां पातु पावके।
ह्रूं ह्रूं मां दक्षिणे पातु दक्षिणे कालिकावतु॥२३॥
क्रीं क्रीं क्रीं चैव नैर्ऋत्यां ह्रीं ह्रीं च पश्चिमेऽवतु।
हूं हूं पातु मरुत्कोणे स्वाहा पातु सदोत्तरे॥२४॥
महाकाली खड्गहस्ता रक्षःकोणे सदावतु।
तारो माया वधूः कूर्चं फट्कारोऽयं महामनुः॥२५॥
खड्गकर्त्रिधरा तारा चोर्द्धदेशं सदाऽवतु।
ह्रीं स्त्रीं हूं फट् च पाताले मां पातु चैकजटा सती।
तारा तु सहिता खेऽव्यान्महानीलसरस्वती॥२६॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इति ते कथितं देव्याः कवचं मन्त्रविग्रहम्।
यद्धृत्वा पठनाद्भीमः क्रोधाख्यो भैरवः स्मृतः॥२७॥
सुरासुर मुनीन्द्राणां कर्ता हर्ता भवेत्स्वयम्।
यस्याज्ञया मधुमती याति सा साधकालयम्॥२८॥
भूतिन्याद्याश्च डाकिन्यो यक्षिण्याद्याश्च खेचराः।
आज्ञां गृह्णंति तास्तस्य कवचस्य प्रसादतः॥२९॥
एतदेव परं ब्रह्मकवचं मन्मुखोदितम्।
देवीमभ्यर्च्य गंधाद्यैर्मूले- नैव पठेत्सकृत्॥३०॥
संवत्सरकृतायास्तु पूजायाः फलमाप्नुयात्।
भूर्जे विलिखितं चैतद्गुटिकां कांचनस्थिताम्॥३१॥
धारयेद्दक्षिणे- बाहौ कंठे वा यदि वान्यतः।
सर्वैश्वर्ययुतो भूत्वा त्रैलोक्यं वशमानयेत्॥३२॥
तस्य गेहे वसेल्लक्ष्मीर्वाणीच वदनांबुजे।
ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि तद्गात्रे यांति सौम्यताम्॥३३॥
इदं कवचमज्ञात्वा यो भजेच्छिन्नमस्तकाम्।
सोऽपि शस्त्रप्रहारेण मृत्युमाप्नोति सत्वरम्॥३४॥

इति भैरवतन्त्रे भैरव भैरवीसंवादे त्रैलोक्यविजयं नाम छिन्नमस्ता कवचं समाप्तम्

श्री धूमावती कवचम्

श्री पार्वत्युवाच

धूमावत्यर्चनं शंभो श्रुतं विस्तरतो मया।
कवचं श्रोतुमिच्छामि तस्या देव वदस्व मे॥१॥

श्रीभैरव उवाच

शृणु देवि परं गुह्यं न प्रकाश्यं कलौ युगे।
कवचं श्रीधूमवत्याः शत्रुनिग्रहकारकम्॥२॥
ब्रह्माद्या देवि सततं यद्वशादरिघातिनः।
योगिनो भवंति शत्रुघ्ना यस्या ध्यानप्रभावतः॥३॥

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीधूमावतीकवचस्य पिप्पलाद ऋषि।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अनुष्टुप्छंदः। श्रीधूमावती देवता। धूं बीजम्। स्वाहा शक्तिः। धूमावती कीलकम्। शत्रुहनने पाठे विनियोगः।

ॐ धूं बीजं मे शिरः पातु धूं ललाटं सदाऽवतु।
धूमा नेत्रयुगं पातु वती कर्णौ सदाऽवतु।।४।।
दीर्घा तूदरमध्ये तु नाभिं मे मलिनाम्बरा।
शूर्प्पहस्ता पातु गुह्य रूक्षा रक्षतु जानुनी।।५।।
मुखं मे पातु भीमाख्या स्वाहा रक्षतु नासिकाम्।
सर्वविद्याऽवतु कण्ठं विवर्णा बाहुयुग्मकम्।।६।।
चञ्चला हृदयं पातु धृष्टा पार्श्वे सदाऽवतु।
धूमहस्ता सदा पातु पादौ पातु भयावहा।।७।।
प्रवृद्धरोमा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा।
क्षुत्पिपासार्द्दिता देवी भयदा कलहप्रिया।।८।।
सर्वांगं पातु मे देवी सर्वशत्रुविनाशिनी।
इति ते कथितं पुण्यं कवचं भुवि दुर्लभम्।।९।।
न प्रकाश्यं न प्रकाश्यं न प्रकाश्यं कलौयुगे।
पठनीयं महादेवि त्रिसंध्यं ध्यानतत्परः।।१०।।
दुष्टाभिचारो देवेशि तद्गात्रं नैव संस्पृशेत्।।११।।

इति भैरवी भैरव संवादे धूमावतीतत्त्वे धूमावती कवचं सम्पूर्णम्

श्री बगलामुखी कवचम्

(रुद्रयामले)

श्रीभैरवी उवाच

श्रुत्वा च बगलापूजां स्तोत्रं चापि महेश्वर।
इदानीं श्रोतुमिच्छामि कवचं वद मे प्रभो।।१।।
वैरिनाशकरं दिव्यं सर्वाऽशुभविनाशनम्।
शुभदं स्मरणात् पुण्यं त्राहि मां दुःखनाशन।।२।।

श्रीभैरव उवाच

कवचं शृणु वक्ष्यामि भैरवि प्राणवल्लभे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पठित्वा धारयित्वा तु त्रैलोक्ये विजयी भवेत्॥३॥

विनियोग:- ॐ अस्य श्रीबगलामुखी कवचस्य नारद ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीबगलामुखी देवता। लं बीजं। ईं शक्तिं। ऐं कीलकम्। पुरुषार्थचतुष्टये जपे विनियोगः।

शिरा म बगला पातु हृदयमेकाक्षरी परा।
ॐ ह्रीं ॐ मे ललाठे च बगला वैरिनाशिनी॥४॥
गदाहस्ता सदा पातु मुखं मे मोक्षदायिनी।
वैरिजिह्वा धरा पातु कण्ठं मे बगलामुखी॥५॥
उदरं नाभिदेशं च पातु नित्यं परात् परा।
परात् परतरा पातु मम गुह्यं सुरेश्वरी॥६॥
हस्तौ चैव तथा पातु पार्वती परिपातु मे।
विवादे विषमे घोरे संग्रामेरिपुसंकटे॥७॥
पीताम्बरधरा पातु सर्वाङ्गं शिवनर्तकी।
श्रीविद्या समयं पातु मातङ्गी पूरिता शिवा॥८॥
पातु पुत्रं सुतां चैव कलत्रं कालिका मम।
पातु नित्यं भ्रातरं मे पितरं शूलिनी सदा॥९॥
रन्ध्रे हि बगलादेव्याः कवचं मन्मुखोदितम्।
न वै देयममुख्याय सर्वसिद्धिप्रदायकम्॥१०॥
पठनाद् धारणादस्य पूजनाद् वाञ्छितं लभेत्।
इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेद् बगलामुखीम्॥११॥
पिवन्ति शोणितं तस्य योगिन्यः प्राप्य सादराः।
वश्ये चाकर्षणे चैव मारणे मोहने तथा॥१२॥
महाभये विपत्तौ च पठेद् वा पाठयेत् तु यः।
तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्याद् भक्तियुक्तस्य पार्वति॥१३॥

इति श्रीरुद्रयामले श्रीबगलामुखी कवचम् सम्पूर्णम्

●●●

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अथ बगलामुखी ब्रह्मास्त्र कवचम्

इस कवच में प्रयुक्त मंत्र के जप एवं संपुटित दुर्गापाठ कराने पर शत्रुनाश, प्रेतदोषशमन, आर्थिक उन्नति हेतु कई सफल प्रयोग किये हैं। षट्त्रिंशातात्मक (३६ अक्षर वाले) मंत्र के विकल्प में इस मंत्र में मंत्रोच्चारण या ध्यान समय त्रुटि की संभावना भी नहीं रहती है। हमने विकट परिस्थिति में इस मंत्र के कई सफल प्रयोग कियें है।

कैलासाचलमध्यगं पुरवहं शान्तं त्रिनेत्रं शिवम्।
वामस्था गिरिजा प्रणम्य कवचं भूतिप्रदं पृच्छति॥
देवीश्रीबगलामुखी रिपुकुलारण्याग्निरूपा च या।
तस्याश्चापविमुक्तमन्त्रसहितं प्रीत्याधुना ब्रुहिमाम्॥१॥

श्रीशङ्कर उवाच

देवि श्रीभवबल्लभेश्रृणु महामंन्त्रं विभूतिप्रदम्।
देव्या वर्मयुतं समस्तसुखदं साम्राज्यदं मुक्तिदम्॥
तारं रुद्रवधू विरिञ्चिमहिला विष्णुप्रिया कामयुक्।
कान्ते श्रीबगलानने मम रिपून् नाशय युग्मं त्वति॥२॥
ऐश्वर्याणि पदं च देहि युगलं शीघ्रं मनोवाञ्छितं।
कार्यं साधय युग्मयुच्छिववधूवह्निप्रियान्तो मनुः॥
कंसारेस्तनयं च बीजमपरा शक्तिश्च वाणी तथा।
कीलं श्रीमति भैरवर्षिसहितं छन्दो विराट्संयुतम्॥३॥
स्वेष्टार्थस्य परस्य वेति नितरां कार्यस्य सम्प्राप्तये।
नानाऽसाध्यमहागदस्य नियतं नाशाय वीर्याप्तये॥
ध्यात्वाश्रीबगलाननां मनुवरं जप्त्वा सहस्त्राख्यकम्।
दीर्घैः षट्कयुतैश्च रुद्रमहिलाबीजैर्विन्यस्याङ्गके॥4॥

ध्यानम्

सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनांपीतांशुकोल्लासिनीम्।
हेमाभाङ्गरुचिं शशाङ्कमुकुटांसच्चम्पकस्त्रग्युताम्॥
हस्तैर्मुद्गरपाशवज्ररसनाः संबिभ्रतीं भूषणैः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

व्याप्ताङ्गीं बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तयेत्॥

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीबगलामुखी ब्रह्मास्त्रमन्त्रकवचस्य भैरव ऋषिः, विराट् छन्दः, श्रीबगलामुखी देवता, क्लीं बीजम्, ऐं शक्तिः, श्रीं कीलकं, मम (परस्य) च मनोभिलषितेष्टकार्य सिद्धये विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः- शिरसि भैरव ऋषये नमः। मुखे विराट्छन्दसे नमः। हृदि बगलामुखी देवतायै नमः। गुह्यै क्लीं बीजाय नमः। पादयोः ऐं शक्तये नमः। सर्वाङ्गे श्रीं कीलकाय नमः।

करन्यासः- ॐ ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास :- ॐ ह्रां हृदयाय नमः, ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ ह्रूं शिखायै वषट्, ॐ ह्रैं कवचाय हुम्, ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ह्रः अस्त्राय फट्।

मन्त्रोद्धारः :- ॐ ह्रीं ऐं श्रीं क्ली श्रीबगलानने मम रिपून् नाशय नाशय, ममैश्वर्याणि दहि देहि शीघ्रं मनोवाञ्छितं कार्यं साधय साधय ह्रीं स्वाहा।

शिरा मे पातु ॐ ह्रीं ऐं श्रीं क्लीं पातु ललाटकम्।
सम्बोधनपदं पातु नत्रे श्रीबगलानने॥१॥
श्रुतौ मम रिपुं पातु नासिकां नाशयद्वयम्।
पातु गण्डौ सदा मामैश्वर्याण्यन्तं तु मस्तकम्॥२॥
देहिद्वन्द्वं सदा जिह्वा पातु शीघ्रं वचो मम।
कण्ठदेशं मनः पातु वाञ्छितं बाहुमूलकम्॥३॥
कार्यं साधयद्वन्द्वं तु करौ पातु सदा मम।
मायायुक्ता तथा स्वाहा हृदयं पातु सर्वदा॥४॥
अष्टाधिकचत्वारिंशदण्डाढ्या बगलामुखी।
रक्षां करोतु सर्वत्र गृहेऽरण्ये सदा मम॥५॥
ब्रह्मास्त्राख्यो मनुः पातु सर्वाङ्गे सर्वसन्धिषु।
मन्त्रराजः सदा रक्षां करोतु मम सर्वदा॥६॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ ह्लीं पातु नाभिदेशं कटिं मे बगलाऽवतु।
मुखिवर्णद्वयं पातु लिङ्गं मे मुष्कयुग्मकम्॥७॥
जानुनी सर्वदुष्टानां पातु मे वर्णपञ्चकम्।
वाचं मुखं तथा पादं षड्वर्णाः परमेश्वरी॥८॥
जङ्घायुग्मे सदा पातु बगला रिपुमोहिनी।
स्तम्भयेति पदं पृष्ठं पातु वर्णत्रयं मम॥९॥
जिह्वावर्णद्वयं पातु गुल्फौ मे कीलयेति च।
पादोर्ध्वं सर्वदा पातु बुद्धिं पादतले मम॥१०॥
विनाशयपदं पातु पादाङ्गुल्योर्नखानि मे।
ह्लीं बीजं सर्वदा पातु बुद्धीन्द्रियवचांसि मे॥११॥
सर्वाङ्गं प्रणवः पातु स्वाहा रोमाणि मेऽवतु।
ब्राह्मी पूर्वदले पातु चाग्नेय्यां विष्णुवल्लभा॥१२॥
माहेशी दक्षिणे पातु चामुण्डा राक्षसेऽवतु।
कौमारी पश्चिमे पातु वायव्ये चापराजिता॥१३॥
वाराही चोत्तरे पातु नारसिंही शिवेऽवतु।
ऊर्ध्वं पातु महालक्ष्मीः पाताले शारदाऽवतु॥१४॥
इत्यष्टौ शक्तयः पान्तु सायुधाश्च सवाहनाः।
राजद्वारे महादुर्गे पातु मां गणनायकः॥१५॥
श्मशाने जलमध्ये च भैरवश्च सदाऽवतु।
द्विभुजा रक्तवसनाः सर्वाभरणभूषिताः॥१६॥
योगिन्यः सर्वदा पान्तु महारण्ये सदा मम।
इति ते कथितं देवि कवचं परमाद्भुतम्॥१७॥
श्रीविश्वविजयं नाम कीर्तिश्रीविजयप्रदम्।
अपुत्रो लभते पुत्रं धीरं शूरं शतायुषम्॥१८॥
निर्धनो धनमाप्नोति कवचस्यास्य पाठतः।
जपित्वा मन्त्रराजं तु ध्यात्वा श्रीबगलामुखीम्॥१९॥
पठेदिदं हि कवचं निशायां नियमात् तु यः।
यद् यत् कामयते कामं साध्यासाध्ये महीतले॥२०॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तत् तत् काममवाप्नोति सप्तरात्रेण शङ्करि।
गुरुं ध्यात्वा सुरां पीत्वा रात्रौ शक्तिसमन्वितः॥२१॥
कवचं यः पठेद् देवि तस्यासाध्यं न किञ्चन।
यं ध्यात्वा प्रजपेन् मंत्रं सहस्त्रं कवचं पठेत्॥२२॥
त्रिरात्रेण वशं याति मृत्योः तन्नात्र संशयः।
लिखित्वा प्रतिमां शत्रोः सतालेन हरिद्रया॥२३॥
लिखित्वा हृदि तन्नाम तं ध्यात्वा प्रजपेन् मनुम्।
एकविंशशद्दिनं यावत् प्रत्यहं च सहस्त्रकम्॥२४॥
जप्त्वा पठेत् तु कवचं चतुर्विंशतिवारकम्।
संस्तम्भं जायते शत्रोर्नात्र कार्या विचारणा॥२५॥
विवादे विजयं तस्य संग्रामे जयमाप्नुयात्।
श्मशाने च भयं नास्ति कवचस्य प्रभावतः॥२६॥
नवनीतं चाभिमन्त्र्य स्त्रीणां दद्यान् महेश्वरि।
वन्ध्यायां जायते पुत्रो विद्यावलसमन्वितः॥२७॥
श्मशानाङ्गारमादाय भौमे रात्रौ शनावथ।
पादोदकेन स्पृष्ट्वा च लिखेत् लोहशलाकया॥२८॥
भूमौ शत्रोः स्वरूपं च हृदि नाम समालिखेत्।
हस्तं तद्धृदये दत्वा कवचं तिथिवारकम्॥२९॥
ध्यात्वा जपेन् मन्त्रराजं नवरात्रं प्रयत्नतः।
म्रियते ज्वरदाहेन दशमेऽह्नि न संशयः॥३०॥
भूर्जपत्रेष्विदं स्तोत्रमष्टगन्धेन संलिखेत्।
धारयेद् दक्षिणे बाहौ नारी वामभुजे तथा॥३१॥
संग्रामे जयमाप्नोति नारी पुत्रवती भवेत्।
ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि नैव कृन्तन्ति तं जनम्॥३२॥
सम्पूज्य कवचं नित्यं पूजायाः फलमालभेत्।
वृहस्पतिसमो वापि विभवे धनदोपमः॥३३॥
कामतुल्यश्च नारीणां शत्रूणां च यमोपमः।
कवितालहरी तस्य भवेद् गङ्गाप्रवाहवत्॥३४॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गद्यपद्यमयी वाणी भवेद् देवीप्रसादतः।
एकादशशतं यावत् पुरश्चरणमुच्यते।।३५।।
पुरश्चर्याविहीनं तु न चेदं फलदायकम्।
न देयं परशिष्येभ्यो दुष्टेभ्यश्च विशेषतः।।३६।।
देयं शिष्याय भक्ताय प श्चत्वं चान्यथाऽऽप्रुयात्।
इदं कवचमज्ञात्वा भजेद् यो बगलामुखीम्।
शतकोटि जपित्वा तु तस्य सिद्धिर्न-जायते।।३७।।
दाराढ्यो मनुजोऽस्य लक्षजपतः प्राप्नोति सिद्धिं परां
विद्यां श्रीविजयं तथा सुनियतं धीरं च वीरं वरम्।
ब्रह्मास्त्राख्यमनुं विलिख्य नितरां भूर्जेष्टगन्धेन वै
धृत्वा राजपुरं ब्रजन्ति खलु ये दासोऽस्ति तेषां नृपः।।३८।।

इति श्रीविश्वसारोद्धारतन्त्रे पार्वतीश्वरसंवादे बगलामुखीकवचम् सम्पूर्णम्

अथ श्री ब्रह्मास्त्र बगला वज्र कवचम्

श्री ब्रह्मोवाचः

विश्वेश दक्षिणामूर्ते निगमागमवित् प्रभो।
मह्यं पुरा त्वया दत्ता विद्या ब्रह्मास्त्रसंज्ञिता।।१।।
तस्य मे कवचं बूहि येनाहं सिद्धिमाप्नुयाम्।
भवामि वज्रकवचं ब्रह्मास्त्रन्यासमात्रतः।।२।।

श्री दक्षिणामूर्तिरूवाचः

श्रृणु ब्रह्मन् परंगुह्यं ब्रह्मास्त्रकवचं शुभम्।
यस्योच्चारणमात्रेण भवेद् वै सूर्यसन्निभः।।३।।
सुदर्शनं मयादत्तं कृपया विष्णवे तथा।
तद्वत् ब्रह्मास्त्रविद्यायाः कवचं कथयाम्यहम्।।४।।
अष्टाविंशत्यस्त्रहेतुमाद्यं ब्रह्मास्त्रमुत्तमम्।
सर्वतेजोमयं सर्व सामर्थ्य विग्रहं परम्।।५।।
सर्वशत्रुक्षयकरं सर्वदारिद्र्यनाशनम्।
सर्वापच्छैलराशीनामस्त्रकं कुलिशोपमम्।।६।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

न तस्य शत्रवश्चापि भयं चौर्यभयं जरा।
नरा नार्यश्च राजेन्द्र खगा व्याघ्रादयोऽपि च॥७॥
तं दृष्ट्वा वशमायान्ति किमन्यत् साधवो जनाः।
यस्य देहे न्यसेद् धीमान् कवचं बगलामयम्॥८॥
स एव पुरुषो लोके केवलः शङ्करोपमः।
न देय परशिष्याय शठाय पिशुनाय च॥९॥
दातव्यं भक्तियुक्ताय गुरुदासाय धीमते।
कवचस्य ऋषिः श्रीमान् दक्षिणामूर्तिरिव च॥१०॥
अस्यानुष्टुप् छन्दः स्यात् श्रीबगला चास्य देवता।
बीजं श्रीवह्निजाया च शक्तिः श्रीबगलामुखी॥११॥
कीलकं विनियोगश्च स्वकार्ये सर्वसाधके।

अथ ध्यानम्

शुद्धस्वर्णनिभां रामां पीतेन्दुखण्डशेखराम्।
पीतगन्धानुलिप्ताङ्गीं पीतरत्नविभूषणाम्॥
पीनोन्नतकुचां स्निग्धां पीतलाङ्गीं सुपेशलाम्।
त्रिलोचनां चतुर्हस्तां गम्भीरां मदविह्वलाम्॥
वज्रारि रसनापाशमुदगरं दधतीं करैः।
महाव्याघ्रासनां देवीं सर्वदेवनमस्कृताम्॥
प्रसन्नां सुस्मितां क्लिन्नां सुपीतां प्रमदोत्तमाम्।
सुभक्तदुःखहरणे दयार्द्रां दीनवत्सलाम्॥
एवं ध्यात्वा परेशानि बगलाकवचं स्मरेत्।

अथ रक्षाकवचम्

बगला मे शिरः पातु ललाटं ब्रह्मसंस्तुता।
बगला मे भ्रुवौ नित्यं कर्णयोः क्लेशहारिणी॥
त्रिनेत्रा चक्षुषी पातु स्तम्भिनी गण्डयोस्तथा।
मोहिनी नासिकां पातु श्रीदेवी बगलामुखी॥
ओष्ठयोर्दुर्धरा पातु सर्वदन्तेषु चञ्चला।
सिद्धान्नपूर्णा जिह्वायां जिह्वाग्रे शारदाम्बिके॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अकल्मषा मुखे पातु चिबुके बगलामुखी।
धीरा मे कष्ठदेशे तु कण्ठाग्रे कालकर्षिणी।।
शुद्धस्वर्णनिभा पातु कण्ठमध्ये तथाऽम्बिका।
कण्ठमूले महाभोगा सकन्धौ शत्रुविनाशिनी।।
भुजौ मे पातु सततं बगला सुस्मिता परा।
बगला मे सदा पातु कूर्परे कमलोद्भवा।।
बगलाऽम्बा प्रकोष्ठौ तु मणिबन्धे महाबला।
बगलाश्रीर्हस्तयोश्च कुरुकुल्ला कराङ्गुलिम्।।
नखेषु वज्रहस्ता च हृदये ब्रह्मवादिनी।
स्तनौ मे मन्दगमना कुक्षयोर्योगिनी तथा।।
उदरं बगला माता नाभिं ब्रह्मास्त्रदेवता।
पुष्टिं मुद्गरहस्ता च पातु नो देववन्दिता।।
पार्श्वयोर्हनुमद्वन्द्या पशुपाशविमोचिनी।
करौ रामप्रिया पातु ऊरुयुग्मं महेश्वरी।।
भगमाला तु गुह्यं मे लिङ्गं कामेश्वरी तथा।
लिङ्गमूले महाक्लिन्ना वृषणौ पातु दूतिका।।
बगला जानुनी पातु जानुयुग्मं च नित्यशः।
जङ्घे पातु जगद्धात्री गुल्फौ रावण-पूजिता।।
चरणौ दुर्जया पातु पीताम्बा चरणाङ्गुलीः।
पादपृष्ठं पद्महस्ता पादाधश्चक्रधारिणी।।
सर्वाङ्गं बगला देवी पातु श्रीबगलामुखी।
ब्राह्मी मे पूर्वतः पातु माहेशी बह्निभागतः।।
कौमारी दक्षिणे पातु वैष्णवी स्वर्गमार्गतः।
ऊर्ध्वं पाशधरा पातु शत्रुजिह्वाधरा ह्यधः।।
रणे राजकुले वादे महायोगे महाभये।
बगला भैरवी पातु नित्यं क्लींकाररूपिणी।।
इत्येवं वज्रकवचं महाबह्मास्त्र संज्ञकम्।
त्रिसन्ध्यं यः पठेद् धीमान् सर्वैश्वर्यमवाप्नुयात्।।
न तस्य शत्रवः केऽपि सखायः सर्व एव च।
बलेनाकृष्य शत्रुं सोऽपि मित्रत्वमाप्नुयात्।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शत्रुत्वे मरुता तुल्यो धनेन धनदोपमः।
रूपेण कामतुल्यः स्याद् आयुषा शूलधृक्समः।।
सनकादिसमो धैर्य श्रिया विष्णुसमो भवेत्।
तत्तुल्यो विद्यया ब्रह्मन् यो जपेत् कवचं नरः।।
नारी वापि प्रयत्नेन वाञ्छितार्थमवाप्नुयात्।
द्वितीया सूर्यवारेण यदा भवति पद्मभूः।।
तस्यां जातं शतावृत्या शीघ्रं प्रत्यक्षमाप्रंयात्।
याता तुरीयं संध्यायां भूशय्यायां प्रयत्नतः।।
सर्वान् शत्रून् क्षयं कृत्वा विजयं प्राप्नुयान् नरः।
दारिद्र्यान् मुच्यते चाऽऽशु स्थिरा लक्ष्मीर्भवेद् गृहे।।
सर्वान् कमानवाप्नोति सविषो निर्विषो भवेत्।
ऋण निर्मोचनं स्याद् वै सहस्त्रावर्तनाद् विधे।।
भूतप्रेतपिशाचदिपीडा तस्य न जायते।
द्युमणिभ्राजते यद्वत् तद्वत् स्याच्छ्रीप्रभावतः।।
स्थिराभया भवेत् तस्य यः स्मरेद् बगलामुखीम्।
जयदं बोधनं कामममुकं देहि मे शिवे।।
जपस्यान्ते स्मरेद् यो वै सोऽभीष्टफलमाप्नुयात्।
इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेद् बगलामुखीम्।।
न स सिद्धिमवाप्नोति साक्षाद् वै लोकपूजितः।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन कवचं ब्रह्मतेजसम्।।
नित्यं पदाम्बुजध्यानन् महेशानसमो भवेत्।

इति श्रीदक्षिणामूर्तिसंहितायां ब्रह्मास्त्रबगलामुखीकवचम् समाप्तम्

●●●

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अथ श्री त्रैलोक्यविजय कवचम्

श्री भैरव उवाच:

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि स्वरहस्यं च कामदम्।
श्रुत्वा गोप्यं गुप्ततमं कुरु गुप्तं सुरेश्वरि॥१॥
कवचं बगलामुख्याः सकलेष्टप्रदं कलौ।
तत्सर्वस्वं परं गुह्यं गुप्तं च शरजन्मना॥२॥
त्रैलोक्यविजयं नाम कवचेशं मनोरमम्।
मन्त्रगर्भं ब्रह्ममयं सर्वविद्या विनायकम्॥३॥
रहस्यं परमं ज्ञेयं साक्षादमृतरूपकम्।
ब्रह्मविद्यामयं वर्म दुर्लभं प्राणिनां कलौ॥४॥
पूर्णमेकोनपञ्चाशद् वर्णैरुक्त महेश्वरि।
त्वद्भक्त्या वच्मि देवेशि गोपनीयं स्वयोनिवत्॥५॥

श्री देव्युवाच:

भगवन् करुणासार विश्वनाथ सुरेश्वर।
कर्मणा मनसा वाचा न वदामि कदाचन्॥१॥

श्री भैरव उवाच:

त्रैलोक्य विजयाख्यस्य कवचास्यास्य पार्वति।
मनुगर्भस्य गुप्तस्य ऋषिर्देवोऽस्य भैरवः॥१॥
उष्णिक्छन्दः समाख्यातं देवी श्रीबगलामुखी।
बीजं ह्लीं ॐ शक्तिः स्यात् स्वाहा कीलकमुच्यते॥२॥
विनियोगः समाख्यातः त्रिवर्गफलप्राप्तये।
देवि त्वं पठ वर्मैतन्मन्त्रगर्भं सुरेश्वरि॥३॥
बिनाध्यानं कुतः सिद्धि सत्यमेतच्च पार्वति।
चन्द्रोद्भासितमूर्धजां रिपुरसां मुण्डाक्षमालाकराम्॥४॥
बालांसतस्त्रकचञ्चलां मधुमदां रक्तां जटाजूटिनीम्।
शत्रुस्तम्भनकारिणीं शशिमुखीं पीताम्बरोद्भासिनीम्॥५॥
प्रेतस्थां बगलामुखीं भगवतीं कारुण्यरूपां भजे।
ॐ ह्लीं मम शिरः पातु देवी श्रीबगलामुखी॥६॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ ऐं क्लीं पातु मे भालं देवी स्तम्भनकारिणी।
ॐअं इं हं भ्रुवौ पातु क्लेशहारिणी॥७॥
ॐ हं पातु मे नेत्रे नारसिंही शुभङ्करी।
ॐ ह्लीं श्रीं पातु मे गण्डौ अं आं इं भुवनेश्वरी॥८॥
ॐ ऐं क्लीं सौः श्रुतौ पातु इं ईं ऊं च परेश्वरी।
ॐ ह्लीं ह्लूं ह्लीं सदाव्यान्मे नासां ह्लीं सरस्वती॥९॥
ॐ ह्लां ह्लीं मे मुखं पातु लीं एं ऐं छिन्नमस्तिका।
ॐ श्री वं मेऽधरौ पातु ओं औं दक्षिणकालिका॥१०॥
ॐ क्लीं श्रीं शिरसः पातु कं खं गं घं च सारिका।
ॐ ह्लीं ह्लूं भैरवी पातु ङं अं अः त्रिपुरेश्वरी॥११॥
ॐ ऐं सौः मे हनुं पातु चं छं जं च मनोन्मनी।
ॐ श्रीं श्रीं मे गलं पातु झं ञं टं ठं गणेश्वरी॥१२॥
ॐ स्कन्धौ मेऽव्याद् डं ढं णं हूं हूं चैव तु तोतला।
ॐ ह्लीं श्रीं मे भुजौ पातु तं थं दं वरवर्णिनी॥१३॥
ऐं क्लीं सौः स्तनौ पातु धं नं पं परमेश्वरी।
क्रों क्रों मे रक्षयेद् वक्षः फं बं भं भगवासिनी॥१४॥
ॐ ह्लीं रां पातु कक्षि मे मं यं रं वह्निवल्लभा।
ॐ श्रीं ह्लूं पातू मे पार्श्वौ लं बं लम्बोदर प्रसूः॥१५॥
ॐ श्रीं ह्लीं हूं पातु मे नाभि शं षं षणमुखपालिनी।
ॐ ऐं सौः पातु मे पृष्ठ सं हं हाटकरूपिणी॥१६॥
ॐ क्लीं ऐं कटि पातु पञ्चाशद्वर्णमालिका।
ॐ ऐं क्लीं पातु में गुह्यं अं आं कं गुह्यकेश्वरी॥१७॥
ॐ श्रीं ऊं ऋं सदाव्यान्मे इं ईं खं खां स्वरूपिणी।
ॐ जूं सः पातु मे जंघे रुं रूं धं अघहारिणी॥१८॥
श्रीं ह्लीं पातु मे जानू उं ऊं णं गणवल्लभा।
ॐ श्रीं सः पातु मे गुल्फौ लिं लीं ऊं चं च चण्डिका॥१९॥
ॐ ऐं ह्लीं पातु मे वाणी एं ऐं छं जं जगत्प्रिया।
ॐ श्रीं क्लीं पातु पादौ मे झं ञं टं ठं भगोदरी॥२०॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ ह्रीं सर्वं वपुः पातु अं अः त्रिपुरमालिनी।
ॐ ह्रीं पूर्वे सदाव्यान्मे झं झां डं ढं शिखामुखी॥२१॥
ॐ सौः याम्यं सदाव्यान्मे इं ईं णं तं च तारिणी।
ॐ वारुण्यां च वाराही ऊं थं दं धं च कम्पिला॥२२॥
ॐ श्रीं मां पातु चैशान्यां पातु ॐ नं जनेश्वरी।
ॐ श्रीं मां चाग्नेयां ऋं भं मं धं च यौगिनी॥२३॥
ॐ ऐं मां नैऋत्यां लूं लां राजेश्वरी तथा।
ॐ श्रीं पातु वायव्यां लृं लं वीतकेशिनी।
ॐ प्रभाते च मो पातु लीं लं वागीश्वरी सदा॥२४॥
ॐ मध्याह्ने च मां पातु ऐं क्षं शङ्करवल्लभा।
श्रीं ह्रीं क्लीं पातु सायं ऐ आं शाकम्भरी सदा॥२५॥
ॐ ह्रीं निशादौ मां पातु ॐ सं सागरवासिनी।
क्लीं निशीथे च मां पातु ॐ हं हरिहेश्वरी॥२६॥
क्लीं ब्राह्मे मुहूर्तेऽव्याद लं लां त्रिपुरसुन्दरी।
विसर्गा तु यत्स्थानं वर्जित कवचेन तु॥२७॥
क्लीं तन्मे सकलं पातु अं क्षं ह्लीं बगलामुखी।
इतीदं कवचं दिव्य मन्त्राक्षरमय परम्॥२८॥
त्रैलक्यविजयं नाम सर्ववर्णमयं स्मृतम्।
अप्रकाश्यं सदा देवि श्रोतव्यं च वाचिकम्॥२९॥
दुर्जनायाकुलीनाय दीक्षाहीनाय पार्वति।
न दातव्यं न दातव्यमित्याज्ञा पारमेश्वरी॥३०॥
दीक्षाकार्य विहीनाय शक्तिभक्ति विरोधिने।
कवचस्यास्य पठनात् साधको दीक्षितो भवेत्॥३१॥
कवचेशमिदं गोप्यं सिद्धविद्यामयं परम्।
ब्रह्मविद्यामयं गोप्यं यथेष्टफलदं शिवे॥३२॥
न कस्य कथितं चैतद् त्रैलोक्य विजयेश्वरम्।
अस्य स्मरणमात्रेण देवी सद्योवशी भवेत्॥३३॥
पठनाद् धारणादस्य कवचेशस्य साधकः।
कलौ विचरते वीरा यथा श्रीबगलामुखी॥३४॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इदं वर्म स्मरन् मन्त्री संग्रामे प्रविशेद् यदा।
युयुत्सुः पठन् कवचं साधको विजयी भवेत्॥३५॥
शत्रुं कालसमानं तु जित्वा स्वगृहमेति सः।
मूर्ध्नि धृत्वा यः कवचं मन्त्रगर्भं सुसाधकः॥३६॥
ब्रह्माद्यमरान् सर्वान् सहसा वशमानयेत्।
धृत्वा गले तु कवचं साधकस्य महेश्वरि॥३७॥
वशमायान्ति सहसा रम्भाद्यप्सरसां गणाः।
उत्पातेषु धोरेषु भयेषु विविधेषु च॥३८॥
रोगेषु च कवचेशं मन्त्रगर्भं पठेन्नरः।
कर्मणा मनसा वाचा तद्भयं शांतिमेष्यति॥३९॥
श्रीदेव्या बगलामुख्याः कवचेशं मयोदितम्।
त्रैलोक्यविजयं नाम पुत्रपौत्र धनप्रदम्॥४०॥
ऋणं च हरते सम्यक् लक्ष्मीर्भोगविवर्धिनी।
बन्ध्या जनयते कुक्षौ पुत्ररत्नं न चान्यथा॥४१॥
मृतवत्सा च विभृयात् कवचं च गले सदा।
दीर्घायुर्व्याधिहीनश्च तत्पुत्रो वर्धतेऽनिशम्॥४२॥
इतीदं बगलामुख्याः कवचेशं सुदुर्लभम्।
त्रैलोक्यविजयं नाम न देयं यस्यकस्यचित्॥४३॥
अकुलीनाय मूढाय भक्तिहीनायदम्भिने।
लाभयुक्ताय देवेशि न दातव्यं कदाचन्॥४४॥
लोभदम्भविहीनाय कवचेशं प्रदीयताम्।
अभक्तेभ्यो अपुत्रेभ्यो दत्वा कुष्ठी भवेन्नरः॥४५॥
रवौ रात्रौ च सुस्नातः पूजागृहगतः सुधीः।
दीपमुज्ज्वाल्य मूलेन पठेद्वर्मेदमुत्तमम्॥४६॥
प्राप्तौ सत्यां त्रिरात्रौ हि राजा तद्गृहमेष्यति।
मण्डलेशो महेशानि देवि सत्यं न संशय॥४७॥
इदं तु कवचेशं तु मया प्रोक्त नगात्मजे।
गोप्यं गुह्यतरं देवि गोपनीयं स्वयोनिवत्॥४८॥

इति विश्वयामले बगलामुख्यास्त्रैलोक्यविजयं कवचम्

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अथ मातङ्गी त्रैलोक्य मङ्गल कवचम्

विनियोग:- ॐ अस्य श्रीमातङ्गी कवचस्य श्रीदक्षिणामूर्तिः ऋषिः। विराट् छन्दः। श्रीमातङ्गी देवता। चतुर्वर्ग सिद्धये पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास :- श्रीदक्षिणा मूर्ति ऋषये नमः शिरसि। विराट् छन्दसे नमः मुखे। श्रीमातङ्गी देवतायै नमः हृदि। चतुवर्ग सिद्धये जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

मूल कवच स्तोत्र

ॐ शिरो मातङ्गिनी पातु भुवनेशी तु चक्षुषी।
तोडला कर्णयुगलं त्रिपुरा वदनं मम॥
पातु कण्ठे महामाया हृदि माहेश्वरी तथा।
त्रिपुष्पा पार्श्वयाः पातु गुदे कामेश्वरी मम॥
ऊरुद्वये तथा चण्डी जङ्घयोश्च हरप्रिया।
महामाया पादयुग्मे सर्वाङ्गेषु कुलेश्वरी॥
अङ्गं प्रत्यङ्गकं चैव सदा रक्षतु वैष्णवी।
ब्रह्मरन्ध्रे सदा रक्षेन् मातङ्गी नाम संस्थिता॥
रक्षेन्नित्यं ललाट सा महापिशाचिनीति च।
नेत्रयोः सुमुखी रक्षेत् देवी रक्षतु नासिकाम्॥
महापिशाचिनी पायान्मुखे रक्षतु सर्वदा।
लज्जा रक्षतु मां दन्ताञ्चौष्ठौ सम्मार्जनी करा॥
चिबुके कण्ठदेशे च ठकार त्रितयं पुनः।
सविसर्गं महादेवि! हृदयं पातु सर्वदा॥
नाभिं रक्षतु मां लोला कालिकाऽवतु लोचने।
उदरे पातु चामुण्डा लिङ्गे कात्यायनी तथा॥
उग्रतारा गुदे पातु पादौ रक्षतुचाम्बिका।
भुजौ रक्षतु शर्वाणी हृदयं चण्डभूषणा॥
जिह्वायां मातृका रक्षेत्पूर्वे रक्षतु पुष्टिका।
विजया दक्षिणे पातु मेधा रक्षतु वारुणे॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नेर्ऋत्ये सुदया रक्षेद् वायव्यां पातु लक्ष्मणा।
ऐशान्यां रक्षेन्मां देवी मातङ्गी शुभकारिणी॥
रक्षेत् सुरेशी चाग्नेय्यां बगला पातु चोत्तरे।
ऊर्ध्वं पातु महादेवी! देवानां हितकारिणी॥
पाताले पातु मां नित्यं वशिनी विश्वरूपिणी।
प्रणवं च तमो माया कामबीजं च कूर्चकम्॥
मातङ्गिनी ङेयुतास्त्रं वह्निजायाऽवधिर्मनुः।
सार्द्धैकादश वर्णा सा सर्वत्र पातु मां सदा॥
इति ते कथितं देवि! गुह्याद् गुह्यतरं परम्।
त्रैलोक्य - मङ्गलं नाम कवचं देव दुर्लभम्॥
य इदं प्रपठेन्नित्यं जायते सम्पदालयम्।
परमैश्वर्यमतुलं प्राप्नुयान्नात्र संशयः॥
गुरुमभ्यर्च्य विधिवत् कवचं प्रपठेद्यदि।
ऐश्वर्यं सु कवित्वं च वाक् सिद्धि लभते ध्रुवम्॥
नित्यं तस्य तु मातङ्गी महिला मङ्गलं चरेत्।
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ये देवाः सुर सत्तमाः॥
ब्रह्मराक्षस वेताला ग्रहाद्या भूतजातयः।
तं दृष्ट्वा साधकं देवि लज्जायुक्ता भवंति ते॥
कवचं धारयेद्यस्तु सर्वसिद्धिं लभेद् ध्रुवम्।
राजानोऽपि च दासाःस्युः षट्कर्माणि च साधयेत्॥
सिद्धो भवति सर्वत्र किमन्यैर्बहु भाषितैः।
इदं कवचमज्ञात्वा मातङ्गी यो भजेन्नरः॥
अल्पायुर्निर्द्धनां मूर्खो भवत्येव न संशयः।
गुरौ भक्तिः सदा कार्या कवचे च दृढा मतिः॥
तस्मै मातङ्गिनी देवी सर्वसिद्धिं प्रयच्छति॥

इति नन्द्यावर्ते उत्तरखण्डे त्वरित फलदायिनी मातंगिनी कवचं समाप्तम्

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री कमला कवचम्

अथ वक्ष्ये महेशानि कवचं सर्वकामदम्।
यस्य विज्ञानमात्रेण भवेत्साक्षात्सदाशिवः॥१॥
नार्चनं तस्य देवेशि मन्त्रमात्रं जपेन्नरः।
स भवेत्पार्वतीपुत्रः सर्वशास्त्रविशारदः॥२॥
विद्यार्थिनां सदा सेव्या धनदात्रीविशेषतः।
धनार्थिभिः सदा सेव्या कमला विष्णुवल्लभा॥३॥

विनियोगः- अस्याश्चतुरक्षरी विष्णुवल्लभायाः कवचस्य श्रीभगवान शिव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दो वाग्भवी शक्तिर्देवता, वाग्भवं बीजं, लज्जा रमा कीलकं, कामबीजात्मकं कवचं मम सुपाण्डित्य कवित्व सर्वसिद्धि समृद्धये पाठे विनियोगः।

ऐङ्कारो मस्तके पातु वाग्भवी सर्वसिद्धिदा।
ह्रीं पातु चक्षुषोर्मध्ये चक्षुर्युग्मे च शाङ्करी॥४॥
जिह्वायां मुखवृत्ते च कर्णयोर्दन्तयोर्नसि।
ओष्ठाधरे दन्तपंक्तौ तालुमूले हनौ पुनः॥५॥
पातु मां विष्णुवनिता।
लक्ष्मीः श्रीवर्णरूपिणी॥६॥
कर्णयुग्मे भुजद्वन्द्वे स्तनद्वन्द्वे च पार्वती।
हृदय मणिबन्धे च ग्रीवायां पार्श्वयोः पुनः॥६॥
पृष्ठ देशे तथा गुह्ये वामे च दक्षिणे तथा।
उपस्थे च नितम्बे च नाभौ जंघाद्वये पुनः॥८॥
जानुचक्रें पदद्वद्वे घुटिकेंगुलिमूलके।
स्वधातुप्राणशक्त्यात्मसीमन्ते मस्तके पुनः॥९॥
विजया पातु भवने जया पातु सदा मम।
सर्वांगे पातु कामेशी महादेवी सरस्वती॥१०॥
तुष्टिः पातु महामाया उत्कृष्टिः सर्वदाऽवतु।
ऋद्धिः पातु महादेवी सर्वत्र शम्भुवल्लभा॥११॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वाग्भवी सर्वदा पातु पातु मां हरगेहिनी।
रमा पातु महादेवी पातु माया स्वराट् स्वयं॥१२॥
सर्वांगे पातु मां लक्ष्मीर्विष्णुमाया सुरेश्वरी।
शिवदूती सदा पातु सुन्दरी पातु सर्वदा॥१३॥
शैरवी पातु सर्वत्र भेरुण्डा सर्वदाऽवतु।
त्वरिता पातु मां नित्यमुग्रतारा सदाऽवतु॥१४॥
पातु मां कालिका नित्यं कालरात्रिः सदाऽवतु।
नवदुर्गा सदा पान्तु कामाक्षी सर्वदाऽवतु॥१५॥
योगिन्यः सर्वदा पान्तु मुद्राः पान्तु सदा मम।
मात्रा पान्तु सदा देव्यश्चक्रस्था योगिनीगणाः॥१६॥
सर्वत्र सर्वकार्येषु सर्वकर्मसु सर्वदा।
पातु मां देवदेवी च लक्ष्मीः सर्वसमृद्धिदा॥१७॥
इति ते कथितं दिव्यं कवचं सर्वसिद्धये।
यत्र तत्र न वक्तव्यं यदीच्छेदात्मनो हितम्॥१८॥
शठाय भक्तिहीनाय निन्दकाय महेश्वरी।
न्यूनांगे चातिरिक्तांगे दर्शयेन्न कदाचन॥१९॥
न स्तवं दर्शयेद्दिव्यं सन्दर्श्य शिवहा भवेत्।
कुलीनाय महेच्छाय दुर्गाभक्तिपराय च॥२०॥
वैष्णवाय विशुद्धाय दद्यात्कवचमुत्तमम्।
निजशिष्याय शांताय धनिने ज्ञानिने तथा॥२१॥
दद्यात् कवचमित्युक्तं सर्वतन्त्रसमन्वितम्।
शनौ मङ्गलवारे च रक्तचन्दनकैस्तथा॥२२॥
यावकेन लिखेन्मन्त्रं सर्वतन्त्रसमन्वितम्।
विलिख्य कवचं दिव्यं स्वयम्भुकुसुमैः शुभैः॥२३॥
स्वशुक्रः परशुक्रैर्वा नानागन्धसमन्वितैः।
गोरोचना कुंकुमेन रक्तचन्दनकेन वा॥२४॥
सुतिथौ शुभयोगे वा श्रवणायां रवेर्दिने।
आश्विन्यां कृत्तिकायां वा फाल्गुन्यां वा मघासु च॥२५॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूर्वभाद्रपदायोगे स्वात्यां मंगलवासरे।
विलखेत्प्रपठेत्स्तोत्रं शुभयोगे सुरालये॥२६॥
आयुष्मत्प्रीतियोगे च ब्रह्मयोगे विशेषतः।
इन्द्रयोगे शुभे योगे शुक्रयोगे तथैव च॥२७॥
कौलके बालके चैव वणिजे चैव सत्तमः।
शून्यागारे श्मशाने च विजने च विशेषतः॥२८॥
कुमारीं पूजयित्वादौ यजेद्देवीं सनातनीम्।
मत्स्यैर्मांसैः शाकसूपैः पूजयेत्परदेवताम्॥२९॥
घृताद्यैः सोपकरणैः पुष्पधूपैर्विशेषतः।
ब्राह्मणान् भोजयित्वा च पूजयेत्परमे श्वरीं॥३०॥
अखेटकमुपाख्यानं तत्र कुर्याद्दिनत्रयम्।
तदाधरेन्महाविद्यां शंकरेण प्रभाषिताम्॥३१॥
मारणद्वैषणादीति लभते नात्र संशयः।
स भवेत्पार्वतीपुत्रः सर्वशास्त्रपुरस्कृतः॥३२॥
गुरुर्द्देवो हरः साक्षात्पत्नी तस्य हरप्रिया।
अभेदेन भयेद्यस्तु तस्य सिद्धिरदूरतः॥३३॥
पठति य इह मर्त्यो नित्यमार्द्रान्तरात्मा जपफलमनुमेयं लप्स्यते यद्विधेयम्।
स भवति पदमुच्चैः सम्पदां पादनम्र- क्षितिपमुकुटलक्ष्मीर्लक्षणानां चिराय॥३४॥

इति विश्वसारतंत्रे कमलात्मिका कवचम्

श्री कुण्डलिनी कवचम्

श्री आनन्द भैरवी उवाच

अथ वक्ष्ये महादेव! कुण्डलीकवचं शुभम्।
परमानन्ददं सिद्धं सिद्धवृन्दनिषेवितम्॥१॥
यद् धृत्वा योगिनः सर्वे धर्माधर्म प्रदर्शकाः।
ज्ञानिनो-मानिनो धीरा विचरन्ति यथा नराः॥२॥
सिद्धयोऽप्यणिमाद्याश्च करस्थाः सर्वदेवताः।
एतत् कवचपाठेन देवेन्द्रो योगिराड् भवेत्॥३॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऋषयो योगिनः सर्वेजटिलाः कुलभैरवाः।
प्रातःकाले त्रिवारं च मध्याह्ने वारयुग्मकम्।।४।।
सायाह्ने वारमेकं तु पठत् कवचमुत्तमम्।
पाठादेव महायोगी कुण्डलीदर्शनं लभेत्।।५।।

विनियोग - ॐ अस्य श्रीकुलकुण्डली कवचस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीकुलकुण्डली देवता, सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास :- श्री ब्रह्मा ऋषये नमः शिरसि, गायत्री छन्दसे नमः मुखे, श्रीकुलकुण्डली देवतायै नमः हृदि, सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

कवच पाठ

ॐ ईश्वरी जगद्धात्री ललितासुन्दरी परा।
कुण्डली कुलरूपा तु पातु मां कुलचण्डिका।।१।।
शिरो मे ललिता देवी पातूग्राख्या कपोलकम्।
ब्रह्मरन्ध्रेण पुटिता भ्रूमध्यं पातु मे सदा।।२।।
नेत्रत्रयं महाकाली कालाग्नि भक्षिका शिखां।
दन्तावलीं विशालाक्षी ओष्ठमिष्ठान्नवासिनी।।३।।
कामवीजात्मिका विद्या अधरं पातु मे सदा।
लृ युगस्था गण्डयुग्मं मायाबीजा रसप्रिया।।४।।
भुवनेशी कर्णयुग्मं चिबुकं कनकेश्वरी।
कपिला मे गलं पातु सर्वबीजस्वरूपिणी।।५।।
मातृका वर्णपुटिता कुण्डली कण्ठमेव च।
हृदयं कालपुत्री च कङ्काली पातु मे मुखम्।।६।।
भुजयुग्मं चण्डदुर्गा चण्डदोर्दण्डखण्डिनी।
स्कंधयुग्मं स्कन्दमाता कपोलं क्रोधकालिका।।७।।
अंगुल्यग्रं कुलानन्दा श्रीविद्या नखमण्डलम्।
कालिका भुवनेशानी पृष्ठदेशं सदाऽवतु।।८।।
पार्श्वयुग्मं महावीरा वीरासन - धराऽभया।
पातु मां कुलदर्भस्था, नाभिमुदरमम्बिका।।९।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कटिदेशं पृष्ठसंस्था महामहिषघातिनी।
लिङ्गस्थानं महामुद्रा भगमाला मनुप्रिया॥१०॥
भगीरथप्रिया धूम्रा मूलाधारं गणेश्वरी।
चतुर्दलं कामविद्या दलाग्रं मे वसुन्धरा॥११॥
धीर्धरा धारणाख्या च ब्रह्माणी पातु मे मुखम्।
मेदिनी पातु कमला वाग्देवी पूर्वगं दलम्॥१२॥
छेदिनी दक्षिणे पार्श्वे पातु चण्डा महातपा।
चण्डघण्टा सदापातु योगिनी वारुणं दलम्॥१३॥
उत्तरस्थं दलं पातु पृथिवीमिन्द्र - लालिता।
चतुष्कोणं कामविद्या ब्रह्मविद्याष्ट - कोणकम्॥१४॥
अष्टदलं सदापातु सर्ववाहन वाहना।
चतुर्भुजा सदापातु डाकिनी कुल चञ्चला॥१५॥
मेढ्रस्था मदनाधारा पातु मे चारुपङ्कजम्।
स्वयम्भूलिङ्गं चार्वङ्गी कोटराक्षी ममासनम्॥१६॥
कदम्बं वनगा पातु कदम्बवनवासिनी।
वैष्णवीं परमा माया पातु मे वैष्णवं पदम्॥१७॥
षड्दलं राकिणी पातु रङ्गिनी कामवासिनी।
कामेश्वरी कामरूपा कृष्णं मे पीतवाससं॥१८॥
धनुः सा वनदुर्गा मे शङ्खं मे शङ्खिनी शिवा।
चक्रं चक्रेश्वरी पातु कमलाक्षी गदां मम॥१९॥
पद्मं मे पद्मगन्धा च पद्ममाला मनोहरा।
बादिलान्ताक्षरं पातु लाकिनी लोकपावनी॥२०॥
षड्दले स्थित देवांश्च पातु कैलास -वासिनी।
अग्निवर्णा सदापातु गलं मे परमेश्वरी॥२१॥
मणिपूरं सदापातु मणिमाला - विभूषणा।
दशपत्रं दशवर्णं डादिफान्तं त्रिविक्रमा॥२२॥
पातु नीला महाकाली भद्रा भीमा सरस्वती।
अयोध्यावासिनी देवी महापीठ - निवासिनी॥२३॥
वाग्भवाद्या महाविद्या कुण्डली कालरूपिणी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दशच्छदशतं पातु रुद्रं रुद्रात्मकं मम॥२४॥
सूक्ष्मा सूक्ष्मतरा पातु सूक्ष्मस्थान निवासिनी।
राकिनी लोकजननी पातु कूटाक्षरान्विता॥२५॥
तैजसं पातु नियतं रजकी राजपूजिता।
विजया कुलवीजस्था तवर्गतिमिरापहा॥२६॥
चन्द्रात्मिका मणिग्रन्थिं भेदिनी पातु सर्वदा।
भगलामा भृगुसुता पातु मां नाभिवासिनी॥२७॥
नन्दिनी पातु सकलं कुण्डली कालकल्पिता।
हृत्पद्मं पातु कालाख्या धूम्रवर्णा मनोहरा॥२८॥
दलद्वादश वर्णं च भास्करी भाव सिद्धिदा।
पातु मे परमा विद्या क वर्गं कामचारिणी॥२९॥
च वर्गं चारुरसना व्याघ्रास्या टङ्कधारिणी।
टकारं पातु कृष्णाख्या हाकिनी पातु कालिका॥३०॥
ठंकुराङ्गी ठकारं मे बीजभाषा महोदया।
ईश्वरं पातु विमला मम हृत् पद्मवासिनी॥३१॥
कर्णिकां कालसन्दर्भा योगिनी योगमातरं।
इन्द्राणी वारुणी पातु कुलमाला कुलान्तरम्॥३२॥
तारिणी शक्तिमाता च कण्ठवाक्यं सदाऽवतु।
विप्रचिता महोग्रोग्रा प्रभा दीप्ता घनाऽमला॥३३॥
वाक्स्तम्भिनी वज्रदेहा वैदेही वृषवाहिनी।
उन्मत्तानन्दचित्ता च कुलेशी सा भगातुरा॥३४॥
मम षोडशपत्राणि पातु मातृतया स्थिता।
सुरान् रक्षतु वेदज्ञा सर्वभाषा च कालिका॥३५॥
ईश्वरार्द्धासनगता प्रपायान्मे सदाशिवा।
शाकम्भरी महामाया शाकिनी पातु सर्वदा॥३६॥
भवानी भवमाता च पायाद् भ्रूमध्य पङ्कजं।
द्विदलं व्रतकामाख्या अष्टाङ्गसिद्धिदायिनी॥३७॥
पातु मामखिलानन्दा मनोरूपा जपप्रिया।
लकारं लक्षणाक्रान्ता सर्वलक्षणलक्षणा॥३८॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कृष्णाजिनधरा देवी क्षकारं पातु सर्वदा।
द्विदलस्थं सर्वदेवं सदापातु वरानना॥३९॥
बहुरूपा विश्वरूपा हाकिनी पातु चण्डिका।
हरा परशिवं पातु मानसं पातु पञ्चमी॥४०॥
षट्चक्रस्था सदापातु षट्चक्रकुलवासिनी।
अकारादि क्षकारान्ता विन्दुसर्ग समन्विता॥४१॥
मातृकार्णा सदापातु कुण्डली ज्ञानकुण्डली।
पूर्णकाली गतिप्रेता पूर्णगिरितटं शिवा॥४२॥
उड्डीयानेश्वरी देवी सकलं पातु सर्वदा।
कैलास पर्वतं पातु कैलासगिरि - वासिनी॥४३॥
डाकिनी राकिणी शक्तिर्लाकिनी काकिनी कला।
शाकिनी हाकिनी देवी षट्चक्रादीन् प्रपातु मे॥४४॥
कैलासाख्यं सदापातु पञ्चानन - तनूद्भवा।
हिरण्यवर्णा रजनी चन्द्रसूर्याग्नि - भक्षिणी॥४५॥
सहस्त्रदलपद्मं मे सदापातु कुलाकुला।
सहस्त्रदलपद्मस्था दैवतं पातु भैरवी॥४६॥
काली तारा षोडशाख्या मातङ्गी पद्मवासिनी।
शशिकोटि गलद्रूपा पातु मे सकलां तनुम्॥४७॥
रणे घोरे जल दोषे युद्धे वादे श्मशानके।
सर्वत्र गमने ज्ञाने सदा मां पातु शैलजा॥४८॥
पर्वते विविधावासे विनाशे पातु कुण्डली।
पादादि ब्रह्मरन्ध्रान्तं सर्वाकाशं सुरेश्वरी॥४९॥
सदापातु सर्वविद्या सर्वज्ञानं सदा मम।
नवलक्षमहाविद्या दशदिक्षु प्रपातुमाम्॥५०॥

॥फलश्रुति॥

इत्येतत् कवचं देव कुण्डलिन्याः प्रसिद्धिदं।
ये पठन्ति ध्यानयोगे योगमार्ग व्यवस्थिताः।
ते यान्ति मोक्षपदवीमैहिके नात्र संशयः॥१॥

रुद्रयामले उत्तरखण्डे कन्दवासिनी कवचं सम्पूर्णम्

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री यमुना कवचम्

मान्धातोवाच

यमुनायाः कृष्णराज्ञाः कवचं सर्वताऽमलम्।
दहि मह्यं महाभाग धारयिष्याम्यहं सदा॥१॥

सौभरिरुवाच

यमुनायाश्च कवचं सर्वरक्षाकरं नृणाम्।
चतुष्पदार्थदं साक्षाच्छृणु राजन्महामते॥२॥
कृष्णां चतुर्भुजां श्यामां पुण्डरीकदलेक्षणाम्।
रथस्थां सुन्दरीं ध्यात्वा धारयेत्कवचं ततः॥३॥
स्नातः पूर्वमुखो मौनी कृतसंध्यः कुशासने।
कुशैर्बद्धशिखो विप्रः पठेद्वै स्वस्तिकासनः॥४॥
यमुना मे शिरः पातु कृष्णा नेत्रद्वयं सदा।
श्यामा भ्रूभंगदेशं च नासिकां नाकवासिनी॥५॥
कपोलौ पातु मे साक्षात्परमानन्दरूपिणी।
कृष्णवामांससंभूता पातु कर्णद्वयं मम॥६॥
अधरौ पातु कालिन्दी चिबुकं सूर्यकन्यका।
यमस्वसा कंधरां च हृदयं मे महानदी॥७॥
कृष्णप्रिया पातु पृष्ठं तटिनी मे भुजद्वयम्।
श्रोणीतटं च सुश्रोणी कटिं मे चारुदर्शना॥८॥
उरुद्वयं तु रंभारूर्जानुनी अधिमेदिनी।
गुल्फौ रासेश्वरी पातु पादौ पापापहारिणी॥९॥
अंतर्बहिरधश्चोर्ध्वं दिशासु विदिशासु च।
समंतात्पातु जगतः परिपूर्णतमप्रिया॥१०॥
इदं श्रीयमुनायाश्च कवचं परमाद्भुतम्।
दशवारं पठेद्भक्त्या निर्धनो धनवान् भवेत्॥११॥
त्रिभिर्मासैः पठेद्धीमान् ब्रह्मचारी मिताशनः।
सर्वराज्याधिपत्यं च प्राप्नोति नात्र संशयः॥१२॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दशोत्तरशतं नित्यं त्रिमासावधि भक्तितः।
यः पठेत्प्रयतो भूत्वा तस्य किं किं न जायते॥१३॥
यः पठेत्प्रातरुत्थाय सर्वतीर्थफलंलभेत्।
अंते व्रजेत्परं धाम गोलोकं योगिदुर्लभम्॥१४॥

इति श्रीमद्गर्गाचाऽर्यः संहितायां श्रीमाधुर्यखण्डे श्रीसौभरिमान्धातृसंवादे श्रीयमुनाकवचं समाप्तम्

श्री परशुराम भार्गवकवचम्

श्री गणेशाय नमः

श्री नारायण उवाच

कैलास शिखरे रम्ये शंकरं लोकशंकरम्।
कैवल्यचरणं गौरी पप्रच्छ हितमद्रुतम्॥

पार्वत्युवाच

देवदेव महादेव देवेश वृषभध्वज।
त्वत्तः श्रुतान्यशेषाणिक जामदग्न्यस्यसाम्प्रतम्॥
हरे रंशावतीर्णस्य मन्त्रयन्त्रादिकान्यलम्।
न श्रुतंकवचंदेव न चोक्तं भवता मम॥
वक्तुमर्हसिदेवेश भक्तायै गुह्यमप्युत।
इति पुष्टः स गिरिशो मन्त्रयन्त्राङ्गतत्ववित्॥
उवाच प्रहसन्देवीं हिताय जगतामिदम्।
रहस्यमपि हि ब्रूयुर्लोकैकहितदुष्टयः॥
शिव उवाच श्रृणुप्रिये प्रियमिदं मम गुह्यतरं परम्।
धर्मार्थकाममोक्षाणामनायासं सुसिद्धिदम्॥
एकमौपायिकं मन्ये विष्णु वक्षः स्थलालयाम्।
श्रियमाकृष्टकामानामिदं कवचमद्भूतम्॥
एकातपत्रसहितां य इच्छेत्सागराम्बराम्।
स जामदग्न्यकवच नित्यमावर्तयेन्नरः॥
उद्दण्डशस्त्रदोर्दण्ड प्रचण्डरिपुमण्डलम्।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कथं जयेयुर्वीरेन्द्राः कवचानावृताङ्गकाः॥
परप्रयुक्तकृत्यादिदोषा भूतादयोऽपि वा।
प्रयान्ति भीता रामस्य वर्मणा वीक्ष्य रक्षितम्॥
किमन्येः कवचैर्देवि किमन्यैर्मनुभिश्च वा।
जामदग्न्यः परं यस्य दैवतं भृत्यवत्सलः॥
कवचस्यास्य गिरिजे ऋष्यादिन्यास कल्पनम्।
मूलमन्त्रोक्तविधिना कारयेत्साधकोत्तमः॥
अङ्गिराऋषिः वृहतीछन्दः।
श्रीमांजामदग्न्यो देवता॥
उद्दोण्डचलत्कुठार शिखरस्फारस्फुलिङ्गाङ्कुर-
ब्रातोमोघ महास्त्रनाशित जगद्विद्वेष वंशाटवीम।
वन्दे भार्गवमुग्रकार्मुधरं शान्तप्रसन्नाननं,
वीर श्रीपरिचुम्ब्यमानमहितस्वब्रह्म तेजो विधिम्॥
ॐ जामदग्न्यः शिरःपातु पातु मूर्धानमूर्ध्वदृक्।
ललाटं ललितः पातु भ्रुवौ भृत्यार्तिनाशनः॥
श्रवसी सुश्रवा मेऽव्यात्कर्णौ कर्णान्तलोचनः।
नेत्रे गोत्रार्तिहा मेऽव्याल्लोचने भवमोचनः॥
गण्डे में खण्डपरशुः कपोलो पातु शीलवान्।
नासे सुनासः पायान्मे नासिके दासवत्सल॥
रसनां रसरूपोऽव्याद्रसंज्ञां रेणुका सुत।
अधरौ पातु मे नित्यमधरीकृतशात्रवः॥
वक्त्रं चित्रचरित्रोऽव्याद्दन्तान्दन्तीन्द्र विक्रमः।
चिबुकं रिपुजित्पातु ग्रीवां श्रीवत्सलांछनः॥
स्कन्धौ में स्कन्दविजय कक्षे में क्षत्रियान्तकः।
भुजो मे सतत पातु सहस्त्रभुजशासनः॥
करो हितकरः पातु प्राणी क्षोणिभरापहा।
अङ्गुलीर्मङ्लगुणो नखानि मखकृन्मम॥
वक्षः पातुममाभीक्ष्णं क्षतजाभिषवप्रियः।
उरः पुरूषवीरो में पाश्वौं पातु परश्वधीः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उरस्थजगत्यापादुदरं मम सर्वदा॥
भयोपदोऽव्यान्नार्भि मध्यं निध्यातविष्टपः।
लिङ्ग शंकरशिष्योऽव्यादुपस्थं निस्तुलप्रभः॥
पायवपानं च मे पायात्सायकासनवान्सदा।
त्रि सत्पकृत्वः कुलहा त्रिकं मेऽवतुसर्वदा॥
परमेष्ठयवतात्पृष्ठं पिठरं दृढविक्रमः।
ऊरू मे सम पातु जानू मे जगतापतिः॥
जङ्घ संघातहन्ताव्यात्प्रपदे विपदान्तकः।
पादौ मे पादचार्यव्याच्चरणौ करुणानिधिः॥
पादाङ्गुली पापहा मे पायात्पादतले परः।
परश्वधधर पायाद्रामः पादनखानि मे॥
पूर्वाभिभाषी मां पायात्पूर्वस्यां दिशि संततम् ।
दक्षिणस्यामपिदिशि दक्षयज्ञान्तकप्रियः॥
पश्चिमस्यां सदापायात्पाश्चत्याम्बुधि मर्दनः।
वित्तेश रक्षिताशायां पायान्मा सत्यमार्चितः॥
सर्वतः सत्यजित्पायान्ममाङ्गनि भयात्प्रभुः।
मनो महेन्द्र निलयचित्त में दृप्तनाशनः॥
बुद्धिं सिद्धार्चितः पायादहंतामनहंकृतिः।
कर्माणि कार्तवीर्यारिर्हेलां हैहयवंशहा॥
हरत्वमोघदृङ्मोहं क्रोधं च क्रोधदर्पहा।
श्रियं करोतु में श्रीशः पुष्टि से पुष्टि वर्धनः॥
संतानं सततं दद्याद्भृगुसंतानभुरुहः।
आयूषि मे वितनुतादार्यः परमपूरूषः॥
आशां मे पूरयतवाशु कश्यथार्पित विष्टपः।
श्री मान्पपरारामोसां पातु सर्वात्मना सदा॥
ॐ इत्येत्कवचं दिव्यमभेद्यं मन्त्रियन्त्रिभिः।
कथितं देवि ते गुह्यं प्रियेतिपरमाद्भुतम्॥
न नास्किकाय नादात्रे न चाश्रद्धालवेप्रिये।
दे यान्याविनीतायै तन्नाभक्ताय कदाचन॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नाजापकाय नाज्ञात्रै तन्नाभक्ताय कदाचन।
नामालामन्त्रिणेदेवि प्रदेयं नाप्यमन्त्रिणे।
देयं श्रद्धालवे भक्त्या प्रणताय नतात्मने॥
गुणान्विताय शुद्धाय मन्त्रगोप्त्रे च मन्त्रिणे।
अवश्यमेतज्जप्तव्यं त्रिसन्ध्यं नियमान्वितैः॥
मन्त्रावसाने मन्त्रज्ञै रचितं मन्त्रसिद्धये।
वर्मेतच्च जपेन्मन्त्री जनेद्धा सततं मनुः॥
आसेचितादिव तरोर्फलं नाप्नोति सद्रसम्।
जयकामो भूर्जपत्रे रक्तबिन्दु भिरुज्वलैः॥
लिखित्वावर्तयेद्रात्री कवचं शतसंख्यया।
संपूज्य धूप दीपाद्येर्श्यात्वा च हृदिभार्गवम्॥
हस्ते बध्वा रणंगत्वा विजयश्रियमाप्नुयात्।
एवं संप्रस्थितस्यास्य विद्यावदे रणेऽपिवा॥
वाचस्पतिवा शक्रोवा वश्यः स्यात्किमुतापरे।
अथवा तिलकं कृत्वा रक्तक्षोदेन भामिनि॥
कवचेनाभजप्तेन कच्छंजयमवाप्नुयात्।
श्रीकामस्तु महेन्द्राद्रेर्द्रोणिं गत्वामनोहराम्॥
तत्रमण्डलमास्थाय चण्डभानुं विलोकयन्।
जपेदिदं महद्वर्म प्रत्यहं शतसंख्यया॥
मण्डान्ते श्रियं श्रेष्ठां लभते भार्गववचाज्ञया।
सिद्धयोविविधास्तस्य दिव्यज्योतिर्लतालयः॥
सिद्धयन्ति सिद्धवन्द्यस्य कृपयाविस्मयवहाः।
भूतप्रेतपिशाचाश्च रोगाश्च विविधाशुभाः॥
दुष्टा नृपास्तस्कराश्च व्याघ्रसिंह गजादयः।
श्रीमद्भृगुकुलोत्तमं दशदंशितमद्रिजे॥
दृष्ट्वैव हि पलायन्ते मृत्यु दृष्ट्वैव हि प्रजाः।
जामदग्न्स्य यो वांछेत्सान्निध्यं योगिदर्लभीम्॥
स महेन्द्रस्य शिखरे स्नात्वोपस्थाय भास्करम्।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तन्मध्यवर्तिनं शान्तं जटामण्डलमझिडतम्॥
परश्वधधनुर्दण्ड राजितांसद्वयान्वितम्।
अक्षसूत्रं सुविभ्राणं दक्षिणेऽङ्गुलिपल्लवे॥
वामजानुतलन्यस्त- वामपाणिकुशेशयम्।
उन्मज्जज्जलजग्रीवमामीलित- विलोचनम्॥
सुप्रसन्नमुखाम्भोज सुस्मितं पल्लवाधरम्।
सुन्दरं सुन्दरापाङ्गं भौगिभोगभुजद्वयम्॥
भक्तानुग्राहकं देवं जामदग्न्यं जगत्पतिम्।
ध्यायन्तमात्मनात्मानं ध्यायेत्प्रणतवत्सम्॥
अथ द्वादशभिः पुण्यैर्नामभिः पापहारिभिः।
जपतामिष्टदैर्भृत्य-पारिजातं समर्चयेत्॥
जामदग्न्यो जगन्नेता ब्रह्मण्यो ब्रह्मवत्सलः।
कार्तवीर्य कुलोच्छेता क्षत्रवंशप्रतापनः॥
विश्वजिद्दीक्षितोरामः कश्यपाशासुरद्रमः।
परश्वधधरः शान्तो महेन्द्रकृत केतनः॥
एतैर्द्वादशभिर्दिव्यैर्गोप्यैरभ्यर्च्य नामभिः।
उपजिष्ठेत्पुनर्गुह्यैर्मुख्यैः नामभिरीश्वरम्॥
क्षिप्रप्रसाद - जननैश्चतुर्वर्गफलोदयै।
हन्त ते सम्प्रवक्ष्यामि तान्यपि प्रणतासि यत्॥
इमानि गौरि नामानि सुगोप्यानि हृदयालयः।
त्रिधामा त्रिगुणातीतस्त्रिमूर्ति स्त्रिजगन्मयः॥
नारायणः परं ब्रह्मं परं तत्वं परात्पर।
भार्गवो धर्मचरणो भर्गरूपः सतां गतिः॥
इति षोडशभिस्तुत्वा नामभिर्ऋषिपुंगवम्।
सर्वाशिषां पति देवं सकलाभीष्टदायकैः॥
आत्मानं विन्यसेदङ्गष्वनेन कवचेन सः।
मृगीमुद्रिकयाधीमान् वज्रसारेण सारवित्॥
स्वप्ने पश्यति देवेशं भार्गवं भृगुनन्दनम्।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चिन्तितार्थप्रदं सौम्यं चिन्तामणिमिवापरम्।।
मासत्रयन्तु विन्यस्ते साक्षात्पश्यति जापकः।
मनसः सम्प्रसादेन लब्ध्वा बरमनुत्तमम्।।
अणिमादि गुणैर्युक्तो ब्रह्मलोकमवाप्नुयात्।
अथवा योगसिद्धिं यो धातु सिद्धिं च वांछति।।
कुरुक्षेत्रे महेन्द्र वा जपेदयुतमात्मवान्।
सर्वाश्चौषधयस्तस्य खेचरत्वादि सिद्धिदाः।।
रससिद्धिप्रदाश्चापि सिद्धयन्त्यस्य न संशयः।
महेन्द्राद्रिरिवक्षत्रं सिद्धिदं नास्तिभूतलेः।।
प्रस्फुरद्गुणसौवर्णराशीनां जन्मभूः परः।
तथेदमिव वर्मान्यद्धर्मादिफलदं न हि।।
कवचेऽस्मिन्सकृज्जप्ते मन्त्रावृत्तिसहस्त्रजम्।
फलामाप्नोत्यविकलं तस्मान्नित्यं जपेन्नरः।।
अमन्त्री वापि मन्त्रिवा भार्गवे भक्तिमान्नरः।
जपेन्नित्यमिदं वर्म मन्त्रसिद्धिमवाप्नुयात्।।
सारस्वतमिदं देवि कवचं वाक्यप्रदं नृणाम्।
मूकोऽपि वाग्भी भवति जपन्नेतद्गुरुर्यथा।।
नित्यं परश्वधधृत कवचस्यास्य धारणात्।
सभासुवदतां श्रेष्ठो राज्ञां भवति च प्रियः।।
वैदिकं तान्त्रिक चैव मान्त्रिकं ज्ञानुमुत्तमम्।
कवचस्याय जापी तु ब्रह्मज्ञानंविन्दति।।
इत्येदुक्तं कवचं मया हैहयविद्विषः।
गोपनीयमिदंदेवि ममात्मासिमणिर्यथा।।
धन्यं कवच नित्य सर्व सौभाग्य पूरितम्।
इति श्री विष्णुयामले उपरिभागे जामदग्न्य
दिव्यांजनकल्पे त्रयसित्रशत्पटल।

श्री भार्गवार्पणमस्तु

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्रीगङ्गा कवचम्

गङ्गा अष्टाक्षर मंत्र-ॐ ह्रीं श्रीं गङ्गायै स्वाहा।

ध्यानम्:- ददर्श पुरतो गङ्गा द्विभुजां मकरासनाम्।
कुन्देन्दु शङ्ख धवलां सर्वाभरण भूषिताम्॥

विनियोग :- ॐ गङ्गायै नमः। ॐ अस्य श्रीगङ्गा कवचस्य श्रीविष्णुः ऋषि। विराट् छन्दः। श्रीगङ्गा देवता। चतुर्दश पुरुषोद्धारणार्थ पाठे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास :- श्रीविष्णु ऋषये नमः शिरसि। विराट् छन्दसे नमः मुखे। श्रीगङ्गा देवतायै नमः हृदि। चतुर्दश पुरुषोद्धारणार्थ पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

स्तोत्रम्

ॐ द्रव्यरूपा महाभागा स्नाने च तर्पणेऽपि च।
अभिषेके पूजने च पातु मां शुक्लरूपिणी॥१॥
विष्णु पादप्रसूताऽसि वैष्णवी नामधारिणी।
पाहि मां सर्वतो रक्षेत् गङ्गा त्रिपथगामिनी॥२॥
मन्दाकिनी सदा पातु देहान्ते स्वर्ग वल्लभा।
अलक नन्दा च वामभागे पृथिव्यां या तु तिष्ठति॥३॥
भोगवती च पाताले स्वर्गे मन्दाकिनी तथा।
पञ्चाक्षरमिमं मन्त्रं यः पठेच्छ्रणुयादपि॥४॥
रोगी रोगात् प्रमुच्येत् बद्धो मुच्येत बन्धनात्।
गर्भिणी जनयेत् पुत्रं बन्ध्या पुत्रवती भवेत्॥५॥
गङ्गा स्मरण मात्रेण निष्पापो जायते नरः।
यः पठेद् गृहमध्ये तु गङ्गास्नान फलं लभेत्॥६॥
स्नान काले पठेद् यस्तु शतकोटि फलं लभेत्।
यः पठेत् प्रयतो भक्त्या मुक्तः कोटि कुलैः सह॥७॥

इति श्रीविष्णु यामलोक्त श्रीगङ्गा कवचम्

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥ श्री शरभ कवचम् ॥

॥ श्री देव्युवाच ॥

सर्वज्ञ सर्वमंत्रस्य सर्वाचार्य शिव प्रभो।
शरभं कवचं दिव्यं सर्व रक्षाकरं परम्॥
वज्रपञ्जर नामाख्यं वद मे करुणाकर।

॥ श्री ईश्वरोवाच ॥

वक्ष्यामि शृणु देवेशि सर्व लक्षणमद्भूतम्।
शरभं कवचं नाम्ना चतुर्वर्ग फलप्रदम्॥

विनियोगः- ॐ अस्य श्री शरभ शालुव पक्षिराजाख्य कवचस्य सदाशिव ऋषिः, बृहस्पति छन्दः, श्री शरभेश्वरो देवताः, प्रणवो बीजं, प्रकृतिः शक्तिः, अव्यक्तं कीलकं, चतुर्वर्ग फल प्राप्त्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः- शिरसि सदाशिवाय ऋषये नमः। मुखे बृहस्पत्यै छन्दसे नमः। हृदि श्री शरभेश्वेराय दैवतायै नमः। गुह्ये ॐ बीजाय नमः। पादयोः प्रकृत्यै शक्तये नमः। नाभौ अव्यक्त कीलकाय नमः। सर्वाङ्गे चतुर्वर्ग फल प्रात्यर्थे विनियोगाय नमः।

करन्यास एवं अंगन्यासः खां खीं खू खैं खौं खः से पूर्व की भाँति करे।

ध्यानम्

रत्नाभं सुप्रसन्नं त्रिनयनममृतोन्मत्त भूषाभिरामम्।
कारुण्याम्बोधिमीशं वरदमभयदं चन्द्ररेखावतंशम्॥
शंखाध्माताखिलाशा प्रतिहतविधिना भासमानात्मभासम्।
सर्वेशं शालुवेशं प्रणतभयहरं पक्षिराजं नमामि।

मानस पूजन-पूर्व की भांति करें।

॥ श्री महारुद्राय नमः ॥

ॐ श्री शिवः पुरतः पातु मायाधीशस्तु पृष्ठतः।
पिनाकी दक्षिणं पातु वामपार्श्वं महेश्वरः॥१॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शिरखाग्रं पातु मे शम्भु निर्टिलं पातु शंकरः।
ईश्वरो वदनं पातु भ्रुवोर्मध्यं पुरान्तकः॥२॥
भ्रुवो पातु मम स्थाणुः कपर्दी पातु लोचने।
शर्वो मे श्रोत्रयोः पातु वागीशः पातु लम्बिकाम्॥३॥
नासायोर्मे वृषारूढ़ो नासाग्रं वृषभध्वजः।
स्मरारिः पातु मे ताल्वेरोष्ठयोर्भक्त वत्सलः॥४॥
जिह्वां मम सदा पातु सर्व विद्या प्रदायकः।
पातु मृत्युञ्जयोदन्ताश्चिबुकं पातु भूतराट्॥५॥
परामेशः कपोलौ मे त्रिकं पातु कपालभृत्।
कण्ठं पशुपतिः पातु शुली पातु हनू मम॥६॥
स्कन्धद्वयं हरः पातु धूर्जटिः पातु मे भुजौ।
भुजद्वयं महादेवं ईशानो मम कर्पूरम्॥७॥
मुष्टिसन्धि जगन्नाथ प्रकोष्ठै चन्द्रशेखरः।
मणिबन्धं त्रिनेत्रो मे भीमः पातु करस्तलम्॥८॥
करपृष्ठं मृडः पातु रुद्रोंऽगुष्ठद्वयं मम।
उमासहायस्तर्जन्यौ भर्गो मे पातु मध्यमे॥९॥
अनामिके करालस्य कालकण्ठः कनिष्ठिके।
गंगाधरोंऽगुलीपर्वाण्य प्रमेयो नखानि मे॥१०॥
ईशानः पातुदोर्मूलं मेदो मे स्वस्तिदोऽवतु।
वक्षस्तत्पुरुषः पातु कक्षौ दक्षाध्वरान्तकः॥११॥
अघोरो हृदयं पातु वामदेव स्तनद्वयम्।
भालद्रुक् जठरं पातु नाभिं नारायण प्रियः॥१२॥
कुक्षिं प्रजाकरः पातु कुक्षिं पार्श्वं महाबलः।
सद्योजातः कटिं पातु पृष्ठ भागं तु भैरवः॥१३॥
मोहनोजघनं पातु गुदं मम जितेन्द्रियः।
ऊर्ध्वरेता लिंगदेशे वृषणं वृषभध्वजः॥१४॥
ऊरुद्वयं भवः पातु जानुयुग्मं भवान्तकः।
हुंकार पातु मे जंघे फट्कारो मम गुल्फके॥१५॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वषट्कारः पाद पृष्ठं वौषट्कारोंऽग्रिणस्तले।
स्वाहाकारोंऽगुलीर्पार्श्वे स्वधाकरोंऽगुली र्ममा।१६।।
त्वरितः सर्व सन्धिमे रोमकूपे नृसिंहाजित्।
त्वचं पातु मनोवेगः कालजिद् रुधिरं मम।।१७।।
पुष्टिदः पातु मे मांस मेदो मे स्वस्तिदोऽवतु।
सर्वात्मास्थिञ्चयं पातु मज्जां मम जगत्प्रभुः।।१८।।
शुक्रं वृद्धिकरः पातु बुद्धिं वाचामधीश्वरः।
मूलाधाराम्बुजं पातु भगवान् शरभेश्वरः।।१९।।
स्वाधिष्ठानमजः पातु मणिपूरं हरिप्रियः।
अनाहतं शालुवेशो विशुद्धं जीवनायकः।।२०।।
सर्वज्ञानप्रदो देवो ललाटं मे सदाशिवः।
ब्रह्मरन्ध्रं महादेवः पक्षिराजोऽखिलाकृतिम्।।२१।।
सर्वलोक वशीकारः पातु मां खरगर्वजित्।
वज्र-मुष्टि-वराभीति हस्तः कालाग्नि सन्निभः।।२२।।
विजया सहितः पातु चैन्द्रीं ककुभमाग्निजित्।
शक्ति-शूल-कपालासिहस्तः सौदामिनी प्रभः।।२३।।
जयायुतो महा-भीमः पातु वैश्वानरीं दिशाम्।
दण्डासि-शूल-मुसलं हाल पाशांकुश-कराम्बुजः।।२४।।
यमान्तकोऽजितायुक्तोयाम्यीं पातु दिशं यमीम्।
खड्ग-खेटाग्नि-परशु हस्तः शत्रु विमर्दनः।।२५।।
अपराजितया युक्तः सदाव्यान्नैर्ऋतिं दिशम्।
पाशांकुश-धनुर्बाण-पाणिः श्रेणी मुखाग्रगः।।२६।।
हरिद्राभौऽनिशं पायाद्वारुणीं दिशमात्मजित्।
ध्वजाग्र कवचोदार भुजो दुर्गायुतः खगः।।२७।।
चण्डवेगः शिवः पायात्सततं मारुतीं दिशम्।
गदाक्षस्त्रग्वराभीति करम्भोजः शिवायुतः।।२८।।
कनकाभो महातेजाः पातु कौबेरकी दिशम्।
त्रिशूलहि-कपालानिग्दोः स्तलो विद्ययायुतः।।२९।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भस्मोद्धूलित सर्वांगो दिशं पात्वपराजिताम्।
जपाक्ष-पुस्तकां भोज कमण्डलुं कराम्बुजः॥३०॥
ऊर्ध्वं पातु गिरायुक्तः सर्वभूत हितेरतः।
शंखं-चक्रं-गदाऽभीति-हस्तः पद्मायुतोऽव्ययः॥३१॥
नीलाञ्जन समोनीलः पातालं पात्वनारतम्।
अनुक्त विदिशः पातु शलवो नृसिंहजित्॥३२॥
शरभः पातु संग्रामे युद्धे वैरिकुलान्तकः।
सर्व सौभाग्यदः पातु जाग्रत्स्वप्न-सुषुप्तिषु॥३३॥
सर्व सम्पत्प्रदः पातु धनाध्यक्षादिकं मम।
सन्तानदः सुतान्पातु पुत्रानायुष्करोऽनिशम्॥३४॥
बन्धुन्वृद्धिकरः पातु गृहं मम वशं करः।
ग्रामं ग्रामेश्वरः पातु राज्यं मम दिगम्बरः॥३५॥
राष्ट्र शान्तिकरः पातु राजानं धर्मदायकः।
मार्गं दुष्टहरः पातु मम कार्याणि भैरवः॥३६॥
बटुकः पातु मे सर्वं त्र्यवस्थासु भयेषु च।
स्पर्श-वीक्षण-संयुक्तः प्राणरक्षां मनोजवः॥३७॥
प्रधानमूर्ति भावश्च प्रसादेष्वाशु सिद्धिकृत्।
साधकः प्रणवं माया बीजं नमो भगवतेति च॥
प्रतिनाम चतुर्थ्यतं स्पर्श इत्यभिधीयते।
द्विर्ज्वल-प्रज्वले साध्यं साधय द्विर्द्विरक्ष तत्॥३८॥
सर्वदुष्टेभ्यो हुं फट् स्वाहान्तं युग्-वीक्षणम्।
स्पृशन् पश्यन् जपं कृत्वा प्रतिस्थानं समाहितः॥३९॥
प्रार्थयेदखिलं स्वेष्टं हृदिस्थं शालुवेश्वरम्।
ये ग्राम घातकाः क्रुराःकपटादौष्टिका भटाः॥४०॥
तस्कराः शत्रवो क्रुद्धा वधे सक्ताः पलाशनाः।
छद्मचारः विदोभ्रष्टा दिवाचर-निशाचराः॥४१॥
ते सर्वे पक्षिराजस्य पक्षवात पराहताः।
स्त्री-बाल-सहिताः क्षिप्रं पितृ-मातृकुलान्विताः॥४२॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भग्नचित्ता गतप्राणाः यान्तु देशान्तरं स्वयम्।
ये च दुष्टग्रहाः शक्ताः पिशाचा देवयोनयः।।४३।।
चतुः षष्टिटगणाः सप्तसप्तत्युन्मादका ग्रहाः।
अष्टाशीति महाभूताः सप्तकोटि महाग्रहाः।।४४।।
नवति ज्वर भेदाश्च शत-भेदाश्च कृत्तिकाः।
पञ्चाशद् गणनाथश्च नियुताः कृत्रिम ग्रहाः।।४५।।
प्रेतारूढास्त्रयस्त्रिंशत्पिण्दान परायणाः।
अयुतं क्षुद्र-भोदाश्च चत्वारिंशच्छिवाह्वयाः।।४६।।
द्वात्रिंशद्वह्विवक्त्राश्च विंशन्मार्जार वक्त्रकाः।
चतुः षष्ट्याखुरूपाश्च ये चान्ये श्रुद्रयोनयः।।४७।।
ते सर्वे शालुवेशस्य शंखं-निःस्वन-मोहिताः।
विषण्णाः स्खलिताः शान्ताः प्राणः-त्राण-परायणाः।।४८।।
गच्छन्तु सम्प्रयोक्तारो देशान्तरमनिच्छया।
ये चान्येवनजा ग्राम्याः शुनकोरगवृश्चिकाः।।४९।।
आशीविषाः शिवा व्याला व्याघ्र-ऋक्षेभसूकराः।
गृध्राः श्येनाः खगाः काकाः दंशका भ्रंशका मृगाः।।५०।।
एते शरभहस्ताग्र-नख-क्षत-विमोक्षगाः।
स्त्रवद्रक्त छटासिक्ताः शिलातल निताडिताः।।५१।।
सम्भेदिता नखैः शीघ्रं नश्यंत्वखिल दुश्चराः।
न दंशत्पुरगाः क्वापि वातोतिवक्षितु।।५२।।
न दहत्वसवो वह्निरायात्वापो न चाधिकाः।
न वर्षत्वतिवृष्टिश्च न पतत्व शनिः क्वचित्।।५३।।
नाक्रामत्वपमृत्युश्च न रोगानाशुभं क्वचित्।
न म्रियते भञ्जनो न भवत्वशुभं क्वचित्।।५४।।
न वदन्त्वसहो वाक्यं जन्तवो मम देशके।
नास्याद्वैरं च जन्तूनां अन्येषां राजके मम।।५५।।
भवन्तु सुखिनः सर्वे-सर्वे सन्तु पतिव्रताः।
सर्वाः सूयन्तां सत्पुत्रान्पुत्रीश्च शुभ लक्षणाः।।५६।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सर्वे सर्वांश्च नंदन्तु सन्तु सम्कल्याणकारका:
राजन्वती मही चास्तु राजा भवतु धार्मिक:॥५७॥
सम्स्त्रवन्तु पयोगाव: फलंत्वोषध्योऽधिकम्।
भवन्तु फलदा वृक्षा: सिद्धिर्भवतु मेऽखिला॥५८॥
ममास्तु तरसा नूनमात्माज्ञानं चञ्चलम्।
काम-क्रोध-महा-मोह-लोभ सम्मोह मत्सरा:॥५९॥
न सन्तु भगवन्क्वापि सर्वेश करुणानिधे।
श्रीशरभेश्वर विश्वेश पक्षिराज दयानिधे॥६०॥
देहि मे निश्चलां भक्तिं प्रणतोऽस्मि पुन: पुन:।
गौरी वल्लभ कामारे कालकूटविषादन॥६१॥
मामुद्धरापदंभोधेस्त्रिपुरहनांतकान्तक ।
शालुवेश जगन्नाथ सर्वभूतहिते रत॥६२॥
पाहि मां तरसा चौरान् दुष्टानाशय नाशय।
कालभैरव विश्वेशं विश्व रक्षा परायण॥६३॥
रक्ष मूषक-चौरेभ्यो धान्यराशिमिमं प्रभो।
पक्षिराज महा-देवप्रणतार्ति विनाशन्॥६४॥
मदीयानि पदार्थानि नित्यं पालय-पालय।
सर्वज्ञ सर्वलोकेश सर्वदुष्ट विनाशका॥६५॥
तस्करेण हृतं वस्तु द्रुतं दापय दापय।
ये च मे वादिनो दिक्ष श्रद्रोपद्रवकारका:॥६६॥
सर्वाचार-परिभ्रष्टा मानहीनाश्च रोधका:।
ते सर्वे शालुवेशस्य मुसलायुध चूर्णिता:॥६७॥
नश्यन्तु निमिषार्धेन पावकावृत्ततूलवत्।
ये जन द्रोहिणोल्पाश्च तत्कालेऽहित भाषिण:॥६८॥
सत्कर्म विघ्नकर्तार: शान्त भक्षपरायाणा:।
तु शालुवेश हस्ताग्र-खड्गनिर्भिन्नदेहिन:॥६९॥
पतन्तु भूतले याम्यां प्राणास्तेषां प्रयांत्वलम्।
त्वदंघ्रि ध्यान निर्दग्धान्पायत्क्रेशार्थ मंत्रिण:॥७०॥
मह्यं द्रुहांति ये तेषां विभवानि क्षयंत्वरम्।
त्वदाचार परं भक्त साधकानां विवेकिनम्॥७१॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ये चाक्रमन्ति संग्रामे ते गच्छन्तु पराहताः।
त्वदीयेनैव मार्गेण संचरन्तं जपातुरम्॥७२॥
ये वदन्ति परीवादं भ्रान्ताः शीघ्रं भवन्तु ते।
त्वद्वसममलं वीरं ये मां तर्जते बलात्॥७३॥
मनसा ये न मन्यन्ते तत्स्वान्तं भ्राम्यतु क्षणात्।
मनसा कर्मणा वाचा ये इत्यंत्पतिदुःसहम्॥७४॥
ते महारोग शोकाघैः पतंत्वाशु शिवाज्ञया।
मदीयानि पदार्थानि गृहीन्तु योऽवलोकते॥७५॥
तत्क्षणादेव नष्टार्थो भवत्वादीश्वराज्ञया।
मदीयं द्रव्यमादय ये गच्छन्तिह तस्कराः॥७६॥
सिंहारि-पाश-सम्बद्धास्ते गच्छन्तु प्रदक्षिणम्।
सीमातीताश्च ये चौरा गृहीतद्रव्य संचयाः॥७७॥
अवशावयवास्तेन तु आगच्छन्तु शिवाज्ञया।
तस्करा निम्नगास्वान्त-धान्य-वस्त्र-धनादिकाः॥७८॥
पक्षिराज पराकृष्टाः समागच्छन्तुतेद्रुतम्।
समाहृत पदार्था ये देशातीताश्च तस्कराः॥७९॥
शरभेश-हलाकृष्टा तस्यागच्छन्तु सानुगाः।
चौरा गृहीतुमुद्युक्ताः समागच्छन्ति मां गृहे॥८०॥
ते शालुवेशपक्षोत्थ वातैर्गच्छन्तु सत्वरम्।
शान्तं विवेकिनं भक्तं त्वदांघ्रि ध्यानतत्परम्॥८१॥
दुह्यन्ति ये सहप्राणास्तेसं यान्तु यमां पुरीम्।
षट्त्रिंशत्कोष्ठके यन्त्रे रेखाशूलाग्र मध्यमे॥८२॥
स्वेच्छा मंत्रं लिखित्वा तु जपेदाराध्य साधकः।
मध्ये पाशांकुशे वह्नि साध्य नाम लिखित्क्रमात्॥८३॥
उदङ्मुखः सहस्त्रन्तु रक्षणाय जपेन्निशि।
नष्टाहरणके पञ्चरात्रं पश्चिमादिङ्मुखः॥८४॥
मारणे सप्तरात्रं तु दक्षिणोभिमुखो जपते्।
रोगानिग्रहणे चाष्टरात्रमाग्नेयदिङ्मुखः॥८५॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इति गुह्यं महा-मंत्र परमं सर्वसिद्धिदम्।
शरभेशाख्य-कवचं चतुर्वर्ग फलप्रदम्।।८६।।
पत्यहं प्रतिपक्षं वा प्रतिमास मथापि वा।
यो जपेत्प्रतिवर्ष वा वरेण्यः स शिवो भवेत्।।८७।।
एवं हित जपतः पुंसः पातकं चोपातकम्।
सर्व विलयमाप्नोति रविणा तिमिर यथा।।८८।।
दशाब्दं यो जपोन्नित्यं प्रातरूत्थाय साधकः।
सर्वसिद्धि समाश्रित्य देहान्ते स शिवो भवेत्।।८९।।
त्रिकालं ध्यानपूर्वं तु जपेद् द्वादश-वाषिकम्।
कायेनानेन सो देवि जीवन्मुक्तो भवेन्नरः।।९०।।
शतवारं जपेन्नित्यं मण्डलं यो वरानने।
सोऽणिमादि गुणान् प्राप्य विचरेत्स्वेच्छया सदा।।९१।।
अतलादिधरण्यादि भुवनानि चतुर्दश।
विचरेत्कामवित्सर्वेः पूज्यमानो यथासुखम्।।९२।।
त्रि-मासं यो जपन्नित्यमष्टोत्तर सहस्त्रकम्।
सहसा शरभेशस्य स्वरूपं लभतेऽम्बिके।।९३।।
षणमासं यो जपेद्देवि प्रयतस्तु दृढव्रतः।
मद्रूपधारकैर्मर्त्यैः सह सिद्धि प्रदायकैः।।९४।।
मम लोके च सम्पूज्यो विष्णुलोके तथैव च।
ब्रह्मलोके च रमते सर्वत्र न निवार्य्यते।।९५।।
इन्द्राग्नियम रक्षेश जलेश पवनैः सदा।
सोमेशानक लक्ष्मीशैर्द्दिशांपालैश्च पूज्यते।।९६।।
आदित्य सोम-पृथ्वीश-बुध-श्रीगुरु-भार्गवैः।
पूज्यते स ग्रहैः सर्वैः शनि-राहु-केतुभिः।।९७।।
भृग्वंगिरिः पुलस्त्यैश्च पुलहात्रि-मरीचिभिः।
दक्ष-काश्यप-भृगवादियोगिभिश्च पूज्यते।।९८।।
भैरवैर्वसुभी रूद्रैरादित्यैर्गाणपत्यकैः।
दिग्गजैश्च महानागैर्दिव्यास्त्रै दिव्य वाहनैः।।९९।।
माहेश्वरैर्महारत्नैः कामधेनु सुरद्रुमैः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सरिद्भिः सागरैः शैलैर्देवताभिस्तपोधनैः॥१००॥
दानवै राक्षसैः क्रूरैः सिद्ध-गन्धर्व-किन्नरैः।
यक्षैर्विद्याधरैर्नागैरप्सरोभिः प्रपूज्यते॥१०१॥
अपस्मार ग्रहैर्भीमैरून्मत्तैर्ब्रह्मराक्षसैः।
वेतालैः खेचरैर्मर्त्यैः कूष्माण्डै राक्षस ग्रहैः॥१०२॥
व्यालवक्त्रमोहारैः स्त्रीग्रहैः पापविग्रहैः।
भूत-प्रेत-पिशाचाद्यैर्ग्रहैः सर्वत्र पूज्यते॥१०३॥
ब्राह्मणैः क्षत्रियैर्वैश्यैः शूद्रैरन्यैश्च जातिभिः।
पशु-पक्षि-मृग-व्यालैः पूज्यते सर्वजन्तुभिः॥१०४॥
किमत्र बहुना देविः तव वक्ष्ये यथा तथम्।
मया च विष्णुना चैव विश्वकर्त्रा च पाल्यते॥१०५॥
भवान्या च गिरा लक्ष्म्या ब्राह्मण्याद्यष्ट मातृभिः।
प्राणेश्वरादि योगीन्द्रैर्योगिनीभिः स पाल्यते॥१०६॥
य इदं पूजयेद्भक्त्या तस्यासाध्यं न विद्यते।
कवचेन्द्रं महामंत्र जपेत्तस्मादनुत्तमम्॥१०७॥
उच्चाटने मरुद्वक्त्रो विद्वेषे राक्षसाननः।
प्रागाननोऽभिवृद्धौ तु सर्वेष्वीशानदिङ्मुखः॥१०८॥
यो जपेत्कवचं नित्यं त्रिकाल ध्यान पूर्वकम्।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति सहसा साधकोत्तमः॥१०९॥

॥ श्री देव्युवाच ॥

देव-देव महा-देव शिव कारुण्यवारिधे।
पाहि मां प्रणतं स्वामिन्प्रसीद परमेश्वर॥११०॥
सर्वार्थसाधनोपाय सर्वेश्वर्य-प्रदायक।
समस्तापत्प्रतीकार चन्द्रशेखर ते नमः॥१११॥
यत्कृत्यं तन्न कृतं यद कृत्यं तत्कृत्य वदाचरितम्।
उभयोः प्रायश्चितं शिव तव नामाक्षरोच्चरितम्॥११३॥

॥ श्री शरभ-कवचं सम्पूर्णम् ॥

●●●

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

।। विश्वावसु गन्धर्वराज कवच स्तोत्रम् ।।

यह कवच विवाह के चाहने वाले, कामोत्तेजना व बलपुष्टिकारक है। विवाह कामना हेतु २ मंत्र है एवं कवच के १९ वे श्लोक के जप करने से भी विवाह हेतु कन्या की प्राप्ति होती है।

प्रणाममन्त्रा :- **ॐ श्रीगणेशाय नमः।।। ३ ॐ श्रीसप्त शृङ्गनिवासिन्यै नमः ।। ३ ॐ श्रीविश्वावसु गन्धर्वराजाय कन्याभिः परिवारिताय नमः ।।३**

पूर्व पीठिका :- **ॐ नमस्कृत्य महादेवं सर्वज्ञं परमेश्वरम्।।**

।। श्रीपार्वत्युवाच ।।

**भगवन् देव देवेश शङ्कर परमेश्वर!
कथ्यतां मे परं स्तोत्रं कवचं कामिनां प्रियम्।।
जपमात्रेण यद्वश्यं कामिनी कुल भृत्यवत्।
कन्यादि वश्यमाप्नोति विवाहाभीष्ट सिद्धिदम्।।
भग दुःखैर्न बाध्येत सर्वैश्वर्यमवाप्नुयात्।।**

।। श्रीईश्वरोवाच ।।

**अधुना शृणु देवेशि! कवचं सर्वसिद्धिदं।
विश्वावसुश्च गन्धर्वो भक्तानां भग भाग्यदः।।
कवचं तस्य परमं कन्यार्थिणा विवाहदं।
जपेद् वश्यं जगत् सर्वं स्त्रीवश्यदं क्षणात्।।
भगदुःखं न तं याति भोगे रोग भयं नहि।
लिङ्गोत्कृष्ट-बलप्राप्ति वीर्यवृद्धिकरं परम्।।
महदैश्वर्यमवाप्रोति भग भाग्यादि सम्पदाम्।
नूतन सुभगंभुक्त्वा विश्वावसु प्रसादतः।।**

विनियोग :- **ॐ अस्यं श्रीविश्वावसु गन्धर्वराज कवच स्तोत्र मन्त्रस्य विश्व सम्मोहन वामदेव ऋषिः। अनुष्टप् छन्दः। श्रीविश्वावसु गन्धर्वराज देवता। ऐं क्लीं बीजं। क्लीं श्रीं शक्ति। सौः हंसः ब्लूं ग्लौं कीलकं श्रीविश्वावसु गन्धर्व राजप्रसादात् भगभाग्यादि सिद्धिपूर्वक यथोक्त फल प्राप्त्यर्थे जपे पाठे विनियोगः।।**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऋष्यादिन्यास :- ॐ शिरसि विश्वसम्मोहन वामदेवऋषये नमः। ॐ मुखे अनुष्टुप्छन्दसे नमः। ॐ हृदि श्रीविश्ववासु गन्धर्वराज देवतायै नमः। ॐ गुह्य ऐं क्लीं बीजाय नमः। ॐ पादयोः क्लीं श्रीं शक्तये नमः। ॐ नाभौ सौः हंसः ब्लूं ग्लौंकीलकाय नमः। ॐ सर्वाङ्गे श्रीविश्वावसुगन्धर्वराज प्रसादात् भगभाग्यादि सिद्धिपूर्वक यथोक्त फल प्राप्त्यर्थे जपे पाठे विनियोगाय नमः।।

षडङ्गन्यास	करन्यास	अङ्गन्यास
ॐ क्लीं ऐं क्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ क्लीं श्रीं गंधर्वराजाय क्लीं	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा
ॐ क्लीं कन्यादान रतोद्यमाय क्लीं	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्
ॐ क्ली धृतकह्लार मालाय क्लीं	अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुँ
ॐ क्लीं भक्तानां भगभाग्यादि वर प्रदानाय क्लीं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	नेत्रत्रयाय वौषट्
ॐ क्लीं सौः हंसः ब्लूं ग्लौं क्लीं	करतल करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

मन्त्र :- (१) क्लीं ऐं श्रीं गंधर्वराजाय कन्यादान रतोद्यमाय धृतकह्लारमालाय भक्तानां भगभाग्यादि वर प्रदानाय सौं हंसःब्लूं क्लीं नमः।

(२) ॐ क्लीं विश्वावसु गन्धर्वराजाय नमः ॐ ऐं क्लीं सौः हंसः सोहं ऐं ह्लीं क्लीं श्रीं सौः ब्लूं ग्लौं क्लीं विश्वावसु गन्धर्व्र राजाय कन्याभिः परिवारिताय कन्यादानरतोद्यमाय धृत कह्लारमालाय भक्तानां भग-भाग्यादि वर प्रदानाय सालङ्कारां सुरूपां दिव्यकन्या रत्नं मे देहि देहि मद् विवाहाभीष्टं कुरु कुरु सर्व स्त्रीवशमानय मे लिङ्गोत्कृष्टबलं प्रदापय मत्स्तोकं विवर्धय विवर्धय भगलिङ्गानन्दं कुरु कुरु भगलिङ्गरोगान् अपहर, मे भगभाग्यादि महदैश्वर्यं देहि देहि प्रसन्नो मे वरदो भव ऐं क्लीं सौः हंसः सोहं ऐं ह्लीं क्लीं श्रीं सौः ब्लूं ग्लौं क्लीं नमः स्वाहा।। २०० अक्षर, १२ बार जाप करें।।

गायत्री मंत्र :- ॐ क्लीं गन्धर्व राजाय विद्महे कन्याभिः परिवारिताय धीमहि तन्नो विश्वावसु प्रचोदयात् क्लीं (10 बार जाप करें)।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ध्यानम् :-

क्लीं कन्याभिः परिवारितं सुविलसत् कह्लार मालाधृतन्
स्तुष्ट्याभरणं विभूषितं सुनयनं कन्या प्रदानोद्यमम्।
भक्तानन्द करं सुरेश्वर प्रियं मिथुनासने संस्थितम्
स्त्रातुं मे मदनारविन्द सुमदं विश्वावसुं मे गुरुम् क्लीं॥

ध्यान के बाद उक्त मन्त्र को 12 बार और गायत्री मन्त्र को 10 बार जपें।

॥ कवच मूलपाठ ॥

क्लीं कन्याभिः परिवारितं सुविलसत् माला धृतन्
स्तुष्ट्याभरण विभूषितं सुनयनं कन्याप्रदानोद्यमम्।
भक्तानन्द करं सुरेश्वर प्रियं मिथुनासने संस्थितं
स्त्रातुं मे मदनारविन्द सुमदं विश्वाससुं मे गुरुम् क्लीं॥१॥
क्ली विश्वावसु शिरः पातु ललाटे कन्यकाऽधिपः।
नेत्रौ मे खेचरो रक्षेद्मुखे विद्या धरं न्यसेत् क्लीं॥२॥
क्लीं नासिकां मे सुगन्धाङ्गो कपोलौ कामिनी प्रियः।
हनुं हंसासनः पातु कटौ सिंह कटि प्रियः क्लीं॥३॥
क्लीं स्कन्धौ महाबलो रक्षेद् बाहू मे पद्मिनी प्रियः।
करौ कामाग्रजो रक्षेत् कराग्रे कुचमर्दनः क्लीं॥४॥
क्लीं हृदि कामेश्वरो रक्षेत् स्तनौ सर्वस्त्री कामजित्।
कुक्षौ द्वौ रक्षेद् गन्धर्वः ओष्ठाग्रे मघ्वार्चितः क्लीं॥५॥
क्लीं अमृताहार सन्तुष्टो उदरं मे नुदं न्यसेत्।
नाभिं मे सततं पातु रम्भाद्यप्सरसः प्रियः क्लीं॥६॥
क्लीं कटिं कामप्रियो रक्षेद् गुदं मे गन्धर्वनायकः।
लिङ्गमूले महालिङ्गी लिङ्गाग्रे भगभाग्यवान् क्लीं॥७॥
क्लीं रेतः रेताचलः पातु लिङ्गोत्कृष्टबलप्रदः।
दीर्घलिङ्गीमध्ये च मे लिङ्ग भोगकाले विवर्धय क्लीं॥८॥
क्लीं लिङ्गमध्ये च मे पातु स्थूललिङ्गी च वीर्यवान्।
सदोत्तिष्ठञ्च मे लिङ्गो भगलिङ्गार्चन प्रियः क्लीं॥९॥
क्लीं वृषणं सततं पातु भगास्ये वृषणस्थितः।
वृषणे मे बलं रक्षेद् बाला जङ्घाधः स्थितिः क्लीं॥१०॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्लीं जङ्घमध्ये च मे पातु रम्भादि जघन स्थितः।
जानू मे रक्ष कन्दर्पो कन्याभिः परिवारितः क्लीं॥११॥
क्लीं जानुमध्ये च मे रक्षेन्नारी जानु शिर स्थितः।
पादौ मे शिविकारूढ़ः कन्यकादि प्रपूजितः क्लीं॥१२॥
क्लीं आपाद मस्तकं पातु, धृत कह्लारमालिका।
भार्या मे सततं पातु सर्वस्त्रीणां सुभोगदः क्लीं॥१३॥
क्लीं पुत्रान् कामेश्वरो पातु कन्याः मे कन्यकाऽधिपः।
धनं गेहं च धान्यं च दास दासी कुलं तथा क्लीं॥१४॥
क्लीं विद्याऽऽयुः सबलं रक्षेद् गन्धर्वाणां शिरोमणिः।
यशः कीर्तिञ्च कान्तिञ्च गजाश्वादि पशून् तथा क्लीं॥१५॥
क्लीं क्षेमारोग्यं च मानं च पथिषु च बालालये।
वाते मेघे तडित्-पतिः रक्षेच्चित्राङ्गदाग्रजः क्ली॥१६॥
क्लीं पञ्चप्राणादि देहं च मनादि सकलेन्द्रियान।
धर्म कामार्थ मोक्षं च रक्षा देहि सुरेश्वर! क्लीं॥१७॥
क्लीं रक्ष मे जगतस्सर्व द्वीपादि-नव-खण्डकम्।
दशदिक्षु च मे रक्षेद् विश्वावसुः जगतः प्रभुः क्लीं॥१८॥
क्लीं सालङ्कारां सुरूपां च कन्यारत्नं च देहि मे।
विवाहं च प्रद शिप्रं भगभाग्यादि सिद्धिदः क्लीं॥१९॥
क्ली रम्भादि कामिनी वारस्त्रियो जाति कुलाङ्गनाः।
वश्यं देहि त्वं मे सिद्धिं गन्धर्वाणां गुरुत्तमः क्लीं॥२०॥
क्लीं भगभाग्यादि सिद्धिं मे देहि सर्वसुखोत्सवः।
धर्मकामार्थ मोक्षं च देहि वि श्वावसु प्रभो ! क्लीं॥२१॥

॥इति श्री विश्वावसु गन्धर्वराज कवच स्तोत्रम्॥

• • •

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कर्म सिंह अमर सिंह पुस्तक विक्रेता

बड़ा बाजार, हरिद्वार फोन: 01334-225619

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh